### पंचम तरगान्तर्गत—आश्विन शुक्ला प्रतिपदा नव रात्रि से कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा तक

### महामहोत्सव, अन्नकूट महायज्ञ

### वेणुनाद सों रासक्रीड़ा पर्यन्त

### [स्वामिनी श्री ललिता-सेवामास-कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष]

# नवरात्रारंभ

**वल्लभ सम्प्रदाय में नवरात्रि की स्वरूप भावना:—**

**आश्विन शुक्ला १**—अंकुरार्पण घट स्थापन आदि नवविलास। प्रथम माटी के दस पात्रन में जुदे-जुदे जब अंकुर बोवने। प्रतिदिन नवीन भाव अंकुरित होय तातें नित्य नूतन वस्त्र नूतन सामग्री प्रभु कों अरीगावनी। सात्विक, राजस, तामसादि नवभेद तथा एक निर्गुण (गुणातीत) या प्रकार दस यवांकुरित करने।

दशधा भक्ति के दस दिन या प्रकार माने हैं:—

**"आदौ श्रद्धा ततः साधु संग भजन क्रिया। ततो अनिष्ट निवृत्ती। ततो निष्ठा। ततो रुचि। ततो शक्ति। ततो भाव प्रेमाभ्युदयं साधकाना प्रेमप्रादुर्भावे एतत् क्रमः।**

सात्विक भाव—माधुर्यभाव—

**स्नेह, मान, प्रेम, प्रणय, राग, अनुराग, शृंगार, उत्साह, निष्ठा।** हरिराय महाप्रभू ने स्वामिनी जी के चरणन में शक्ति चिन्ह हैं ताकी द्वादश सखी (द्वादस शक्ति) मानी है :—

(१) **आच्छाविका**—रसलीला को आच्छादन करें।
(२) **विक्षेपिका**—रहस्य लीला में अन्य को विक्षेप परे ताको निवारण करें।
(३) **योगमाया**—रासादि लीला सामग्री सिद्ध करें।
(४) **कात्यायनी**—भगवत्कृति में क्रीडा रसदान करावें।
(५) **वृन्दा देवी**—वृन्दावन में रितु सामग्री सिद्ध करें।
(६) **चन्द्रावली**—प्रभु सों रमण करावें।
(७) **संकेता देवी**—प्रभु केलि में संकेत स्थल में पधरावें।
(८) **ललिता देवी**—मानादि दोऊन को मनाय के लावें। (मध्यवर्त्ति सेवा)
(९) **विमला देवी**—व्रज भक्तन के शृंगार करवे की सेवा में तत्पर रहें।
(१०) **नौवारी**—नौतन रस वार्त्ता सुनायवे में तत्पर रहें।
(११) **चौबारी**—यूथाधिपान की आग्या सूं सेवा करें।
(१२) **आनन्दी**—सबन के विरह ताप निवारण करें।



## पदन में देवी वरणन

(१) **वृंदा देवी (शृंगार में)—**

नव निकुञ्ज देवी जयराधिके वरदायनी निश्चय वृन्दावन वृन्दवासिनी।
करत लाल आराधन साधन कर मन प्रसन्न नामावलि जयतजयविलासिनी।

(१) प्रेम पुलक गावत तम पावत अति आनन्द भरि नाचत
अति सील देख मन्द हासिनी।
अंगन पट भूषण पहराय आरसी दिखाय तोरत तून लै
बलाय सुख निवासिनी।
रीझ रहे चरन गहे कहत चारु वचनावलि विनती सुन
दास की दुखरासि नासिनी।
प्रतिपालौ मोसो जीव प्रानदान देऊ कहत व्यासदासनी।

(२) **वनदेवी**

पूजन चलो कदम्बवनदेवी।
पुजवत सकल घोष की कामना बलिवन काहू की लेवी।
भाव भक्ति सबहिन की मानत सीतल सुखद सरस सुरसेवी।
गोविन्द प्रभु सों कहत वृषभान नन्दनी सुनाय सुनाय बातें
कछू औरेबी।

(३) **संकेता देवी**

जान्यो जान्यो री सयान प्रानेसुरते कियो मान भयो है विहान।
पिय को तेरो ध्यान मेरी सीख सुन कान्ह जामें बसे प्रान तासों केसो री गुमान।
सुनरी मुरली कान आछी मीठी नीकी तान संकेत स्थल स्थान कुसुमन बितान।
सूरदास प्रभु सुजान सकल गुनन खान मदन मोहन तेरे सुख के निधान।

(४) **कात्यायनी देवी**

करत व्रत नन्दगोप कुमारी।

रितु हिमन्त जानि जिय अपने प्रथम मास सुखकारी।
भोर भये गृह-गृहतें सुन्दरि चली बजावत तारी।
मज्जन करत मन्त्र पढ़ि जल में तट पै बसन उतारी।
कालिन्दी सिकता की कीनी देवीरूप संवारी।
पूजन करत हविस्य भोजन करि विधि सों सब व्रजनारी।
चोबा चन्दन अवीर गुलाल अरु ले नैवेद भरि भरि थारी।
बीरा पुष्प समर्पि धूप करि ले आरती उतारी।
पैठी कण्ठ प्रमान मध्य जल सोरह सिंगार निवारी।

फूले स्याम कमल दल से, देखि भयो सुखभारी ।
कमलनैन कह्यौ तब पावो कर जोरि कहौ मनुहारी ।
बसनन सुनी सलिल तें निकसी कीनो आप जुहारी ।
देख्यौ शुद्ध भाव ब्रजजन को दीने वसन मुरारी ।

**(५) मथुरा देवी**

मथुरा दिन-दिन अधिक बिराजे ।
तेज प्रताप राय के सब कौ तीन लोक पर गाजे ।।

त्रिशूल के छापा की लाल हरे हासिया की पिछवाई खण्ड कुल्हे, लाल छापा की जोड, मोरपक्ष को स्वेत ठाडे वस्त्र चोखटा पुरानो श्रृंगारभारी कुण्डल क्रीट हास हमेल वस्त्र लाल छापा के खुले बन्द के देहली वन्दन माल हाँडी चन्द्रकला की सामग्री सेवा क्रम में श्रीचन्द्रावलीजी को सूथन हरे छाया को भारी वनमाला को सिंगार जड़ाऊ यह पद तो नवविलास के गवें नहीं, पर पद के भाव की सखीन के वर्णन या प्रकार हैं । हरिराय महाप्रभू—प्रथम विलास कियो श्यामाजू कीनो विपिन विहार जू ।

बहु पूजा लै चली वृन्दावन पान फूल पकवाने ।
जाके यूथ मुख्य चन्द्रावलि चन्द्रकला सी बाने ।।

**मंगला में**—जाग्यो जान्योरी सयान प्रानेश्वर तें कियो मान । **अभ्यंग के (छः पद)**—श्रृंगार सन्मुख 'नव निकुन्जदेवी जय०' । **ग्वाल में**—मुरली के नित्य के तथा छाक के । **राजभोग सन्मुख**—बलि बलि आज की बानक लाल । **भोग में**—आज बनेरी लालन गिरधारी । **आरती**—पूजन चलो कदम्ब वन देवी । **शयन**—सोहत कनक कुसुम अति स्रवन । **पोढ़वे में**—राय गिरधरन संग राधिका रानी । **मान में**—इमन, कान्हरा, केदारा विहाग अडाना कोइ भी राग होय । आज से लेकर आश्विन शुक्ला ८ तक गोविन्द स्वामी के नित्य के पदन में टिपारा के सेहरा के मुकुट के पद रास में भोजन में निकुञ्जादि में गवें ।

आज से नव दिन तक ध्रुववारी के नीचे बंगीली में नव विलास की तैयारी होय । तथा रसपूर्ण लीला-भावना होय । आज ठंड पडवे पर मंगला में उपरना धरें । परन्तु कन्दरा पै सेली ओढ़नी दर्शनवत् धरें ।

नवरात्री में वेणुनाद वेणु माहात्म्य के पद होय यामें ५मी से सायं करखा गवें और वेणु रास के प्रारम्भ में वेणु वन्दना होय कात्यायनी व्रत संध्यादेवी साधना वेणु नाद की वन्दना तब रास में रस प्राप्ती ।

**वेणु को भाव स्वरूप महता :—**

सुधामृत स्थिती वेणु में कैसे है । "वश्चन्द्रः ववौ तौ अणू यस्मात् तस्मान्



वेणुः"—मोक्षानन्द कामानन्द-ये दोनों तुच्छ हैं । इन्द्रादि देवता महादेव परमेष्ठी ब्रह्मादि वेणुनाद सों मोहित भये तब जड़ चेतन जीव जल थल की तो कहा गति कही जाय । ये विभोर होंय तो आश्चर्य ही कहा। सुधा स्थानापन्न वेणु । वेणु स्वरूप रस दाता श्री महाप्रभू और विकसित रस करिवें वारे श्री विट्ठलेश और वेणु में जो सात रंध्र है वह सातों गिरधर, गोविन्द, बालकृष्ण, गोकुलनाथ, रघुनाथ, यदुनाथ, घनश्यामादि बालक और वा रस के भोक्ता समस्त पुष्टि मार्गीय वैष्णव जीव ब्रज भक्त जिनमें छिद्र द्वारा सात स्थिति पैदा करें । प्रभु को रसदान में रसानुभव करि भाव विभोर करें । सात रन्ध्रन को भाव एवं प्रभाव या प्रकार है ।

भक्ति, प्रेम, आसक्ति, आवेश, प्रमेय, व्यसन, मूर्छा । ठाकुर जी ने अधरामृत जो अधरन में धर्यो वही अधर स्वरूप श्री स्वामिनी जी को भाव है । हस्त है वह श्री चन्द्रावली जी को स्वरूप है । कण्ठ सों बजावत है, वह कुमारिकान को भाव है । सप्तरन्ध्रन में छः रन्ध्र है वही श्री स्वामिनी जी के भाव सों हैं वे षड़ैश्वर्य दाता हैं । (१) चन्द्रावली जी रसपानार्थ (२) सोलह सहस्र अग्निकुमारिकान के रसपानार्थ (३) गौअन के रसपानार्थ (४) गोवर्धन रसपानार्थ (५) पशुपक्षी रसपानार्थ (६) देवतान के रसपानार्थ या वेणु में जो पोल है वह संसार की लौकिक वासनान को हृदय सों छुड़ाय देवे और भक्ति रस में ओत प्रोत करिके भाव विभोर करिदें । यासों ही प्रभु वेणु कों सदा पास राखें । ठाकुर जी शुद्ध भाव देखि अपने स्वरूपानन्द के भाव सों वाकों अंगीकार करें ।

पद्मनाभदासजी ने भी वर्णन कियो है :—

मधुर ब्रज देश बसि मधुर कीनो ।
मधुर वल्लभ नाम मधुर गोकुल गाम मधुर विट्ठल भजन दान दीनो ।
मधुर गिरधर आदि सप्त तनु वेणुनाद सप्त स्वर रन्ध्रन मधुर रूप लीनो ।
मधुर फल फलित ललित पद्मनाभ प्रभु मधुर अलि गावत सरस रंग भीनो ।

उपरोक्त सात रन्ध्रन की स्थिती पदाधार पै एवं वार्ता से या प्रकार है :—

**भक्ति**—मेरो माई श्याम लग्यौ संग डोलै ।
जित जाऊं तित आडो आवे बिना बुलाये बोलै ।
कहा करूँ इन नयनन लोभी वस कीनै बिन मोलै ।
कुम्भनदास प्रभु गोवर्धन धर हंसि हंसि घूंघट खोलै ।

(वार्ता देखो—११२ वृन्दावनदास छबीलदास आगरा निवासी की) ।

**प्रेम**—गोपी प्रेम की धुजा
जिन गुपाल किये बस अपने उरधर श्याम भुजा । आदि

(वार्ता देखो—सं० १८६ मानकुँवर बाई की)।

आसक्ति—पिय मुख देखत ही पै रहिये।

नैनन को सुख कहत न आवे जा कारन सब ही सहिये।
सुनहु गुपाल लाल पांय लागत हूँ भली पोंच लै बहिये।
हौं आसक्त भई या रूपै बड़े भाग ते पईये।
तुम बहु नायक चतुर सिरोमनि मेरी बाँह द्रिढ़ गहिये।
परमानन्द स्वामी मन मोहन तुमते ही निरबहिये।

[वार्ता—कुम्भनदास जी की]

एक बार विट्ठलनाथ जी इनकी आर्थिक स्थिती देख द्वारका यात्रा में संग लै जायवे की कही। कुंभनदास जी टारते रहे। राजभोग सेवोपरान्त अपसरा कुण्ड पै सायंकाल विश्राम भयो तब वहाँ यह पद गायो—

कहियै कहा कहिवे की होई।
प्राननाथ बिछुरन की वेदन जानत नाहि न कोई।

या पद को गाय गाय बहुत अश्रुधार छोड़न लगे। और एक पद गायो—

किते दिन ह्वैजु गये बिन देखे।
तरुन किसोर रसिक नन्दनन्दन कछुक उठत मुखरेखे।
वह चितवन वह हास मनोहर वह बानक नटवर भेखे॥
बह सौभग वह कान्ति बदन की कोटिक चन्द विसेखे।
स्याम सुन्दर संग मिलि बैठन की आवत जिय अपेखे।
कुंभनदास लाल गिरधर बिन जीवन जनम अलेखे॥

यह पद सुनि गुसाईं जी समझ गये। ये आसक्ति में विरह प्रभावित हैं। तब आग्या किये कुंभन तुमारी यात्रा है गई। और वे न गये।

आवेश—ताते माई भवन छांड़ बन जहियत।

अँखिरस कनरस वतरस सब रस नन्दनन्दन पै पइयत।
कर पल्लव गहि कंध वाहुधर संग मिले जस गइयत।
रास विलास विनोद महा सुख माधव के मन भइयत।
यह सुख सखी कहत नहिं आवे देखत दुख विसरियत।
परमानन्द स्वामी के संगम आनन्द प्रेम बढइयत।

(देखो वार्ता—काशी वारे सेठ पुरुषोत्तमदास जी की)

प्रभु सेवा में शक्ति और आवेश सों ७० वर्ष को हू किशोर है जाय।



प्रमेय—हरि सौं एक रस प्रीति रहीरी।

तन मन प्राण समर्थन कीनो अपने नेम व्रत लै निवहीरी।
.....................................................
परमानन्द दास गोपिन की प्रेम कथा शुक व्यास कहीरी।

या पदाधार पर समस्त वैष्णवन में प्रमेय भावना होय है।

व्यसन—मेरो माई हरि नागर सों नेह।

एक वैर कैसे छूटत है पूरव बढ्यो सनेह।
सरिसा सिन्धु मिली परमानन्द भयो एक सनेह।

(देखो गज्जनधावन वार्ता संख्या १८।) गज्जनधावन वहाँ नवनीत प्रिय राज भोग न अरोगते। आज्ञा किये गज्जन आवेगो तो अरोगूंगो।

मूर्छा—ब्रज की पोर ठाड़ो सांवरो ढिठोना तिन मोहि मोहि लई।

जबते देखे श्यामसुन्दर री चल न सकति आली दीनी काम नृपतई॥

(देखो वार्ता—सं० १३७ द्वारकादास की ये जब जब प्रभु के दर्शन करते मूर्छा खाय जाते भाव में तन्मय होय जाते।

या प्रकार वेणु नाद के स्वरूपन कों भक्त या प्रकार भावना करै तथा मानै है। वही वेणु नाद के पद आज आश्विन शुक्ला सप्तमी तक गवैं। आगे वेणु लीला में बर्णन करेंगे।

आश्विन शुक्ला २—ललिताजी की सेवा काम संकेत सेवा स्थल वस्त्र पीरे छापा के, खुले बन्द के, वागा, धोती, पटका लाल, सेहरा वनमाला को, शृंगार पिछवाई चितराम की, संकेत विवाह स्थल की विवाह निकुञ्ज में होवे की सामग्री बावर, सेहरा आभूषण जड़ाऊ।

द्वितीय विलास कियो श्यामजू खेल समस्या कीनी।
ताकी मुख्य सखी ललिताजू आनन्द महारस भीनी॥

इनकी सेवा में विवाह वर्णन उषा काल को—

"ललिताजू के आज बधायो" या पद में सुन्दर बन्यौ हैं।

आश्विन शुक्ला ३—विशाखा जी की सेवा क्रम—निकुञ्ज स्थल, लीला विहार।

हरे छापा के वस्त्र खुले वन्द के। पाग छज्जेदार। सूथन लाल। नागफणी को कतरा। माणक मोती के आभरण। मध्य को शृंगार। कर्णफूल को गूंझा कूँ करके। पद—

तृतीय विलास कियो श्यामजू परवीन ।
तिनकी मुख्य सखी विशाखाजू एन ।
चली निकुञ्ज महल में कोकिल ज्यों बैन ।।

**आश्विन शुक्ला ४**—चन्द्रभागा जी की सेवा पारसोली लीला। दुहेरा मनोरथ ति० श्री दाऊजी महाराज को उत्सव (मलका चौथ)।

**वस्त्र** केशरी घेरदार। ठाड़े वस्त्र स्वेत। दुहेरा किनारी रुपहरी के वस्त्र। पाग सादा लूम की किलंगी। पन्ना मोती को छोटो श्रृंगार पन्ना को दाऊजी महाराज को। हार बड़े पन्ना को, कण्ठा। पिछवाई चितराम की, दही दूध उछल तो दधिकांदो पलना झुलते। छठी पूजन होती भई दिन भर सादी सेवा दुहेरी, बीडामाला झारी, भोग पाटिया, हेला पड़े सो ग्वाल। समरूप वस्तु दुहेरा दिन भर झांझन की बधाई। दुहेरा माला। नौबत की बधाई बैठे। एक दिन में ही सामग्री दुहेरी जलेबी, मोहनथाल।

उत्सव के दिन दुहेरा कीर्तन क्रम दिन भर झांझ बजें।

**महात्म्य**—प्रात समे उठ करिये श्री लछमन। जय-जय श्रीवल्लभ प्रभु विट्ठलेश साथे। **जगायबे में**—यह भयो पाछलो प्रहर जागो मेरे लाल जगत उजियारे। **कलेवा**—आछो नीको लोनो मुख भोर ही दिखाइये छगन मगन प्यारेलाल कीजिये कलेऊ। **मंगला सन्मुख**—बहुरि कृष्ण गोकुल पुनि प्रकटे श्री विट्ठलनाथ हमारे चहु युग वेद वर्चन प्रतिपार्यों। **श्रृंगार होते में**—राजभोग आते में देव गन्धार पिलावल की विट्ठलनाथ जी की बधाई गवें। **श्रृंगार सन्मुख**—प्रकट भये तैलंग कुलदीप सुखद सरूप श्री विट्ठलेशराय। **राज-सन्मुख**—सदाँ व्रज ही मे करत विहार जयति रुकमणी नाथ पद्मावती। **भोग में**—माता जी लाडोती जूनी। व्रज में श्री विट्ठलेश विराजे। **आरती**—लछमनवर ब्रह्मधाम। गये पाप ताप दूर दरस परस चरण। **शयन**—आज धन भाग हमारे परम कृपाल श्री वल्लभनन्दन करत।

## जीवन परिचय संक्षिप्त—

घस्यारवारे गिरधर जी के सुपुत्र दाऊजी (दामोदरजी जन्म सं० १८५३ आज के दिन) नाथद्वारा में। उपनयन घस्यार में। वि० १८५८। विवाह प्रथम १८६१ में तथा दूसरो विवाह नाथद्वारा में श्री गिरधर जी के लीला प्रवेशबाद १८७५ प्रथम बहूजी के लीला प्रवेशबाद। दूसरे बहूजी के दो बेटी जी एक लालजी गोवर्धनेशजी, दूसरे श्री लालजी, तीसरे गोविन्दजी गोद आये पहले बहू जी के एक लालजी १८७१ में। १८८१ में इन बेटी जी लालजीन के लीला प्रवेशबाद गिरधर जी की अस्वस्थता में पुनः नाथद्वारा पधार के श्रीनाथ जी कों ये दामोदर जी दाऊजी लाये। वि० १८६४ और नाथद्वारा शहर में मजबूती हेतु शहरकोट जरखण्डी बरखण्डी तथा सन्तोषदास जी को कूँवादि बनवाये। ये सन्तोषदास जी गिरिराज की भावना से चतुरानागा की भाँति रहते। दाऊजी के प्रताप सें जल निकस्यो और वो वहाँ ही रह्यो। श्रीजी दर्शन देते। ऐसी लोकोक्ति है। रामभोला जहाँ संध्या करवे जायो करते जैसे विट्ठलनाथ जी गोविन्द कुंड पै पधारते। रामभोला बनवाये। लाल दरवाजा मथुरा दरवाजा पिता द्वारा नीम लगाई भई गिरधर सागर को उद्धार कियो। आपने तिलकायत पदासीन होवे पर अनेक मनोरथ के साथ नगर की विशेष मजबूत स्थिति बनाई। लाल बाग आप ही ने निर्मित कियो १८७२ में। वा समें अधिकारी श्री चत्रभुजदास जी थे भण्डारी मथुरादास जी तथा छोटी पाठशाला प्रद्युम्न जी के अध्यापकत्व में। लालबाग भी भावनापूर्ण रसपूर्ण बनायो। ज्योतिषी गोपीनाथ जी तथा महाराजश्री के मामाजी कृष्णभट्ट जी हुते आपने विक्रमाब्द १८७७ कार्तिक कृष्णा १३ से कार्तिक कृष्णा १३ सं० १८७८ तक श्रीनाथ जी नवनीत प्रिय के दुहेरा मनोरथ नित्योत्सव नैमित्तिकोत्सव महोत्सवादि किये दादीजी पद्मावती जी की आज्ञा लेकर श्रीनाथ जी की प्रेरणा से सात स्वरूप पधरायवे को उपक्रम कियो। प्रथम चार स्वरूप पधराये। बड़े धूमधाम से मनोरथ किये सं० १८७८ जेष्ठ कृष्ण २ को याको विशद वर्णन तथा सात स्वरूपन को विशद वर्णन गन्नू जी द्वारकेशजी गिरिराजजीवारे महाराज ने वार्ता में कियो है। प्रकाशित है। यहाँ संक्षेप वर्णन कियो है। चार स्वरूप कोटा से मथुरेशजी विट्ठलनाथ जी गोकुल से गोकुलनाथ जी श्री नवनीत प्रियजी बिराजे। यह मनोरथ श्री नवनीत प्रियजी के चोतरा पै भयो। आपके उत्सव इन दोनों, चारों एव छः स्वरूपन में अनूठे भाव रसपूर्ण श्रृंगार भयो। पठानी किनारी के पिछोड़ा पटका तथा फेंटा। फेंटा पर कुण्डल मोर चन्द्रिका वामभाग किलंगी यह आज को श्रृंगार मोती हीरों के आभूषण मध्य को श्रृंगार कवि द्वारा वर्णन :—

मध्ये श्रीगिरिधारिणोग्र सरणे हैयंगवीन प्रियो।
वामे श्री मथुराधिपो निज रमा श्री विट्ठलेश प्रभो ।।
सव्ये श्री गोकुलनाथ श्री निज रमा संबेष्टितो यः स्वयम्।
एवं रूपचतुष्टयं त्रिकमलं संराजते संनिधिः ।।१।।

उत्सव महत्ता रसलीला जेष्ठ मास वर्णित है। सं० १८७८ वैशाख बदी १० को नवनीत पधारे वहाँ विविध मनोरथ भये तीनों सरूप गोकुलनाथजी मथुरेशजी विट्ठलेशराय जी कोठारिया होयके पधारे। आप ही ने सर्वप्रथम सम्प्रदाय में षड्रितु मनोरथ प्रारम्भ कियो। भाव भावना आपने ही प्रमाण सहित कीनी

याको उदाहरणार्थ काशी बारे श्यामा बेटी जी के विवाह में मुकुन्दरायजी षड्रितु करवाये। मुकुन्दरायजी की वार्ता प्रकाशित है। श्रावण में वि० १८४८ तीन तिवारी नवनीत प्रिय पधराय के जमनाजी के मनोरथ किये।

सं० १८७८ में छः स्वरूपोत्सव मगसिर वदी ४ को कियो। सब सरूप अन्नकूट में संग विराजे काँकरोली से द्वारकानाथ जी के पधरायवे में बड़े श्रम करनो पड़यो तथा मुकुन्दराय जी को वालकृष्णलाल छटे घर के निधी को मान करी यामें मुकुन्दराव जी छटे स्थान पधराये वेसे ही छः स्वरूपोत्सब कियो गयो मुकुन्दराय जी पधरायवे में तथा मनोरथ में उनके जमाई तथा अमुक घर के बालकन ने दाऊजी के मनोरथन को विगाड़वे में प्रयत्न कियो पर श्री गोनर्धनधरने दाऊजी की कामनापूर्ण कर मनोरथ बड़े उत्साह से कियो। छः स्वरूप मथुरेशजी विट्टलेशराय द्वारकानाथजी गोकुलनाथजी चन्द्रमाजी तथा मदनमोहनजी बालकृष्ण जी के स्थान में मुकुन्दराय जी पधराये तथा छठे घर मानवे के हेतु श्री वनारस वारे गिरधरजी सो दाऊजी महाराज ने गोपाल मन्त्र दीक्षा लीनी गुरु भेट में ये मुकुन्दरायजी पधराय छठो घर मान्यो।

आपने १८८१ में जगदीश यात्रा करी तथा गया पधारे। सं० १८८१ फाल्गुन कृष्ण ३० को आपने लीला प्रवेश कीनो वा समै एक मात्र बहूजी लक्ष्मी बहूजी दूसरे हते आपके लीला प्रवेश वाद दो वर्ष बहूजी ने सारी श्रीनाथ जी की सेवा तिलकायतवत् करी। वाद १८८४ आषाढ़ शुक्ला ६ कसूम्बा छठ को विट्ठलनाथ जी के घर के कृष्णरायजी (गोविन्द जी) को गोद लिये और गादी उत्सव कियो। आपके चरित्र आपके उत्सव में लिखेंगे।

छः स्वरूपोत्सव तथा बारह महीना तक दुहेरा मनोरथ इनके बीच चार सरूपोत्सव तीन तिवारी उत्सव तथा अनेक उत्सव की झड़ीन में अलका बिजली की चमक की भाँति आपने जीवन में थाती जमाई तासों नागरिक भाषा में अलका चौथ कही गई।

आप छः स्वरूपोत्सव सम्पन्न कर जब विदा करवे लगे तब दादी जी श्रीपद्मावतीजी सो आप आज्ञा किये श्रीजी की देहली में दण्डवत करते भये कि दादीजी मोसूं कछु सेवा न बनी अतः मेरो चित्त बहुत दुखी है। दादीजी ने कही वावा आपने बहुत प्रभु के लाड लडाये परन्तु दाऊजी की अश्रुधारा बन्द न भई। प्रभु वियोग एवं सेवा विषयक विचारन सों वाही समय दादीजी पद्मावती जी ने अपने हाथ की चूड़ी तथा अन्य भूषण बाबा की झोली में डारे और वा समै ७७ बालक बहू बेटी वा उत्सव में हुते; सबन नें दाऊजी की झोली में आभूषण डारनो शुरू कियो प्रभु सन्निधी में। घरन सों आये बहू बेटीन के आभूषणन के



भेट रूप सों अन्नकूट में आयवे वारी पिछवाई आचार्य श्री गो० ति० दाऊजी की अमिट सेवा प्रभु अंगीकृत करे हैं। (विशेष दामोदरजी की वार्ता गन्नू जी द्वारकेशजी गिरिराज वारी में प्रकाशित है। सं० १९९५ बसन्त रामजी द्वारा प्रकाशित)।

यह विदित है कि जितने तिलकायत भये उनके पदन में उनके लीला दर्शन प्रभु सन्धि में होय है तथा सेवा सामग्री आदि में मंगला एवं शयन राजभोग के पदन में यह वर्णन मिलै। जैसे आज मंगला में दो पद होंय वे दोनों उनकी कार्य पटुता दिखावें है।

बहुरि कृष्ण गोकुल पुनि प्रकटे श्री विट्ठलनाथ हमारे।
द्वापर बसुधा भार हर्यो हरि कलियुग जीव उद्धारे।
तब वसुदेव गृह प्रकट होय के कंसादिक रिपु मारे।
अब श्री वल्लभ गृह प्रकट होय के मायावाद निवारे।
एसो कवि को है जगमहिया वरणे गुण जु तिहारे।
माणकचन्द प्रभु शिव खोजत गावत वेद पुकारे।

आप को दूसरे भाव को पद या प्रकार है :—

चहुँ युग वेद वचन प्रतिपार्यो।
धर्म ग्लानि भई जब ही जब जब तब तब तुम वपुधार्यो।
सतयुग स्वेत वराह रूप धर हिरण्याक्ष उर फार्यो।
त्रेता राम रूप दशरथ गृह रावण कुल संहार्यो।
द्वापर ब्रज डूबत ते राख्यो सुरपति पावन पार्यो।
कंसादिक दानव सब मारे वसुधा भार उतार्यो।
कलियुग अब श्री वल्लभ गृह प्रकटे मायावाद निवार्यो।
माणकचन्द प्रमु श्री विट्ठल पुरुषोत्तम रूप निहार्यो।

अनेक मनुष्यन को यह कहनो है या पुष्टिमार्ग में वेद की मर्यादा सों प्रभु सेवा नहीं होय। वेद प्रतिपाद्य मार्ग नहीं है तो ये या पद में माणिकचन्द जी कहे हैं कि चारों युग में वेद प्रतिपादित ही पुष्टिमार्ग है। और ये सब लीला तिलकायत दाऊजी दामोदर जी में मिले हैं। सेवा करे है वही भगवद् वाणी वेद हैं। वेद के उद्गम स्थान के तीन में वर्णन मिले हैं। प्रभु के मुख से, ब्रह्मा के मुख से, गरुड़ के पंखन सों। अतः भगवदाज्ञा यहाँ प्रधान मानिके सेवारम्भ करी और चारों युग की लीला एक ही युग में दैवी जीवन को दर्शन कराये। जब-जब धर्म में गलानि (अभाव) भई तब-तब अवतार लियो। सतयुग में स्वेत वाराह रूप धर्यो जब हिराण्याक्ष को उद्धार कीयो। यहाँ धर्म की ग्लानि अनिष्ट अनर्थ भये तब श्री गोवर्धनधरणधीर कों पधराय सेवा क्रम राख्यो। और दश शिर रावण काम क्रोध मदमत्सरता राग

द्वेष ईर्ष्या जो आसुरी जीवन में हती उनको प्रभु सेवा देकर डूबतें ब्रज राख्यो। नाथद्वारा कूं बचायो। ऐसे गिरधरजी एवं दाऊजी को वर्णन माने या पद कूँ प्रातः मंगला में राख्यो। आपने प्रभु सुख सेवा नगर में प्रजा वत्सलता पै विशेष बल दियो। दशावतार में इन्हें नृसिंह स्वरूप माने दुहेरामनोरथ या भाव से किये। गुसाई जी जब छ मास विप्र योगानुभव कर पधारे तब आपने दुहरो मण्डान कियो सम्प्रदाय कल्पद्रुम में वर्णित है—

श्री गोवर्धन धरण के दर्शन विरह विहाय।
किय उत्साह मनोरथ बहु श्री विट्ठल द्विजराय ॥१॥
बहुर जाय गोपालपुर देव दमन मन पाय—
नित्यनेग द्विगुणिताबहु श्री विट्ठल द्विजराय ॥२॥

श्री नाथजी घस्यार पधारे। श्रम भयोनाथनगर निवासीन कूँ विरह बढ्यो यासों द्विगुण मनोरथ किये दुहेरा मनोरथ या भाव सों आपने कई मनोरथ पूर्ण किये।

---

**श्री गोस्वामि तिलक श्री दाऊजी महाराज दुहरे मनोरथ कर्त्ता के चमत्कार गोस्वामि गिरधरलाल जी महाराज कांकरोली द्वारेन को बारहवों वचनामृत—**

बड़ेन सों कछू मांगनो नहीं जो प्रभु तो अन्तर्यामी हैं। घर घर की जानत है उनसों कछू छिप्यौ नहीं।

एक समय दाऊ जी महाराज बड़ौदा परदेश पधारे। आप बैठक में बिराजे हुते। सन्ध्या बन्दन करते हते ता समें लल्लू मंगल जी को छोरा बापू भाई आपसों प्रश्न कियौ जो मेरे सन्तति नहीं सो आप कृपा करके दीजिये। तब तो आप हंसिके आज्ञा किये—सारे में अपने बेटा न कर सवगौ तो तोकूँ कहाँति देऊँगो। ऐसे कहि चुप है गये। कछु बोले नहीं। सोहरि भक्तिवारे सेठ बेचर भाई ने अपने घर पधराय मनोरथ किये। तब पन्द्रह दिन ताई बिराजे। सो एक दिन आप शैया पे पौढे हुते और दामोदर दास खम्भात वारे खवास मुवकी दे रहे हते। और कहानी कहत हते। ये कहानी बहुत चतुराई ते कहते सो वा विरियाँ वासों आज्ञा किए जाओ वा सेठ कों बुलाय लाऊ सो बा विरियाँ सेठ अपने घर में प्रसादमहाप्रसाद ले रयो हतो। तब वाने हेला पाडचो जो सेठ जी कहां हो। तब सेठ बोल्यो जूठन प्रसाद ले रयो हूँ जब प्रसाद ले चुक्यो हाथ धोय बीडा लेय तुरंत हैलावारे के संग पहुँच्यो तब वा खवासने वीनती करी सेठ हाजिर हैं। तब तो आप आज्ञा करे सेठ को पास बुलाय केकही जो तेरे बेटा होयगो और बड़ी सेठानी महालक्ष्मी के होयगो फेर आपने आज्ञा करी अन्याश्रय मति करियो। जो अन्याश्रय करेगो तो जातो रहेगो तब सेठने दंडवत कर वीनती करी जो आज्ञा महाराज। सो बडेन कों कृपा करत वार नहीं लगे। मनवांछित फल दान करें। सेठ के बालक भयौ परमभगवदीय भयौ।



**आश्विन शुक्ला ५**—संजावली जी की सेवा। कदली वन निहित कुञ्ज दूधपूवा सामग्री। पाँचवों विलास। वस्त्र श्याम छापा के। चाकदार बागा खुलेबन्द को। सोना के आभरण मोर शिखा। पाग सादा।

**आश्विन शुक्ला ६**—मुखराई जी की सेवा गोवर्धन वन। कुंज सामग्री सकोरी वस्त्र गुलाबी छापा के बागा। चाकदार खुले बन्द को बागा। चढ़ी वाहें वीर रस द्योतक मल्लकाछ टिपारा राम चरित की पिछवाई जामें जन्म ते रावण वध तक की लीला राज्याभिषेकादि। राणी वहूजी गोवर्धन लीला के वहूजी को जन्मदिन वस्त्रादि नूतन सामग्री। हनुमत गुणगान। राम भक्तन की जानकी ढूंढन की लीला सायंकाल में ही मारूराग में गवे।

**आश्विन शुक्ला ७**—कृष्णावतीजी की सेवा क्रम। गहवरवन लीला धांस की। बूँदी की सामग्री। पिरोजी छापा के बागा चाकदार खुले बन्द को। केसरी धोती उपरना। मध्य को शृंगार फेंटा। श्रीमस्तक पर वाम भाग को कतरा। मोरशिखा मोरचन्द्र की। माणक मोती के आभरण। कर्णफूल को शृंगार।

**आश्विन शुक्ला ८**—भावनीजी की सेवा क्रम। डेढ बड़ी सामग्री। भद्र वन की लीला। रासारम्भ की पिछवाई चित राम की। मुकुट काछनी। मुकुट ढाक को काछनी दूधिया छापा की। पटका, वनमाला को शृंगार। कुण्डल हास त्रवल आदि। पिछवाई में वेणुनाद सुनिकै गोपी पधारीं। दोनों आड़ी गोपीन के यूथ। शरद रात्रि आज प्रभु गोवर्धन धर बीच में। वेणुनाद के भाव सों तथा दुर्गाष्टमी होय वेसे ये शृंगार होय।

**आश्विन शुक्ला ९**—सेवा श्री लाडलीजी की बंसीवट विलास। सामग्री मोहनथाल। वस्त्रबागा चाकदार। खुले बन्द को। लाल ठाडे वस्त्र पीरे मोर चन्द्रिका सादा। पाग सादा। ठाड़े पट पीरे। पन्ना मोती के आभूषण। या प्रकार नव विलास नवधा भक्ति नव सात्विक भावना के साथ—नवरात्री समाप्त।

हरिराय महाप्रभू ने नवरात्री में नवविलास वर्णन किये। और एक से एक विलास की अधिकता बतावते भये पूर्ण समाप्ती में श्री लाडली जी की सेवा बंशीवट विहार और प्रियाप्रीतम की रसलीला वर्णन ही नवविलास कहे गये। बीच में पदगान में वेणुनाद एवं कड़खा वर्णन गुणगान भी होंय। विजया दशमी पै अन्य पुराणन के आधार से राम की लंका पर चढ़ाई तथा रामराज्याभिषेक विजय करि के पुनः अयोध्या लौटनो तथा रावण वध दशहरा में मिले है यासों ही दशहरा को अंकुरार्पण करें। अश्वपूजा शमीपूजादि आचार्य लोग करें हैं। तथा प्रभु कों कटार धरावें, ढाल समीप धरें आदि। रसलीला के दूसरे गुप्त भाव हू हैं—

आज अंजन दियो राधिका नैन कों। (राग केदार)
मीन मृग हीन गुन सरस खञ्जन लजत अधिक चंचल भये श्याम सुखदेन कों।
दशन डार्यो उदधि मन्मथ सफल लटकत अलि रहत नहीं चैन कों।
कसव कंचुकि बन्द हार ग्रीवा सरत निरख आनन गह्यो उडुपति सुगैन कों।
चरन नूपुर रुनत छुद्र घंटिका कनक सम गौर तन लली उपरैन कों।
सूर सुन्दर नवल रसिक गिरधर देख चली गजगति मदनगढ़ लैन कों।

**पौढवे में—**

केली करें प्यारी पिय पौढ लख चांदनी में नेह सो लगाये नेन जोवन के जोस में।
अंगिया दरक गई मानो प्रात देखवेकों चोंच काढ चक्रवाक कामतर रोस में॥
आलस सों मोरी बाँह दोऊ कुच गहे पिय रति के खिलौना मानो ढाँप दिये ओस में।
रूप के सरोवर के नन्ददास देख आली चकइ के छौना बैठे कंचन के कोख में॥

**अन्नकूटमहायज्ञ—**

सौ सोम यज्ञ के बाद श्रीमद्वल्लभ महाप्रभु प्रकटे और महाप्रभू ने हू सोम यज्ञ किये। श्री ज्येष्ठ पुत्र गोपीनाथ जी ने हू किये। श्रीमद्विट्ठलवर गुसाईं जी ने सोम यज्ञ को रूप अन्नकूट में परिणत कर प्रभु गोर्धनोद्धरणधीर श्रीनाथ जी में महायज्ञ रूप महोत्सव कियो।

यज्ञ में प्रथम स्थान निरीक्षण; वाकी शुद्धि तथा सामग्री संचय, बन्धान व्यवस्थादि पर विचार। फेर पंडितनसों मुहूर्त निकरवाय धान्यादि वस्तु संग्रह के वाद महूर्तनसों पण्डित विद्वान वेद मंत्रज्ञन कूं निमंत्रित करि तत् तत् पदासीन करके यज्ञ को भार सोंपनो।

फेर उनके लिये सुविधा देनी। यज्ञ के प्रधान देवता को भोग सामग्री शृंगार सें सुसज्जित करनो। गीतवाद्य मंगलाभिमुखीन कों निमंत्रण तथा बधाई करनी। यज्ञ की सभी वस्तून कों मुहूर्त सें स्थान पर पधरानो। जब यज्ञ आरम्भ होय तब से अन्नदान करे। कोई यज्ञ से विमुख न जाय। प्रधान यज्ञ के आरम्भ दिन सें ग्रह पूजा वेदी स्थापन एवं अग्नि प्रतिष्ठा होय। नव ग्रह द्वादश राशिन को आवाहन स्थापन तथा प्रधान देव की प्रतिष्ठा होय। हवन यज्ञ कुण्ड में से प्रभु प्रादुर्भूत होय फलदान दें हैं। पुरोडास सब भक्षण करें। कामना पूर्ति होय यज्ञ के बाद तर्पण मार्जन ब्राह्मण भोजन होय। यज्ञ में साकल्य, पायस, आज्य ये प्रधान होंय है। इनसे यज्ञ परिपूर्णता में फल सिद्धी होय है। अश्वमेध वाजमेधादि तो राज्य प्राप्ति के लिये तामस राजस यज्ञ है। यह सात्विक यज्ञ है। सो अन्नकूट सात्विक यज्ञ रूप है। यज्ञ में रित्विज यजमान, यजमान पत्नी आचार्य, ब्रह्मा, अध्वर्यु होता उद्गाता सामवेद गाता आदि होंय हैं।



प्रत्येक द्विज दर्श पूर्णमास चातुर्मास्य पशू सोमादि करें हैं। अतः आचार्य ने चातुर्मास्य के परिसमाप्ति में तथा अनेक पुराण भागवतादि के आधार पै अन्नकूट को यज्ञ रूप दियो। ये महायज्ञ पुष्टि पुरुषोत्तम के प्रसन्नार्थ वर्ष भर के दोष निवारणार्थ प्रति वर्ष कियो जाय है। वाद में समस्त वैष्णव सृष्टी अपने घरन में यज्ञ रूप अन्नकूट करवे लगे। गोप लोग भी पहले इन्द्रयाग कियो करते भागवत में आयो है। "अपश्यन्निवसनगोपान् इन्द्रयाग कृतोद्यमान्" (१०२४-१)

नन्दराज कुमार ने अपने समक्ष इन्द्र-पूजा करानो उचित न समझ गोवर्धन पूजन को महायज्ञ करवायो। बाबा नन्दजी सों पूछी या यज्ञ को कहा फल है।

कथ्यतां मे पितः कोऽयं संभ्रमो व उपागतः।

किफलं कस्यचोद्देशं केन वा साध्यते मखः।१०।२४।३-७

फिर श्लोक ८ से ११ तक नंद को उत्तर। फिर भगवान् को समझानो बाद में फैसला रूप भगवदाज्ञा :—

"पिताजी न तो हमारे पास काऊ देस को राज्य है। न बड़े-बड़े नगर हमारे आधीन हैं। देश अथवा नगर की बात छोड़ो हमारे पास गाँव अथवा घर भी नहीं है हम तो सदाँ वनवासी हैं। वन पहाड़ ही हमारे घर हैं या कारण पिताजी गौ ब्राह्मण और गिरिराज को यज्ञ करें। इन्द्रयज्ञ के अनुष्ठान की जो तैयारी कीनी है वो गिरिराज में लगाय कैं गोवर्धन पर्वतकों बलि दें। अनेक प्रकार की सामग्री खीर, सीरा, पुवा पुरी मूंग भात आदि बनायके सारे ब्रज को दूध इकट्ठो करो। ब्राह्मण वेदज्ञन सो हवन कराय उनको गौ, अन्न आदि विविध वस्तु दान करो। चाण्डाल पतितन कों यथा योग्य वस्तु देकर गिरिराज कों भोग लगाओ। सुन्दर वस्त्र पहिरकें शृंगार कर ब्राह्मण अग्नि गिरिराज गोवर्धन की परिकम्मा देऊ। यह यज्ञ गौ ब्राह्मण गिरिराज कों प्रिय होयगो। तथा मोकूं भी यह यज्ञ प्रिय है। भगवान् कृष्ण की या आग्या के आधार पर जगद्गुरू श्री विट्ठलनाथ जी ने अपने परिवार कूं बुलाय के यह महायज्ञ कियो। गौ पूजा प्रधान राखी। ब्राह्मण पूजा अग्निस्वरूप प्रभू की प्रधान पूजन करके महायज्ञ कियो और चाण्डालादिन को अन्न वितरण करवायो। षड्धर्म एवं धर्मीनकों एकत्र करिके प्रभुस्वरूप छः विग्रह पधराय महायज्ञ कियो। सात निधीयन कूं भी पधराई। यासे ही श्रीनाथजी में अन्नकूटोत्सव यज्ञरूप सों होय है। यज्ञ स्थल शुद्धी के लिये खासाभण्डार की पुताई, नन्दमहोत्सव (भा० कृ० ६) सें आरम्भ होय के वस्तु संग्रह होय बाद में सारे यज्ञ स्थल रूप जो मंदिर है वो पुते। आश्विन में चित्रित होय। पुताई तब से ही आरम्भ होय। महूर्तनसों काष्ठ संग्रह (ईंधन आदि) मुहूर्त से ही उठे सर्व प्रथम अधिकारी उठावे। कारण यज्ञभार अमात्य यजमान के अन्तरंग होवेसों मुहूर्त से ही प्रजापति

(कुम्हारवाड़ा) गजाई वाड़ा (साँची) झाल टोकरादि महूर्त्त से ही आवें। धान की सेवा होय। सखड़ी की महीपूजा बड़ी सेवादि महूर्त से अच्छे चौघड़ियाँसों होय। यज्ञ बलि धान कूं मान्यो है। ताकी कुटाई करे। यज्ञ भाग धरे। यज्ञ पशुवत् वाय चित्रित करें। वहीं बड़ी सेवा करें तथा यज्ञ स्थल में आहूती के प्रारम्भ में यज्ञ कुंड में दस्तूर महूर्त सें यजमान करें यजमान पत्नी गठजोड़ा से करें वही राजभोग वाद सखड़ी के मूढा को आरम्भ करें। और आगे अन्नकूट में आवे।

### आश्विन शुक्ला १० विजयादशमी दशहरा

देहली वन्दनमाल अभ्यंग श्रृंगार भारी कर्णफूल पे वस्त्र घेरदार बागा चीरा सफेद जरीको चन्द्रिका सादा सूथन लाल जरी को ठाडे वस्त्र हरे पिछवाई चोप की जडाऊ सिलमा सितार के काम की कर्णफूल चार लूम आदि मध्य के आगे को श्रृंगार। पूवा गोपी वल्लभ में। जवारा धरें भोग के समय में। कटार धरें आज गिरधरजी के ज्येष्ठ पुत्र मुरलीधरजी को उत्सव। आज से आकाश दिया। आज से कमल चोक में मानसी गङ्गा। आज से बाल भोग की मही पूजा। आज से एक मास कार्तिक शुक्ला १० तक सवा लक्ष तुलसीदल मंगला के बाद स्नान के पूर्व चढ़े। आज से सन्मुख काष्ठ की गौएँ पधारें खिड़क रूप सों। आज दशहरा मांड के दशपूआ गोग्रास के वापे धरें और सिन्दूर की टिपकीदें वस्त्र उठावें जवारे धरें। ये सब नवनीत प्रिय में होय। श्रीनाथजी में ये नहीं धरें। ताको कारण ये लीला-नन्दालय की है। श्रीनाथ जी गोलोक नायक हैं।

### माटवन की लीला के दशमाट अरोगें सन्ध्यार्ति में

आज ही अन्नकूट महायज्ञ की झांझन की बधाई बैठे तथा सखड़ी रसोई के मुखियाजी कूँ बीडा झिलायो जाय।

अन्नकूट महायज्ञ के प्रधान यजमान सपत्नीक तिलकायत है। वे ही आचार्य कूँ दीक्षित करें। वेही आचार्य सखडी रसोई के मुखिया एवं बालभोगिया तथा इनके सहायक आचार्य हैं। अतः आज यजमान यज्ञानुष्ठानी ब्राह्मण वेदज्ञन को निमन्त्रित करावें। यासों बीडा झिलावे। भट्टी पूजा करें। यज्ञ के २० दिन पूर्व गायन वादन गन्धर्वादिकन की बधाई के रूप झांझन की वधाई बैठे। यज्ञस्वरूप यज्ञपति को नूतन वस्त्रादि आभूषणादी से नित्य अलंकृत करें। रित्विज भट्ट मेवाडा सांचोरादि ब्रह्मा की सन्निधी में वीडा झिलायो जाय। ब्रह्मा स्वरूप श्रीजी के बड़े मुखिया है। अध्ययु सखडी रसोई को परचारग नियुक्त होय है।



उद्गाता—(सामवेद गान करिवे वारो) सेवक वर्ग होय हैं। ये होता भट्ट २००, मेवाड़ा औदिच्य ६०; स्थानीय—६०; नागर १० या प्रकार यज्ञ के ऋत्विज होंय।

### आकाशदीप को भाव

तिलायास्तिल तैलेन सायंकाले समागते।
आकाशदीपं यो दद्यात् मासमेकं हरिं प्रति।
महतीश्रि यमवाप्नोति रूप सौभाग्य सम्पदा।

तिल्ली को तेल सो सायंकाल में आकाश दीपक धरें। तो अतुल सम्पती सौभाग्य प्राप्त होय यासों चक्रराज में दीप धरें। नवनीत प्रियजी में भी आकाश दिया आवे।

हारीत संहिता में वर्णन है—यम की डाढ़ें पैंतीस दिन के लिये खुलें। ताके हेतु दीपदान करें। आकाश दिया धरवें सों बालकन की अनिष्ट निवृत्ति होय। यासों आकाश दिया धरें।

कमल चौक में मानसी गंगा तेल के दियान को झाड "प्रदक्षिणं च कुरुते गोविप्रानल पर्वतान्।" या कथन के आधार पै दीपक रूप से अग्नि परिक्रमा करे हैं। ये मानसी गङ्गा क्यों कही गई? व्रज भक्तन ने श्यामसुन्दर सों कही प्यारे आपने अनेक दैत्य मारे हैं याको पाप लग्यो है तो काहू तीर्थ में जायके स्नान करो तब हम आपको रसपान करें। प्रभु ने वाही समय वेणु सों मन की गंगा खोदिके वामें स्नान कियो। समस्त व्रजभक्त चकित होय गये। वही मानसी गंगा गोवर्धन में बिराजें। वे गोल हैं तासों यहाँ भी गोलाकार राखी है। अग्नि परिक्रमा देनो शास्त्रन में वर्णित है। कुम्भनदास जीहू ने गायो है।

देखो इन दीपन की सुन्दरताई। आदि। (कुम्भनदास)

तासों यह अगनित बातीन सों अद्भुत युक्ती सों दीपवृक्ष बनायो यहीं मानसी गंगा ३५ दिन आकाश दीया की भाँति आवे है।

### सवा लक्ष तुलसी दल :—

आषाढ़ शुक्ला ११–देव शयनी एकादशी सों तुलसी के बिरवा बोवे। फेर उनकी अभिवृद्धि रक्षा करे। कन्यावत् पालन कर कार्तिक शुक्ला ११ को विवाह प्रभु के साथ करें। कई पुराणन में कार्तिक मास में तुलसी सेवन, तुलसी पूजन, तुलसी परिक्रमा की महत्ता बताई है। अतः यहां एक मास आचार्य अपने द्वारा समस्त पुष्टि सृष्टि के भक्तन सों सवा लक्ष दल प्रत्येक जीव कों कृतार्थ करवे वाकी आड़ी सों श्रीजी में अर्पित करें और वे समस्त वैष्णवनको अंगीकृत करवे हेतु

अक्षय नौमी में वक्षस्थल में वे सवा लक्ष गोवर्धन माला धराय अंगीकार भये पै सूचित करें। ये कार्तिक में ही काम करे। ताके लिये ही कार्तिक मास—माहात्म्य में तुलसी की बड़ी महत्ता बताई। ये प्रसंग देवठान की एकादशी में देखें।

## गिरधरजी के प्रथम पुत्र

आज श्री गुसाईं जी के ज्येष्ठ लाल जी गिरधरजी के प्रथम पुत्रश्रीमुरलीधर जी को उत्सव भी है।ये उत्सव एक मात्र श्रीनाथजी में ही मानें। कड़खा के पदन में लंका पै चढ़ाई भई या भाव सों भी जवारा कटार ढाल धरे। परन्तु राजभोग के पद के आधार सों मुरलीधरजी की लीला वर्णन या पद में मिले है जितने तिलकायत भये उनके उत्सव के पद, श्रृंगार भोग में, उनके वर्णन दर्शन एवं सेवा, से होय है। ये मुरलीधर जी श्री बड़े लालजी गिरधर जी के ज्येष्ठ पुत्र हते। जन्म स० १६३० में। आज के दिन गोकुल में प्रकटे तथा गिरधर जी के दूसरे लालजी १६३२ में श्रावण शुक्ला १५ को, तीसरे लाल जी वि० १६३४ में, प्रकटे। तीन लाल जी मुरलीधरजी दामोदरजी दीक्षित गोपीनाथजी। ये मुरलीधर जी उपनयन बाद बादसाह को कृतार्थ करवे पधारें और श्रृंगार वेषभूषा भाषा तथा सारी लीला आपकी बादसाहवत् भई। एक समै बादसाह शिकार करवे गयो पीछे श्री मुरलीधरजीहू हते। गरमी के दिन हते प्यास से पातसाह चक्कर खायके बेहोस होवे लग्यो। वाके समीप कोई हतो नहीं। श्री मुरलीधर जी ने अपने संग बादला तुंग में से जल प्यायो तथा श्रीजी को प्रसाद दियो तब वाकूं चेत भयो। और बोल्यो मार्फते खुदा में तेरे ऊपर फिदा हूँ जो मांगेगा दूंगा। आचार्य वल्लभ वंश वारे कभी अपने हित नहीं चाहे वे तो प्रभु सुख तथा प्रभु के लिए ही सब लौकिक लीला करे अतः आपने तीन चीजें मांगी। 'जनता में जो गाना बजाना बन्द कराया है वह चालू हो' सो भगवमंदिरादि में सर्वत्र संगीत गायवे बजायवे की आज्ञा भई।

२—दूसरी वस्तु खिचमा छत्त के पंखा की आज्ञा भई। तथा तीसरी शरद की सजावट चाँदनी में ये तीनों वस्तु पातसाह सौं लई। और पुनः अपने निवास में आये। हुकम जारी भयो। आप राजाज्ञा लेकर श्रीगोकुल पधारे और फरमान विट्ठलनाथ जी गुसाईं जी तथा पिताजी गिरधर जी को दिये। वे इनकी यावनी वेषभूषा देख प्रभु लीला मान क्षोभ कियो। वहाँ ही तत्क्षण लीला प्रवेश होय गये उनके श्रृंगार छज्जेदार पाग घेरदार बागा कटार तलवार बँधी सूथन आदि श्रृंगार में आये। लीला प्रवेश के बाद पातसाह की सेना आई। प्रभु लीला मान सन्तोष

"वल्लभ बंश परिचय गुजराती संस्करण उमरेठ से प्रकाशित"



कियो। और द्वितीय पुत्र दामोदर जी प्रथम पुत्रवत् प्रतिष्ठापित भये। तासो ही आज श्री गोवर्धन धर श्री नाथजी घेरदार वागा पाग तथा सूथन के श्रृंगार कटार राजभोग में धरें। ये पद गो० मुरलीधर के भाव सों होय:—

**सारंग**

तुमारी खिरक बतैयो हो व्रषभान हमारी गैया।
चक्रत नयन बहुधाँ चितवत संकर्षण को भैया।
संध्या समे बागते बिछुरी अर्धरात सुध पैया।
वा विन मोपै रह्यो न परत है यों कहे कुंवर कन्हैया।
सुन प्रिय वचन किशोरी अटा चढ़ि जालरंध्र ह्वै झाँकी।
परमानन्द प्रभु कर्ष लियो चित चन्द्र बदन भ्रू बाँकी।

उन मुरलीधर जी को दर्शन दे मन खेंच लियो। श्रीनाथजी ने लीला में लिये या भाव के आधार पै ये पद गवें।

मंगला में—गोकुल को कुल देवता प्यारो गिरधर लाल।

गोकुल गोस्वामिकुल को कुल देवता गिरधर मुरलीधरलाल।

कमलनेन घन सों वरो वहु बाहु विशाल वेग करो मेरे कहे पकवान रसाल।

दशहरा में मंगला से शयन पर्यन्त पद या प्रकार होय है।

मंगला—गोकुल को कुल देवता प्यारो, अभ्यंग के ६ तथा ओरभी बिलावल राग में गवें। श्रृंगार सन्मुख—सातव रस को साँवरो बोलत। राजभोग में—

१—अन्नकूट कोटिक भाँतन सो। २—देखोरी हरि भोजन खात। माला बोले पै—१—हमारो काना कहे सोड कीजे। २—आन और आन कहत। राजभोग सन्मुख—तुमारी खिरक बतैयो हो। भोगदर्शन खुलते ही—जब कूचो हनुमान जानकी। जवाराधरें तब—आज दशहरा शुभ दिन। आरती भोग—पायन पूज चले रघुनाथ। अरोगत में—आज पयान कोदिन नीको। आज रघुपति चढ़े लंकगढ़ लेन कों। आरती सन्मुख—चढ़े हरि कनक पुरी पर आज। शयन भोग आये पै तथा सन्मुख—अरे वालि नन्दन विकट वनचर। अनवसर में—बिजया दशमी विजया हरत। पोढेवे पै–देखो बरत झरोखन दीपक।

आज राजभोग वाद ताम झाम डोल तिवारी में उत्थापन तक आवे। आरती को खण्ड चढ़े शयन के दर्शन बाहर होंय। भोग में तिलक होय। जवारेनधरें माटभोग आवे। शयन तक जवारा धरे रहे। जवाराधरें तब कटार धरें। छाल निज मन्दिर की कोट पै पड़गीपै आवे। आज से शीतरितु को आरम्भ है। ठंड पड़े

तो मंगला वत् धरें। शयन के जोड। बन्दसाज छेल्ली। गुलबाँस की माल शयन में धरें। आज की सारी सेवा श्री स्वामिनीजी की है। स्वामिनीजी की सेवा क्रम में श्रावण भाद्रपद अश्विन है सो शरद् पूनमतक आपकी सेवा है। आज श्री श्याम-सुन्दर श्रीनाथजी वरसाने गये और जैसे राधिकाजी को ले नन्दालय पधारवे पर श्याम सगाई भई। एसे ही श्यामसुन्दर को टीका कियो। ये वर्णन "विजयादशमी शुभदिन पिय प्यारी पै आज" या पद के साथ शयन में मान के पद में स्वामिनीजी श्याम सुन्दर को रति वर्णन है।

अश्विन शुक्ला में दिन वृद्धी होय तो ये शृंगार दशहरावत् दूसरे दिन भी होय और या पद के भावसो जवारा सुन्दर काच के तथा रेसम के और सब श्रृंगार पूर्ववत् कछू छोटे हेर फेर सो पिछवाई वगेरे दूसरी वैसी की वैसी।

**पद**—(धोंधी को है भाव अनूठो है)

चोवा में चहल रहो हो लालन कहो कहा गये दशहरा मनभावन।
एक से एक सुधर घोषनारी तुम तो छेला गिरधारी सब हिनके मनभावन।
कर मांझ कर लीनो हस इक बीरा दीनो ले ले नाम लागे मोही पेगिनावन।
धोंधी के प्रभु सुभट नेह अति जनायो बातन वतरावत जात सखी आई समुझावन।

## शरदोत्सव

मधुर उपासना के अधिकारी सब नहीं होय हैं। यह साधन साध्य नहीं कृपा साध्य है। हरिराय महाप्रभू ने रस के कई अधिकारिन की गणना बताई है। भगवत रसिक में सात बातें होंय तो मधुर रस को अधिकारी होय सके।

## छप्पय

प्रथम सुने भागोत भक्त-मुख भगवत् बानी।
द्वितीय अराधे भक्ति व्यास नवभाँत वखानी।
तृतिय करें गुरु समुझि दक्ष सर्वज्ञ रसीलो।
चौथे होय विरक्त बसे वन राजत सीलो।
पाँचे भूले देह निज, छठे भावना रास की।
सातें पावे रीति रस स्वामी श्री हरिदास की॥

रस लीला को मुख्य उद्देश्य वैष्णवाचार्यन एवं भक्तन ने संतन ने मार्ग चतुष्टय मानो है। (१) ज्ञान मार्ग (२) योग मार्ग (३) कर्म मार्ग (४) भक्ति मार्ग। याही सों आचार्य महाप्रभू वल्लभ ने रास पञ्चाध्याई में सुवोधिनी के प्रारम्भ में कारिका में आज्ञा किये।



"ब्रह्मानन्दात् समुधृत्य भजनानन्द योजने।
लीला या युज्यते सम्यक् सा तुर्येव निरूप्यते"॥

भगवान ने लीला या लिये करी है मुक्त जीवन कों ब्रह्मानन्द से उद्धार कर भजनानन्द में नियोजित कर रासलीला को प्रत्यक्ष अनुभव करायो।

गोलोक स्थित निज धाम वृन्दावन में भगवान श्रीकृष्ण नित्य अपने आनन्द विग्रह सों अपनी आदन्ददावी शक्तिन के साथ रास में मगन रहिकै आनन्द विभोर होय है। उनकी लीला क्रीड़ा अनादि और अनन्त है यासों वेही रस रूप सदा एक रस होंय—वही रास है।

## ज्ञानमार्ग

ब्रह्म विद्या पायवे वारे ज्ञान मार्गी रासलीला कों "तत्वमसि" को ही विधान माने हैं उनकी दृष्टी में तत् पदार्थ श्रीकृष्ण तथा त्वं पदार्थ व्रज ललना गोपाङ्गनाएँ है। इनको परस्पर मेल (एक्य) ही रास है अथवा यों माने जीव और ब्रह्म दोनो को योग ही रास है।

## योग मार्ग

अनाहत भगवान की बंसी ध्वनि ही नाद है। वही (नाद ब्रह्म) है और अनेक नारि गोपीगण है। कुण्डलनी शक्ति श्री राधा हैं। मस्तिष्क सहस्र कमल चक्र वृन्दावन है। वामें आत्माराम परमात्मा सुखमय स्थित सुरम्यरास है।

## कर्म मार्ग

आध्यात्मिक अर्थ मानवे वारे विद्वान् श्रीकष्ण गोप गोपी वंसी इन सब को सात्विक अर्थ या प्रकार लगावें। गौ को अर्थ इन्द्रियाँ गोप गोपी। इन्द्रिन की रक्षा करि वारे श्रीकृष्ण कन्हैया आत्मा के प्रतीक बंसी ध्वनी संगीत स्वरन को समुदाय ही गोपी अनेक प्रकार से अपने मन प्राण इन्द्रियन की वृत्तीन में अन्तरात्मा में मगन होय नृत्य करें वही रास है।

## भक्ति मार्ग

भगवान् अपनी लीलान में अपने ही साथ आप लीला करें है। जैसे भागवत में रास पञ्चाध्यायी में कही है "यथार्भकः स्वप्रतिबिम्ब विभ्रमः" जैसे बालक अपने प्रतिबिम्ब दर्पण में देख के क्रीड़ा करे है वैसे ही अपनी क्रीड़ा स्थली वृन्दावनादि में आप ही रमापति हास्य आलिङ्गन क्रीड़ादि भाव प्रदर्शित करे हैं। यासों ही वल्लभ सम्प्रदाय में रासोत्सव महान् गोपनीय रसमय रसरूप रसिक शिरोमणी की रसलीला को महोत्सव माने है। यह उत्सव सर्वत्र उल्लास उमंग सों प्रभू को साज सज्जा सजाय विविध शृंगार सामग्रीन सो प्रभु सम्मुख निहित

करै। श्री गोकुलनाथजी विट्ठलवर के चतुर्थ कुमार ने ब्रज के रास स्थल वर्णित किये है।

**वेणुनाद**—रीठोरा ग्राम यहाँ वेणुनाद कर उपदेश दियो। सबन को मोहित कियो तासे आपको नाम मोहन भयो यही चन्द्रावलीजी को प्राकटय स्थल है। पुष्टिमार्गी आचार्य श्री वल्लभ के द्वितीय कुमार चन्द्रावली स्वरूप है। अतः रास-रूप सेवा प्रणाली विकसित करी वही वेणुनाद स्थल है।

**चन्द्रसरोवर**—सारस्वत कल्प को वृन्दावन यहाँ लघुरास भयो। ६ महीना की रात्री भई। यासों ही विट्ठलनाथजी ने ६ मास विरह लीला में जो विज्ञप्ति बनाय भेजी सो यहां ही बिराजे।

**गोवर्धन**—यहाँ अन्तर्धान होय प्रेमवृद्धि कर गोपिन के मान मर्दन किये। यासों ही गोपीजन बिलखती वन लता वल्लरीन सों पूछती फिरी ता भाव सो ही जान अजान के वृक्ष यहाँ हैं।

**कुनवारो**—(सुनहरा की कदम्ब खण्डी) यहां श्री स्वामिनीजी (एक गोपी) लेकर पधारे शृंगार विहार कियो।

**सारसवन**—यहाँ प्रियाजी की बेणीगूंथी अपने श्रीहस्त सों समस्त वैष्णव भावुक यहाँ ही विवाह लीलारम्भ माने हैं।

जमुनावतो से लेकर स्वेत वाराह के वृन्दावन तक ब्रजललना ढूंढती फिरी फेर बृन्दावन में गोपीगीत कहि प्राकटय प्रश्नोत्तर तथा आस्तरण पर बिराजनो और महारास।

व्रज में रास चबूतरा अद्यावधि द्वादश है वहीद्वादश मास द्वादश अंगभूत रासलीला है। बरसानो, ऊचोगाँव, मानसरोवर, नन्दगाँव, गह्वरवन, रासोली, करहला, कोटवन, कामवन, वृन्दावन, सेवाकुञ्ज निधुवन ये द्वादशरास चबूतरा हैं।

## द्वादश रास के अंग

वंशीध्वनी, गोपी अभिसार, कृष्ण के साथ बातचीत, लघुरास, राधिका को लेकर शृंगार, गोपीन के साथ ही पुनः प्राकट्य, गोपीन के प्रश्नोत्तर, आसन पर बिराजनो, रास नृत्य, वन विहार, जल विहार, क्रीड़ा।

ये ही बारह महीना की लीला बारह मास के उत्सव महोत्सव रूप में होय है। श्री नाथजी में रास पञ्चाध्यायी के आधार पर पाँच मुकुट पांच शृंगार



होयहैं वे शरद के अनुरूप रासोत्सव के अंग भूत माने हैं तथा महारास की सेवा क्रम या प्रकार है।

(१) आश्विन शुक्ला ८ प्रथम वेणुनाद प्रश्न उपदेश तथा प्रणयगीत यामें चितराम की पिछवाई मुकुट के शृंगार आज भामती जी की सेवा क्रम।

(२) आश्विन शुक्ला ११ लघुरास मुकुट धरे। चितराम की पिछवाई वनमाला को शृंगार उपरना गुलाबी ललिता जी के भाव सों। शयन में द्वितीयाध्याय।

(३) आश्विन शुक्ला १४ परिधान पर विराजनो प्रश्न के उत्तर देनो जरीकी काछनी पिछवाई चितराम की मुकुट वनमाला को शृंगार उपरना शयन में चूंदड़ी को जमुनाजी के भाव सों तृतीयाध्याय।

(४) आश्विन शुक्ला १५ शरद शृंगार श्वेत सुनहरी जरी काछनी मुकुट हीरा मोती के आभरण शयन भीतर सजावटादि चतुर्थाध्याय स्वामिनीजी के भाव सों।

(५) कार्तिक शुक्ला १ शरद् को पुनः वैसो ही शृंगार शयन में तारा को सफेद उपरना। पञ्चमाध्याय चन्द्रावलीजी के भाव सों।

चूंदड़ी को उपरना या लिए धरे आज छेली चूंदड़ी है रास के मध्य में आरम्भ में रति के आनन्द में चुम्बनादि वर्णन में रसिक भक्तन को भाव चूंदड़ी। दन्तक्षत से कपोलन में चूंदड़ी चोफूली। पटकनो माने यासों ही चैत्र शुक्ला ३ गणगोर में हू चूंदड़ी मानी गई है। प्रथम अषाढ़ी पूनम में तथा ठकुरानी तीज में चूंदड़ी धरै। अक्षय तृतिया बीचहू यदा कदा धरें।

"रसिक रस भरे नृत्यत रासरंगा"
सुलप संचगति लैत अहो गिड गिड तात तत् मृदंगा।
गोविन्द प्रभु रस वस कीने नृत्य में कुशल शिर मोति मंगा।

**आश्विन शुक्ला ११**—यह शृंगार सेवा सारी ललिता जी आदी की होय है। वस्त्र गुलाबी लाल तास जरी के। शृंगार मुकुट काछनी को होय परन्तु वस्त्र एच्छिक आभरण एच्छिक। हाँ मुकुट में जब भी ठाडे वस्त्र आवेगे सफेद ही आवे है तथा रास में नृत्य के भाव सों जादा गरमी जादा सरदी में मुकुट नहीं धरें आज की पिछवाई चित राम की रास के भाव की शयन के दर्शन खुले बाद आज गुलाबी उपरना पाग के दर्शन मंगलावत् होय यामें विशेष आभरण रहे मध्य को शृंगार लूम तुर्रा आदि। आज से लेकर के कार्तिक कृष्ण एकमन तक रास के पद आठो समय होय।

**आश्विन शुक्ला १२**—अन्नकूट उत्सव के अष्ट सखीन की परचारगी श्रृंगार उनकी अन्तरंग प्रिय सखी तत्‌तत्‌ सखी को करें यामें नियम नहीं। ये श्रृंगार परचारगी आठ होंय। वामें से कोई भी होय सके है वे आठ श्रृंगार तथा उनके वस्त्र भावना उन्हीं दिनन में लिखेंगे। आज श्रृंगार १० के भये। ये श्रृंगार विशाखाजी को है। उनकी प्रियसखी आच्छादिका जी की आड़ी सों है। वस्त्र सफेद सुनहरी काम। काँटा वेलरी वारी पिछवाई वस्त्र सफेद में सुनहरी टिपकी पाग घेरदार सूथन ठाड़े वस्त्र लाल किलंगी लूम की पन्ना के आभरण छोटो श्रृंगार कर्णफूल को।

**आश्विन शुक्ला १३**—श्रृंगार वारस को श्री तुङ्ग विद्या जी की सखीन के सहचरी श्री वृन्दा देवी जी को वस्त्र पीरी जरी के घेरदार वांगा हरे ठाडे वस्त्र पन्ना मोती के आभरण। जमाव की चन्द्रिका श्रृंगार मध्य को पिछवाई सिलमा सितारे की जडाऊ भरमा।

**आश्विन शुक्ला १४**—शरद के तीसरे अध्याय को मुकुट को श्रृंगार जरी के वस्त्र मुकुट डाक को पटकमा हीरा को एच्छिक आभरण एच्छिक पिछवाई चित राम की। रास की शयन के उपरना चोफूली चूदड़ी को आवे। लूम तुर्रा भी धरें एच्छिक है चूदड़ी के उपरना को। पद भाव पीछे लिख आये हैं।

**आश्विन शुक्ला १५**—शरदोत्सव देहली वन्दनमाल अभ्यंग वस्त्र सुनहरी रूप हरीजरी के सूथन केशरी जरी को पीताम्बर लाल दर्याइ को ठाडे वस्त्र सफेद चोली मेघ श्याम मुकुट हीरा को पिछवाई चितराम की 'द्वँद्वँ गोपी विच बिच माधो' के भाव की चोकठा हीरा को वेणु वेत्र हीरा के। सारे आभरण हीरा के। सारो मंदिर घुवे संध्यार्ति बाद रतनचोक मणि कोठा डोलतिवारी में विछायत हो दिवाल गिरी चन्दवा परदा वन्दन माल सब सफेद सजावट वडी होय भीतर शयन होय भीतर की सेवा में चन्दन जामें केशर कस्तूरी अम्बर सोधीं मिली होय चमेली चाँदनी सहित चन्द्र कृष्ण की रास लीला को साज जामें बड़ी विछायत होय। ध्रुव वारी के नीचे सारे वाद्य धरें जाय। डोल तिबारी में चाँदनी आयवे पर शयनार्ति होय। आज को श्रृंगार वस्त्र सब सखीन के भाव सों अनूठो होय। मेघ श्याम चोली जमुना जी के भाव की। उपर की काछनी स्वामिनी जी के भाव की। सुनहरी जरी की नीचे की सफेद जरी की चन्द्रावलीजी के भाव की सूथन नन्द कुमारिनकान के भाव सों पीताम्बर लाल दर्याई को अनुराग के भाव को ललिता जी के भाव सों ठाड़ो पट स्वेत जामदानी को सारो साहित्य चाँदी को स्वेत। चमेली के घमलादि वरणी तेजाना प्रभृति सामग्री चन्द्र कला खीर फलफूलादि।

यह शरदोत्सव की विशेषता तथा पुष्टिमार्गीय कई स्वरूप आकाशी चाँदनी



में विराजे याको कारण यह है वालक कन्हैया स्वस्थ तन्दुरुस्त रहे अत: आज की रात्रि में चन्द्रमा अमृत छोडें और मकर के संक्रान्ती में सूर्य दुपहर में अमृत छोडे। वामें धूप सेवन करे यामें चाँदनी साथ में त्रिविध सामग्री अरोगे है।

छः महिना की रात्री क्यों भई नन्ददास जी अपनी वाणी में सुन्दर भाव पूर्ण वर्णन करें

रेन रीझी हो प्यारे हरि को रास देख याही सो बढ़ि गयी गेन।
चल न सकत हरि रूप विमोही रही इकटक आछे नक्षत्रन नेन।
छवि सों छूटत मानों विच-विच तारे हीरा के आभूषण पर वार डारो जगएन।
चन्दा हू थकित भयौ देख के लालच रयो देख के परम चेन।
जो लो इच्छा भई तोलों नाचे है गोपी गोपाल अद्भुत गति मोपे कहिन परे वेन।
नन्ददास प्रभु को बिलास रास देखवे को मन्मथहू को मन मथ्यो मेन।

रात्री भी रीझ गई श्याम सुन्दर को रास देखकरि यासों बो जब तक देखती रही तब तक रात्री बढ़ गई। चल भी न सकी जब तक पूरो न देख रास तब तक एक स्थान में खड़ी रही देखे रात्री कायसो तो कहै है नक्षत्र रूपी नेत्र सो रास देखकर ही देखबे में धार बन्धे सो हीरा के आभूषण की चमक देखवे में समस्त संसार स्थानन को वार डारें जब रात्री थकी सी भई तब चन्दा भी स्थिर होय गयो स्थिरता सों बड़ी शान्ती मिली तासे आगे बढयो नहीं जब तक इच्छा भई गोपाल लाल एवं गोपीनने रास कियो अद्भुत शौभा भई नन्ददास कहे या रास बिलास देखवे को कामदेव को भी मन मथ लियो गयो तो आगे कहाँ चली। याही प्रकार सूर के पद में गन्धर्व विवाह भी दर्शनीय है या रास में लग्न पत्र आनी विवाह होनो वेद पढ़नो सब वर्णन है।

जाको ब्याह वर्णत रास।
है गन्धर्व विवाह चित दे सुनो विविध विलास।
कियो प्रथम कुमारि यह व्रत धर्यो हृदय निवास।
नन्द सुत पति देव देवी पूजे मन की आस।
दियो तब परसाद सब को भयौ सबन हुलास।
मन्द्र नयन तरुन तरुवर यमुन जल हरिपास।
धर्यो लग्न जो शरद निशि की सुघ करी गुरु रास।
मोर मुकुट समीर मानों कनक कंकण रास।
वेणु धुन सुन श्रवण सायक कमल वदन प्रकास।

रूपप्रति प्रतिरूप कीने भये अंश निवास।
अधर निधिवे धीर करके करत आनन हास।
फिरत भामरी वस्प भूषण अग्नि मानो मास।
सुरनारि कौतुक लगी आई छोड़ पति सुत पास।
जिय परी को ग्रंथ कोन छोरे निकट न ननद न सास।
निरख श्रुति नति कुसुम अंजुलि वरखि प्रसून अकास।
लेत या रस रास को रस रसिक सूरजदास।

जा रास को व्यास वर्णन करें ताये सूरदास गन्धर्व विवाह कहे हैं या विवाह को चित देके सुनो प्रथम व्रज ललना नन्द कुमारिकानने व्रत संकल्प कियो वह प्रभु मूरति हृदय में धरिके और नन्द सुत ही पति होय यासो देवी देव पूजे कात्यायनी सन्ध्या देवी वेरूदेवी मन की कामना पूरण करिवे को तव देव स्वरूप कन्हैया ने प्रसाद दियो तब सब प्रसन्न हे गई। मन्त्र का नेत्र सो नेत्र मिलावनो वृक्ष यमुनाजल ये गवाह पास हुते लग्न पत्र तिथी शरदपूनम की निश्चत वृहस्पति जी ने करि सुधि दिवाई लग्न वाचे कोनने मोर मुकुट की लटक सो जो पवन चली वही लग्न सुनायो हाथ में धरि के वही कंकण बाजू आदि भये वेणुनाद को श्रवण ही सुनकर ललनान के स्वामिनी जी के वदन कमल विकसित हे गये और प्रति रूप में बाकी आभा प्रकाश भयो भुजधर के प्रभु के मुख के अधर रस रूपी दक्षिणा प्राप्त करी अग्नि साक्षी में फेरा (भामरी) पड़ी वही रास को नृत्य द्वे द्वे गोपी विच-विच माधव और अग्नि साक्षी हीरा के आभूषण वे अग्नि के प्रदक्षिणा भई या रास में गीत गाय वे तथा गठ जोड़ा आरती उतारवे वारी देवाङ्गनायें भई पति पुत्र पास होते भये भी छोड़-छोड़ दर्शनार्थ आईं गठ जोड़ा वन्धे को कहै जो मन में गाँठ पड़ी वह कौन छुड़ावे अर्थात् ग्रंथी मोचन कौन करे न तो पास में सास न ननद तव श्रुति रूपी देव गण मन्त्राक्षतारूप पुष्प वृष्टि कर गठ जोड़ा जोड़े और दर्शन कर जीवन कृतार्थ करें या रस को आनन्द रास में रसिक शिरोमणि रसराज को सूरजदास स्वामिनी जी लेसके यह गन्धर्व विवाह रास मान्यो रास के अनेक पद भाव भावनादिहे यहाँ संक्षेप सो वर्णन कियो गयो है।

(११) भगवान में काम जरे भये वस्त्र जैसे जर्‌यो भयो कपड़ा कहैं पर कपड़ा को रूप अदृश्य होय जाय वाही भाँति गोपी निष्काम भईं।

(१२) भगवान शुद्ध स्वरूप है भक्त भी रस रूप बनकर रस लीला करे यहाँ काम बन सके नहीं कल्पना करें लौकिक काम तो काष्ठ में अग्नि है और यामें अग्नि प्रवेश होय तो काष्ठ भी अग्नि सरूप बन जाय तो गोपी लीलामय देह सों निष्काम बन गईं।

शरदोत्सव में इतने पद गवें

मंगला— मानलग्यो गोपाल। अभ्यंग के ६ पद होय। शृंगार सन्मुख-चलहु राधिके सुजान। ग्वाल में टोडी के। आसावरी-माला बोले तब तक गवते रहे।

राजभोग सन्मुख—बन्यो रासमण्डल में व्रजयुवति। भोग में—अलाग लाग उरप तिरप। रासविलाश गहे कर पल्लव।

तत् थेइ रास मण्डल में। आरती में बीन में मदनगोपाल। आरती सन्मुख व्रज वनिता मध्य। शयन भोग आवे तब से लेकर ताला मंगल होय तब तक रास के पद कीर्तनियागली में होय फिर कमल चोक में हाथीपोल में सन्मुख ध्रुव वारी के जेमनी आडी ठाड़े होयके। तानपूरा सो पूरी पूरी पूरनमासी पूरयो शरद को चन्द—गवै।

गिड गिड थुंग थुंग
लाल संग रास रंग
श्याम सजनी शरद रजनी
बन्यो मोर मुकुट नटवर वपु
निरत रास रंग
मण्डल मध्य रंग भरे श्यामाश्याम
बंसीवट के निकट रास मंडल
रेन रीझी हो प्यारे हरिकी रास
सुन धुन मुरली बजे
वृषभान नन्द जी नाचत लाल (शयन आरती होय तव)

**विहाग में**

अद्भुत नट वेष धरे यमुनातट
खेलत रास रसिक नागर
राजत रंग भीनी भामिनी यामिनी
शरद सुहाइ यामिनी भामिनी
नचवन सिखवत प्यारी पिया को।
आज मान पोढ़वे के पद नहीं होय।

**कार्तिक कृष्ण १**—शरद को शृंगार की वैसो वैसो साज सज्जा तथा विछायत वगैरे नहीं। शयन में तारा रूपहरी वारे उपर ना धरे शरद के पद—पूरी पूरी पूरन मासी। मध्य को शृंगार हीरा के। पहुँची लूमतुर्रादि सब कर्णफूल शरद के दर्शन

के भाव सों। श्री हरिराय महाप्रभु द्वारा महारास में जो लीला भगवान ने करी उनके प्रश्नन के उत्तर—

(१) ये लीला करिवे वारे भगवान अजन्मा अप्राकृत देह धारी हैं। केवल आनन्द स्वरूप ही श्रीकृष्ण हैं वे सदानन्द हैं।

(२) गोपी भी कामुक नही हैं कारण ये भक्त महाभागा जितनी संसारासक्ति ही वाय छोड़ कर प्रभु सन्निधी में आई।

(३) रसात्मक भगवान की क्रिया भी रस रूपा है और क्रिया विगत विकार हैं

(४) भगवान की लीला निर्गुण रस रूप को अविर्भाव करावे है।

(५) भगवान ने लोक प्रसिद्ध काम लीला नहीं करी यह तो स्वरूपा नन्द-लीला है।

(६) प्रभु साक्षात् मन्मथमन्मथ है। तो मन्मथमथन करवे वारो वाके दासत्व स्वीकारें।

(७) जो यहां संसारवारो काम होतो तो अहंता ममतात्मक पुत्र पौत्र प्राप्ती होती ये संसार निर्लिप्त गोपी जन स्वतन्त्र भक्ति सिद्ध करी है।

(८) भगवान योगेश्वरेश्वर है सो रस रूप को आविर्भाव करायके रस रूप को दान कियो उनकी लीला रसानुकूल क्रिया उत्पन्न करी।

(९) जो भगवत्काम में अलौकिक और भक्त के लौकिक काम माने तो सजातीय विजातीय भेद से काम पूर्ति हो नहीं सके दोनों निष्काम होने चाहिये अलौकिक है।

(१०) शुक जैसे ज्ञानी भी कहे हैं—वेद के श्रवण से पाप मुक्त होय तो ऐसे ही रास पञ्चध्यायी श्रवण सो काम निवृति होय।

## अन्नकूट महायज्ञ

कार्तिक कृष्ण २ धान की सेवा होय। ये महूर्त से एकम या दूज से देहली मण्डे श्रीजी के शृंगार में पद के भाव सों तथा चार शृंगार चार यूथाधिपान के आगम के शृंगार ललिता जी के भाव से। पीत दुमाला वन्यो कण्ठ मोतिन की माला के भाव सों। वस्त्र नीली तास के पीत दुमाला मोरचन्द्रिका वाम भाग की मोर पक्ष को कतरा मोती के आभरण लाल ठाड़े वस्त्र मध्य को शृंगार कर्णफूल को।

अपने अपने ठोर कहत व्रजवासियाँ। या में ही पीत दुमाला वन्योक ण्ठ मोतिन की माला का वर्णन है।

**विशेषता पुराणन के आधार पर—**

आजसों कार्तिक मास आरम्भ सो यशोदाजी एवं गोपीगण व्रतारम्भ कियो तथा कार्तिक कृष्णा ७ एवं ८ म दोनोंदिन को मानसी गंगा पै स्नान करि श्रीकृष्ण बलराम को न्हवाय इन्द्र पूजा ९ से प्रारम्भ करी तथा यमुनाजी के तट पै एकादशी के दिन व्रजवासीन ने बैठके पञ्चायत करी व्यवस्था आदि करी यासों ही घन की सेवा एकम दूज को तथा सखडी रसोई की भट्टी पूजा सप्तमी अष्टमी को एकादशी को पंचायत रूप में बड़ी सेवा प्रारम्भ करी। वल्लभ प्रभु के पुष्टिमार्ग में श्रीनाथजी के यहां होय है याही भाव सो।

आज के दिन ललिताजी को शृंगार तथा मनोरथ या भाव सों है।

(१) देखोरी हरि भोजन खात।
सहस्रभुजाधर उत जेवत है इत गोपाल सो करत बात।
ललिता राधा सों कहत जो तेरे मन बात समात।
धन्य सब गोकुल के वासी संग रहत गोकुल के नाथ॥

(२) गिरिवर श्याम की अनुहारी।
करत भोजन अति अधिकाई सहस भुजा पसारी।
नन्द को कर गहे ठाड़े यही गिरि को रूप।
सखी ललिता राधिकासों कहत देख सरूप।
यह कुण्डल यह माला यह पीतपिछोरी।
शिख शोभा श्याम की छवि श्यामगिरि की जोरी।

आज से विशेष मोरपक्ष चन्द्रिका कतरादि के शृंगार होय। भट्टी पूजा होय सखडी की, ताको प्रकार भट्टी के ऊपर हलदी के चोक पूरे जाय तथा कमल स्वस्तिकादि मांडे फेर जा दिन महूर्त में चोघड़िया आछो होय ता दिन ता समें समस्त गोस्वामी बालक भीतरिया मुखिया बहू बेटी आदि जाय। कढाई में तेल पधरावे समस्त सेवकन में तिल ये साजन कू लिये नोट बूकरे डारे ता समें सातो ालक आचार्य गुसाईंजी आदिन के नाम लेकर पधरावे। उकाला आवे तव उडद की पीठी के बडा नाखि के सेके। सबन के तिलक होय पूजा करैं। कार्तिक कृष्णा में वे आठ शृंगार होय उनके बीच में चार शृंगार होय वे प्रथम धन की सेवा को र्णित है और तीन शृंगार एच्छिक होय वह या भावना से हैं।

चन्द्रावली जी टिपारा के पद भाव सो है तथा निम्न वर्णन है जमनाजी को अभ्यंग को पद भी भाव सो उत्सव के अभ्यंगमाने स्वामिनीजी को मुकुट को ये पद भाव सो गो क्रीड़ा में।

(२) **चन्द्रावलीजी टिपारा को श्रृंगार**

लाल जरी के चाकदार गोअन की पिछवाई टिपारा सूथन लाल जरी को ठाड़े वस्त्र पीरे जोड़ मयूर पक्ष को आभरण जडाऊ वनमाला को श्रृंगार।

मदन गोपाल गोवर्धन पूजत।
बाजत ताल मृदंग शंख धुन मधुर-मधुर मुरली कल कूजत।
आनन्द मगन ग्वाल सब डोलत ही ही धोरी धूमेर कहावत।
रति पियरे बने टिपारे मोहन अपनी धेनु खिलावत।

अनेक भाव पूर्ण श्रृंगारादि है।

(३) **स्वामिनीजी को मुकुट को श्रृंगार**—ऐच्छिक होय जरूर पिछवाई चितराम की गोअन की गुमट में प्रभु विराजे वस्त्र लाल जरी की काछनी ठाडे पर स्वेत वनमाला को श्रृंगार कुण्डलादि आभरण वस्त्र ऐच्छिक।

इतहि श्याम गोअन संग ठाडे। भोजन करत अधिक रुचि बाढ़े।
अंग भूषण श्रवण मणि कुण्डल। मोर मुकुट शिर अलक सुकुन्तल।

**दूसरो**

टेर टेर बोलत नन्द नन्दन मांग बुलाई धूमर धोरी।
माथे मुकुट काछ पीताम्बर उर सोहे वनमाल।
शोभित लकुट बजत पग नूपुर झलकत नयन कपोल विशाल॥

**तिसरो**

यह लीला सब करत कन्हाई।
उत जेंवत गोवर्धन के संग इत राधासों प्रीत लगाई। आदि पद

आज शयन में सूथन पटका धरें।

**जमना जी**—अभ्यंग अच्छो वार देख के बीच में होय ताको श्रृंगार माने तथा ये पद के आधार सो श्रृंगार अभ्यंग होय बड़े बड़े श्रृंगारन में एक छोटी श्रृंगार वस्त्र नीले मास के जमुना के भाव सो घेरदार वाग पटका। सादा पाग आभूषण व जड़ाऊ छोटो श्रृंगार कर्णफूल को पिछवाई भरत की सखी रोशनी की झाडफांनस वारी।

**पद**—गोप समाज जुरे जमना तट सब मिल संमत कीनी।

ऐसे ही अन्नकूट के चार श्रृंगार चार यूथाधिपान के भाव सो होय आठम को दिवाली को श्रृंगार परचारगी आज यह ललिताजी के भाव कोहै यामें उत्सव व्रत पर्व मानने के पद गवें।



(१) गुर के गूंजा पुवा सुहारी गोधन पूजे ब्रज की नारी।
हरिराय गोवर्धनधारी रितु मानत सुख सर्व दिवारी॥

(२) फूले गोपग्वाल घर घर के मानत है त्योहार दिवारी।

(३) मानत पर्व दिवारी को सुख हटरी बैठे नन्दकुमार।

यह श्रृंगार आपके श्रृंगार पूर्व ८-६-७ को होय तब रोसनी होय। हटडी शयन में आज ही विराजें पूवा सुहारी अरोगे तथा दिवालीवत् पर्व मानि के भक्त सुखदान देत हैं।

**चन्द्रावलीजी**—दिवाली को श्रृंगार पै चन्द्रावलीजी के भावसों आज वेत्र सन्ध्याति में ठाडो वेत्र गाय घेरवे के भावसो धरै।

**स्वामिनीजी**—अन्नकूट को श्रृंगार यामें गोकर्ण धरे पीत पिछोरी धरे ठाडे वेत्र राजभोग में धरे गाय खिलावे। "**धों-धों करत लकुट कर लीये मुख में फेर** पिछोरी"। परन्तु पीताम्बर नहीं धरे।

**जमनाजी को**—अक्षय नवमी को श्रृंगार यामें तुलसी की **गोवर्धन माला** धरे श्रृंगार दिवाली वत् योको त्यो होय तामें पीत पिछोरी नहीं धरें।

**कार्तिक कृष्णा १० सो आपके श्रृंगार अष्ट सखीन के भाव सो होय**—आज की उत्सव नाइका विशाखा जी हैं जिनको वर्णन या प्रकार है वैसे ही वस्त्र धरे श्रृंगार होय नये वस्त्र नई सामग्री नित्य आये।

"सौदामिनी निचय चारु रुचि प्रतीकां।
तारावली ललित कान्ति मनोज्ञ चेलाम्।
श्री राधिके तब चरित्र गुणानुरूपां
सद् गन्ध चन्दन रतां विषये विशाखाम्।"

तारा वारे वस्त्र घेरदार सफेद सुनहरि टिपकी के वस्त्र कोटावारी पिछवाई सुनहरी किनारी की कामकी पन्ना-मोती के आभरण किलङ्गी छोटो श्रृंगार आज से बाडी आवे। आज से तिजानादि साज आवे, रोसनी होय भोग आरती में गौक्रीड़ा के पद होय, राजभोग में गोवर्धन पूजन के। शयन में रोसनी के हटडी के पद दिवाली तक गादी तकिया लाल। श्री विशाखा जी बिजली की तरह गौरांग। तारावली की साड़ी चन्दन की सेवामें निहित। आपकी आयु १४ एक मास १८ दिन की अवस्था सदा रहे। जड़ाऊ साज गादी तकिया शय्याजी आदि को। आज से द्वार पर नौवत नगाडा बजे। आज से सातों घरन में सात दिन तक माला यहाँ सिद्ध होय, उनके वहाँ पहुँचे राजभोग में वे धरावें।

आठमी यहाँ धरावे अष्ट सखीन के भाव सो तथा समस्त स्वरूपन में प्रभु श्री नाथजी विराजै हैं। झाडफानस रोसनी हाडी आये। आज से बादी आवे, निज मन्दिर में आठ-आठ। आज से राजभोग में गोवर्धन पूजन के पद गवे। ७ दिन तक। ताको कारण गिरराज सात दिन उठायो तथा चार पद हेर हेर के होंय। बज्जन को १। दशमी सो पद क्रम। मंगला से श्रृंगार तक अन्नकूट की बधाई राज० में गोवर्धन पूजा के पद। तथा डोल तिवारी में दर्शन भये बाद पद गवे शयन में भी हथिया पोल में जाय के समाप्त होय। उत्थापन भोग आरती में गाय खिलावे के; शयनभोग में रोसनी दीपदान के शयन सम्मुख में हटडी के बधाई रूप गवे हथीया पोल में समाज के साथ जाय।

**कार्तिक कृष्णा ११ चम्पक लताजी की सेवा—**

सद्रत्न चामर करावर चम्पकाभां चासाख्य पक्षिरुचिरच्छवि चारुवेलां।
सर्वान् गुणानुस्तुलयितुं दधति विशाखां राधेथ चम्पकलत्तां भवतीं प्रपद्ये॥

वस्त्र श्याम जरी के बागा चाकदार मोती हीरा के आभरण नागफणी को कतरा, पीले ठाडे वस्त्र कर्णफूल को श्रृंगार मध्य को काट चोप की। भरत की पिछवाई रोसनी होय बादी आवे आपकी अवस्था १४ वर्ष दो मास १४ दिन है। बीच में ये श्रृंगार परचारगी इनकी प्रधान सखीन के भाव सों होय। दिन निश्चय है। श्रृंगार निश्चय है। चासाख्य वस्त्र धरे या भाव सो आपकी आडी को श्रृंगार है।

आज के दिन बड़ी सेवा होय समस्त सेवकन के मंगल कामना से ये सेवा प्रभु अंगीकार करें।

**कार्तिक कृष्णा १२ तुंगविद्याजी (आयु १४ वर्ष दो मास बीस दिन) सभास्थल सिद्धि की सेवा—**वस्त्र पीरी जरी के घेरदार बागा मध्य को श्रृंगार। पन्ना-मोती के आभरण। जमाव की चन्द्रिका कर्णफूल को श्रृंगार। रोसनी आदि पूर्ववत्।

सच्चन्द्र चन्दनमनोहर कुंकुमाभां पाण्डू छवि प्रचुर कान्तिलसद्दुकुलाम्।
सर्वत्र कोविद तया महत्तां समाज्ञां राधे भजे प्रिय सखी तव तुंगविद्याम्।

या प्रकार आपको श्रृंगार होय है आज कन्द सिद्ध होय।

## धनतेरस, धन्वन्तरीतेरस, धन्यतेरस

आज की सेवा श्री ललिताजी की मानें हैं। आज सौ गोधन श्रृंगार दीपदान गौअन की सेवा ब्रजवासी करें यही ब्रजवासीन को धन गोधन है। यज्ञ की प्रधान देवता गौ है और आज से चार दिन तक दीपदान की महत्ता धन्वन्तरी प्रादुर्भाव दिन सभी माने। महाराणी जी बालकन को पहरावे के आभूषण धोवे यासो भी "धन धोवत ब्रजरानी" आदि पद होंय दीपदान की महत्ता पुराणन में या प्रकार है—

कार्तिके कृष्ण पक्षेतु त्रयोदश्यां निशामुखे
यमदीप बहिर्दद्यात् अपमृत्यु बिनश्यति।
मृत्युना पाशदण्डाभ्यां कालस्यमलया सह
त्रयोदश्यां दीपदाने सूर्यजा प्रीयतामिति।

अतः आज से दीपदान सर्वत्र करें हटडी आदि भी धरे।

श्रृंगार हरी जरी के चाकदार बागा सूथन पाग मोर चन्द्रिका कर्णफूल चार माणक मोती के आभरण बनमाला को श्रृंगार ठाडे वस्त्र लाल चोकटा जड़ाऊ किलंगी लूम शिर पेच आदि। पिछवाई भरत की भारी। देहली वन्दनमाल हांडी उत्सव की सामग्री खीर रवाकी। ललिताजी को वर्णन—

गौरवर्णा रुचिरमनोहर कान्ति देहां
मायूर पिच्छ तुलितुच्छ विचार खेलाम्।
राधे तव प्रिय सखीं च गुरु सखीनां
ताम्बूल भक्ति ललितां ललितां नमामि।

आप १४ वर्ष तीन मास १२ दिन सदा विराजे। आज से अन्नकूट महायज्ञ के आरम्भ में मुक्त हस्त से अन्नदान होय कोई भी निर्मुख नहीं जाय। यासे खीचड़ी बटे। गौअन के श्रृंगार के अनेक वर्णन है एक पद—

श्याम खिरक के द्वार करावत गायन को श्रृंगार,
नाना भाँत सींग मंण्डित किये ग्रीवा मेले हार,
घटा कंठ मोतिन की पटिया पीठन को आछे ओछार,
किंकिणी नुपुर चरण बिराजत बाजत चलत सुढार,
परमानन्द प्रभुधेनु खिलावत पहरावत सब ग्वार।

आज से गोधन गौअन के श्रृंगार होय तथा धन गोधन की पूजा। आज से गौ मातान को थूली अरोगाई जाय। आज से महायज्ञ की महापूजा आरम्भ होय अन्नदान के कुछ उदाहरण ब्रह्मवैवर्त पुराण से।

श्रियं लभेत् स्वर्णदाने राज्यत्वं राजते यथा,
अन्नदान फलं यत् तत् कथं जानातिहिश्रुति,
लभते सर्वदानस्य फलं ब्राह्मण भोजने,
अन्नदानात्परं दानं न भूतो न भविष्यति,
नामयात्रा परीक्षाच नकाल नियम क्वचित्,
अन्नदानं श्रुतं पुण्यं दात्रपात्र न पातकी।

यासो अन्नकूट महायज्ञ में सर्वप्रथम अन्नदान होय है। आज भाजी आवे कन्द पधारे।

**कार्तिक कृष्णा १४ (कृष्ण चतुर्दशी रूप चतुर्दशी नरक चतुर्दशी)—**

कार्तिके कृष्ण पक्षेतु चतुर्दश्यां विधूदये,
अवश्यमेव कर्तव्य स्नानं नरक भीरुभिः ॥

अतः विजया दशमी के दिन जो दश पूवा स्थापन करें उनकूं सुखायकर वाकी आग से सूर्योदय पूर्व चौक पूरिके पट्टा बिछाय चारों तरफ दीप धरि के तिलक आरती कर प्रभुन को बालकन को स्नान करावे स्नान के समय कठतुम्बा ओंगा की दातन वनौषधि धरके स्नान करावे रूप निकारे याके करवे सों नरक यातना न भोगे यासों नरक चतुर्दशी कही गई। ताको निवारणार्थ ये स्नान विधी शास्त्रन में है।

आज राजभोग में हटडी आवे। प्रभून को गंगा-जमनी, सोना-चाँदी की काँचवारी आवे। वस्त्र सुनहरी जरी के घेरदार बागा फुरकसाई जरी पाग सूथन ठाडे वस्त्र मेघ श्याम वनमाला को भारी शृंगार। कर्णफूल चार लूमतुर्रा कलिंगी मोर पक्ष की सादा चन्द्रिका उत्सव के आभरण जड़ाऊ पन्ना-हीरा मोती के पिछवाई भारी जरमा सिलमा सितारे की भरत के काम की। सामग्री पूवा और भी विविध सामग्री। देहली बन्दनमाल आज दिनभर भाजी की सेवा होय। श्री नवनीत प्रिय जी चोतरा पै हटडी में विराजे।

दिवाली में उत्थापन भोग आरती शयन नहीं होय। उत्थापन से भीतर डोल तिवारी में सजावट बड़ी बिछायत होय बीच में चौपड अगल बगल गादी तकिया ध्रुववारी नीचे हटडी सोना को बंगला शय्याजी को साज वगैरे तथा बड़ी बिछायत सामग्री वगैरे। भीतर रतन चौक सो नवनीत पधारे ५ आरती होंय सात बालकन की, गुसाईं जी की, काका गिरधरजी की, तथा चौथी आरती वाद गद्दर श्रीजी घरे जो चन्द्रमाजी के यहाँ से आवे वो फेर नवनीत श्रीजी को शृंगार बड़ो होय छोटो होय नवनीत वही पोढें। मंगला पूर्व पाछे पधारे 'चले उठ प्यारी के महलते भोर'। ये पद् गवे बिना साज के। श्रीजी में नित्य की सेवा होय।

## दिवाली-अन्नकूट

**महायज्ञ**—आज दीपमालिका दिवाली को उत्सव देहली वन्दन माल शृंगार भारी वस्त्र सफेद जरी के फुरकसाई जरी ठाडे वस्त्र सिन्दूरी वागा चाकदार सूथन लाल जरी को कुल्हे जरी की जोड पाँच को उत्सव को तीन जोड को शृंगार हास हमेल कुण्डल चोटी वगेर चोकठा जडाऊ पिछवाई दाऊजी महाराज निर्मित जडाऊ। मोती के झाडवारी। मंगला से राजभोग तक ही दर्शन होय फेर डोल तिवारी में



सजावट होय यासे सायं दर्शन नही होय। सायं नवनीतलाल के दर्शन रतन चौक में हटडी में होय भीतर पधार के शयन में नो आरती होय।

**यज्ञ स्वरूप**—रतन चोक मध्य में काच की हटडी वारह द्वार की आवे वामें द्वादश राशीन की भावना मानी गई। वृष, मिथुन, कर्क आदि उपर मेघ मंडल आवे वो नो खण्ड को येही नवग्रह स्थापन तथा आकाश स्थित दर्शन करें यजमान, अध्वर्यु, होता, उद्गाता, आचार्य, ब्रह्मा, ये सब प्रधान देव की पूजा प्रतिष्ठा कर यज्ञ कुण्ड में स्थित होय। वही हटडी में नोमेला में यज्ञ वेदी भांती विराजवे के स्थान को कहे। अतः सिंहासन में न विराज कर वामें विराजे। हटडी के चारों दिश प्रभु के चारों दिश रित्विक् लोग बैठे। यज्ञ स्वरूप निधि प्रभु विराजे। अन्य देवतान में परिधी यज्ञ कुण्ड की में पशु-पक्षि खिलोनादि धरें वह मुनि है। गन्धर्वादि कीर्तनकार हैं। किन्नरादि छडीदार समाधानी आदि हैं।

यज्ञ स्थल की रात्री भर रक्षा कर रित्विक आचार्य ब्रह्मा यजमानादि स्थित रहे। यासो ही नवनीत वहाँ रात्रि भर विराजे। यज्ञ भगवान है तासो सेवक वर्ग भी तत् तत् सेवा में निहित रहे।

नवग्रह रूप निवारणार्थ पूजा रूप नो आरती होय। प्रधान देव गौ धन की प्रथम पूजा होय। प्रधान पीठ गौ एवं श्रीनाथ जी माने गये। साथ ही सात स्वरूप प्रधान प्रतिष्ठित देवता मान यज्ञारम्भ होय।

रात्री भर रक्षा हेतु इन्तजाम ही यज्ञ की रक्षा है। सेवक वर्ग यजमान, यजमान पत्नी तिलकायत ब्रह्मा बडो मुखिया आचार्य तथा अन्य रित्विक सेवक वर्ग वे ही उद्गाता अध्वर्यु आदि।

यज्ञ भगवान् यज्ञ कुण्ड से प्रकट होय चरु ले दर्शन दे कृतार्थ करें, वही अन्नकूट है। भात को शिखर वक्षस्थल गोल चक्र श्रीमस्तक चारो गूंन्झा चारो हाथ अन्य मीठा वगेरे अंग तुलसी माला धरा यज्ञ सामग्री के साथ दर्शन दे, कामना पूर्ण फल दें।

**यज्ञ साहित्य**—पायस सब प्रकार की खीर आज्य घी की हांडी या साकल्य तिल, उडद यवादि, तिल, बडी, पापड आदि विविध सामग्री यज्ञ साहित्य है।

**यज्ञोपरान्त तर्पण**—दूध घर की आकाशी में गोस्वामी बालकन कूं अरोगानो ही तर्पण है।

**मार्जन**—प्रभु घर पधारे पुण्याह वाचन ही मार्जन है। महाप्रसाद वितरण ही ब्राह्मण भोजन यज्ञोच्छिष्ट सर्वत्र बटे बाद रित्विजन कों आचार्य द्वारा सवस्त्र सदक्षिणा देकर विदा, वही सेवकन की विदाई अन्नकूट की नव आरती यज्ञ भगवान

अन्न वितरण करवे हेतु ही भीलन को अन्न लूटायो जाय है ।

**दीपदान की महत्ता कितने स्थान में धरने—**

दीप वृक्षाश्चदातव्या शक्त्या देव गृहेषु च
चतुष्पथे श्मशाने च नदी पर्वत वेश्मषु
वृक्षमूलेषु गोष्ठेषु चत्वरेषु गृहेषु च
दीपमाला परिक्षिप्ते प्रदेशे तदनन्तरम्
वस्त्रैः पुष्पै शोभितव्या क्रय विक्रय भूमयः ।

**हटडी**—यह हाट बाजार को ही हटडी कही गई और हाट बेचवे हेतु ही प्रभु भीतर डोल तिवारी में बिराजे याको वर्णन भक्त भावना सों—

हटरी बैठे श्रीगोपाल ।
डला डलैया और कुल्हैया भर भर धरे पकवान रसाल ।
पान फूल सोधे सहित सब वाटत दे दे नन्द को लाल ।
चलो सखी जहाँ पेंठ लगी है वेचत जहाँ गोकुल के पाल ।
गोविन्द प्रभु चित चोर्यो बाँध प्रेम की पाल । —गोविन्द

गिरधर हटरी भली बनाई ।
दीपावलि हीरामणि राजत देखत हरख होत बहु भाई ।
अनेक भाँति पकवान बनाये नौतन व्यञ्जन अति सुखदाई ।
सुन्दर भूषण पहन सुन्दरी सोदा करन लाल पे आई ।
सावधान ह्वै सोदा कीजे छीजे तोल पुराई ।
राखो चित चंचल नहि कीजे ग्वाल हसी भुसकाई ।
कैसी बोली बोलत ग्वालन कहत जसोदा माई ।
परमानन्द हँसी नन्दरानी सबै बात है पाई । —परमानन्द

मानत पर्व दिवारी को सुख हटरी बैठे नन्द कुमार ।
मंगल बाजे होत चहू दिश भीर बहुत अति आँगन द्वार ।
कुवर राधिका नवल वधू सब कर आई है रुचिर शृंगार ।
पहले सोदा लेहु हम हिपे तब लीजो दाऊ पे जाय ।
नीके देहो रूहट नर वेही एसे कहत लाल मुसकाय । —श्री विट्ठल

**अन्नकूट वर्णन अन्य पुराणन में—**

मध्ये कर्पूर गौरं शिखरमिवगिरेशुद्धमन्नस्यकूटे
तद् गामे गण्ड शैलाइव विविधरुचि पिष्टिकानां समूहः
मूले अत्यन्त शैला इवदधिपयसा पायसां नात्रकुम्भा
स्तन्मूले व्यञ्जनाल्यः सुरभितरसा सूप मुख्या सरस्य

फिर गोवर्धन पूजा यामे भी गोवर को ही गिरराज बनावे ताको कारण भगवद्वाणी से ।

गुर के गूंझा पुवा सुहारी, गोधन पूजत ब्रज की नारी ।
घर घर गोमय प्रतिमाधारी, बाजत रुचिर पखावज थारी ।
गोद लिये मंगल गुन गावत, कमल नयन को पाँय लगावत ।
हरद दही रोचन को टीको, यह ब्रज सुरपुर लागत फीको ।
राती पियरी गाय सिंगारी, बोलत ग्वाल दे दे कर तारी ।
हरीदास गोवर्धन धारी, रितु मानत सुख पर्व दिवारी ।

सो गोवर के गोवर्धन बनाय वापे गिरिराज पधरावे, गिरिराज प्रभुवत् है । तासो पंचामृत पूजा नहीं । हरिदासवर्य कहे गये गौ की रक्षा सो दूध दही और हरदी कंकू बस यही चार वस्तुन के साथ मानसी गंगा जल, दूध धोरी को। प्राकट्य के समय भी गिरिराज धरण श्रीनाथ जी ने दूध अरोग्यो । पाधो को दही माँग माँग के खायो । यासों हरदी माँगलिक कंकू अनुराग रूप यासो ये चार वस्तुन सों स्नान होय । हरिदास वर्य कहे गये कुनवारो भोग आवे, जीव की पाँच आकांक्षा हैं । दूध व सुधाविर्भाव दहीवत सुभ्रता हरदी सम सुखद कंकू के सम अनुराग या प्रकार पाँच से स्नान होय । दूध, दही, हरदी कंकू एवं जल स्नान होय ।

**मोरपक्ष बांधवे को कारण—**

गोप गायें गोपाल इनके एक शृंगार होय । मोर पक्ष नजर, चोट आदी निवारणार्थ मान्यो है तासो श्रीमस्तक पे धरें और गो कर्ण भी धरें मोर छल को भाव भी याही सो है । उष्ण काल में नहीं ताकी जमुना रक्षक है । मोर वैराग्य को भी सरूप है ।

**टोना**—हरेपीरे लाल नीला सब रंगन के बांधो है यह व्रजभक्तन के भाव सो । ब्रजभक्त विविध प्रकार रंग के होवे सों या महायज्ञ में गौअन को ग्वालन को भगवदीयन कों टोना न लगे तासो टोना बाँधे कृष्ण कन्हैयाहू पीताम्बर श्रीहस्त में धरै है और गायन पर ग्वालन पर फेरत है । भक्तन ने हूगाये है ।

खेली बहु खेली गांग बुलाई धूमर धोरी ।
बछरा पर उपरना फेरत डाढ मेल के दोरी ।
आप गुपाल कूक मारत है गौ सुत भरत अंकोरी ।
धोंधों करत लकुट करलीने मुख पर फेरि पिछोरी ।
आनन्द मुदित गोपाल ग्वाल सब घेर करत इकठोरी ।
चत्रभुज प्रभु गिरधर यह सुख युगयुग राज करो री ।।

याको नामहू टोना है ।

**कनेर की छरी**

कनेर में गजानन गणेश गणनायक को निवास है। याते या महायज्ञ के आनन्द सम्पूर्ण निर्विघ्नतापूरक सभी लोग कनेर हाथ में राखे और चारोदिशि रक्षाहेतु अंगीकृत करें।

अन्नकूट और गोवर्धन पूजन प्रभु आज्ञासों समस्त वैष्णवन की करणीय हैं वार्ता २३५। डोसी, दयाल दास व्यापारी ने चाचाजी सों पूछ्यो सात वर्ष के कन्हैया ने सात कोष को सात दिन गिरिराज क्यूं धार्यो।

(१) मनुष्यमात्र पर देव रिण
(२) ऋषीन को रिण
(३) पितृ रिण
(४) देहाभिमान
(५) सम्बन्धीयन को अभिमान
(६) जोपै काम नहीं करुंगो तो मेरी निन्दा होयगी—ये मद
(७) उपरोक्त तीन रिण रहेगे तो मेरो इहलोक परलोक बिगड़ेगो

या प्रकार जीव के अन्याश्रय छुड़ायवे हेतु सात दिन गिरि राजधर्यो। गोपग्वालन ने बड़े धूमधामसो गोवर्धन पूजा करी। भाई दूज के दिन जेवनार भई तथा समस्त जन आनन्दोल्लसित होय यमुना स्नान किये ओर तीज के दिन से मूषला धार वर्षा भई। प्रभू ने तीज सो अक्षयनवमी तक सातदिन गिरिराज घारणकर ब्रजरक्षा करी।

गो० रघुनाथजी ने गोपवाल गिरिराजधारी की वन्दना अष्टक के रूप में या प्रकार सों कही है—

त्रैलोक्यलक्ष्मी मृद्भृत् सुरेश्वरी पदाघनैरन्तकरै ववर्ष।
तदाकरौघ स्ववलेन रक्षणं तं गोपवालं गिरिधारिणंभजे॥

दिवाली अन्नकूट में सात स्वरूप श्रीनाथजी सदां पधारे और पुनः अपने अपने घर पधारें ताको कारण महायज्ञ में समस्त सप्तलोक के देवत्व की भावनासो सात स्वरूप श्री मथुराधीश, विट्ठलवर, द्वारकाधीश, गोकुलनाथ जी, गोकुलचन्द्रमा जी, मदनमोहन जी तथा सातवें श्रीनाथ जी या प्रकार ७ स्वरूप तथा नवनीत प्रियाजी को आठमो स्वरूपधर्मी जानिये।

**गोद के छ स्वरूप**—श्रीमद्भागवत के दशम के सप्तमाध्याय में राजा के छ प्रश्न के उत्तर स्वरूप छ स्वरूप है।

"यच्छ्रृण्वतो यैत्यरतिर्वितृष्णां सत्वंचशुध्यत्वचिरेणपुंसः
भक्तौ हरे तत्पुरुपेच सख्यं तदेव हारंवद मन्यसेचेत्"



तहां राजा के प्रश्न के श्रवणोपरान्त श्रीशुकदेवजी कहें इन लीला के श्रवण पूर्व मातृ चरण के निरोधार्थ ये लीला स्वरूप छैं है।

(१) शकट भंजन लीला विग्रह तीन मास के औत्थानिक लीलावारे द्वारकानाथजी के गोद के बालकृष्णजी जो सूरत में विराजें।

(२) मथुराधीश के गोद के स्वरूप नटवरजी तृणावर्तलीला प्रसंग के एक वर्ष को स्वरूप।

(३) नवनीतप्रियजी में विराजे वे वालकृष्ण जी तथा

(४) मदननोहन जी जंम्हाई लीला के। सत्वशुद्ध लीला है या लीला श्रवण ते भक्ति होय। जभाई लेवे सो बालकृष्ण यशोदा को मोह में डारिवे वारे मदन मोहन।

(५) गोकुलचन्द्रमाजी के बालकृष्णजी तथा उलूखलबंधन के बालकृष्ण।

(६) मदनमोहनजी ऊलूखल बंधन के नल कूबर मणिग्रीव उद्धार करिवे वारे मदन मोहन या प्रकार ये छ स्वरूप सुबोधिनी आधार पर है। या प्रकार १४ स्वरूप तथा आचार्य एवं विट्ठलवर गुसाईजी या प्रकार कुल मिलकै षोड़श कलात्मक पुष्टिसृष्टी में रस दानार्थ ये अन्नकूट महायज्ञ होय है।

चऊदह स्वरूपन की भावनालीला पृथक् पुस्तक में स्थित है। अन्नकूट महायज्ञ अनेक भावलीला प्रभुमुख लीला से सम्भूत है। साहित्यिक छटा कवियन ने वर्णन करी है प्रवीण कवि ने शृंगार वर्णन तथा भारतेन्दु हरिश्चन्द्रजी ने भील लूटवे को वर्णन गो० कल्याण रायजी ने तथा ब्रज पति जी आदि अनेक भक्तन में गोवर्धन पूजा बर्णन कियो है। एक पद श्री कल्याण रायजी को उधृत करें है। यामें वायना बाँटनो तथा बहन बेटीन को यज्ञादि के प्रसाद अपने समधी व्यवहारीन को देनो तथा गोवर्धन पूजोपरान्त अन्नकूट अरोगवे को वर्णन या प्रकार है।

यह सुन मगन सकल ब्रजवासी आनन्द दुन्दुभिवाजे।
घरघर गोपी मंगल गावे गोकुल आन विराजे।
इक नाचत इक करत कुलाहल एक वजावत तारी।
वनितावृन्द बायनो वाटे गूझा पुवा सुहारी।
तव ही इन्दु आयसु दीये मेघन जाग प्रलय के बरसो।
यह अपमान कितो धो किन याहि प्रकट ह्वै परसों।
सातद्योस जल शिला सहस्रन महा उपद्रवकीनों।
नन्दादिक विस्मय चितबत सव तब गिरिवर कर लीनो।

गहे चरन गोविन्द नाम कहि कियो आपु अभिषेक।
महर मुदित मन बसन मंगाये बोलि ग्वाल नालन को दीनों।
प्रभु कल्यान गिरधर जुगजुग यों भक्त अभय पद कीनो।

अन्नकूट कोटिभांतनसों भोजनकरत गोपाल। आपुहि कहत तात अपने को गिरिमूरत देखो ततकाल सुरपति से सेवक इनही के शिवविरंचि गुन गावे। याहीते अष्टमहासिधिनव निधि परम पदारथ पावे। हम गृह वसत गोधनवारी गोधन ही कुल देव। इन्हें छांड जो करत यग्य विधि मानोभीत को लेव।

या पद की भाव व्याख्या रस विशेष वारो है। या प्रकार महायश अन्नकूट महामहोत्सव सम्पन्न भयो।

---

## अन्नकूटोत्सव की सामग्री सूची

**बाल भोग की सामग्री :**—मठडी नग ११८८, गूंजा ११८८, मालपूवा, पूवा ११८८, सेव लडुवा ११८८, सकलपारा ४००, चन्द्रकला ७२, बाबर २०२, जलेबी टोकरा ३३, मनोहर ३६, मेवाटी ३६, इन्द्रसा ३६, कपूर नाडी ३६, खरमण्डा ३६, दिवला ३६, सुहारी ३६, चुगली झाल २, कतली चार तरह की—बदाम २०, पिस्ता २०, चिरोंजी २०, खोपरा २०, रसखोरा ३६।

### पहलो नेग

शिखरन बडी चपटिया ४, अम्रस नाँद १ हाडी १, सीताफल सिखर नाद १ हा० १, सेव को विलसरिक नाद १ हांडी १, अनार की ना० १ हा० १, अथाणा चपटिया ४, कच्चो आचार, कूडा चालनी, कूडा ६, खटीर ६, खारक (छुहारे) ६, माखन मिश्री ६, लोन, बूरा, काली मिरच, आदा, पाचरी कूंडा, नीबू, टेंटी, केरी दो प्रकार की, शाक घर पाँच प्रकार के बदाम १, पिस्ता १, चिरोंजी २, काजू मिलमा।

**दूध घर की सामग्री :**—माटी के कूंडान में नग २४, बरफी केशरी सफेद, पेड़ा केसरी सफेद, दूध पूडी १२, बासोंदी ४ चपटिया, खिलोना ४०, दही हाँडी २।

**अन्नकूट की सखडी सामग्री की यादी (सूची) श्री नाथ जी के घर की**—चावल १५९ मन अवश्य होंय। अन्नकूट के दिन ताजा सामग्री सिद्ध होय वो या प्रकार:—मूंग चणा की दाल डेढ़ मन, मूंग की डेढ़ मन, छीलका की डेढ़ मन, छडियल तूहर की कढ़ी, तिनकूंड़ा वडी को शाक, वेंगन सादा, वेगन छीले, आलू सादा छिले, सकरकन्द, सूरण, कच्चर भुंजेना ताजा वेंगन के आलू के कमरख

## कार्तिक शुक्ला २ यमद्वितीया भाई दूज

मंगला के शंखनाद आठ बजे के आसपास होय देहली वन्दनमाल की हाँडी अभ्यंग होय पिछवाई मोतीन की लाल धरती वृक्ष वस्त्र लाल खीनखापके। पाग सुनहरी चीरा आभरण पन्ना-मोती के। छोटो श्रृंगार ठाडे वस्त्र सफेद चन्द्रिका मोर पक्ष की। लूम छोटी पन्ना की। आज ग्वाल नहीं खोलें। राजभोग आवे। राजभोग सजे बाद धूप दीप होय। तिलक आरती होय। फिर भोग आवे। नित्य क्रम सेवा होय। भोग आरती सामिल होय। मंगला में देर होवे सो जगवे के तथा माहात्म्य के पद राग विलावल में गवें।

मंगला सन्मुख—लीलालाल गोवर्धन घट की। अभ्यंग के ६ पद पूर्ववत्। श्रृंगार सन्मुख में—याते जिय भाये गोवर्धनधारी। राजभोग में तिलक होय तब भोग आते में—आज द्वैज भैया की कहियत। राजभोग अरोगते में—लाडले गोपाल आज हमारे भोजन कीजे। जसोदा एक बोल जो पाऊ; कहति राधिका अहीर;

---

को शाक। पांच भात सखडी रसोई में बने पै रसोइयाजी जाय तब दही भात। मेवा भात, राई भात, सिखरन भात। वेल सारू केला को, पेठा को बाल भोग में सिद्ध होंय।

**चार खीर**—चामर की, रवा की, मनका की, पाटिया की।

**रायता चार**—दाख बूंदी साँगरी को, आलू को, साँगरी को मुख्य। थूली, सेव (पाटिया)।

**साग के टोकरा संख्या में १२५**—कासीफल सादा, कासीफल छीले बिना, बैंगन सादा, छीले भये, पैंठा सादा, छिले भये सेब २५-२५ टोकरा, भाजी, पतरे साग, अरई, रतालू, सकरकन्द, अरबी, कमरख, कंद, सूरण, रतालू, सकरकन्द,

**कचरिया ८ प्रकार की**—भिंडी, तोरई, ग्वांर फली, कचोल (खरवूजा) टेंटी। कचोरा गोल, करेला, कमल काचरी, कचरिया फीकी, बूंदी झारा की, मनोरम नीर के झारा की झीनी, गगल गांठिया, थपड़ी, सकलपारा, गोली, पान बड़ा, अनोला, पापड़ी, पाँच प्रकार के बड़ा, झीने सेव, बड़े सेब। पान बड़ा, दाख बड़ा, पोहा बड़ा, भुजेना उड़द मूंग के, मैंथी बड़ा, कान्ति बड़ा, तिल बड़ी, छेवरी, पेठा बड़ी, पापड़ ढाई हजार, बड़े मंगोड़ा एक हजार, केरी (अमिया), आद (अदरक) टेंटी, नीबू, लोण, आदा पाचरी, पीपर, मिरची, माखन मिसरी। छाछ चपटिया चौंसठ प्रकार की (आठ बड़ा मगोड़ा) बूंदी, सेव पकोड़ी बड़ी १६-१६ चपटिया। भाजी सब प्रकार की मैंथी, सूवा, पालक्या, लूणीयादि।

भोग सरे तब—भोजन करि उठे दोऊ भैया ; बीडी नवल ले आई ; अब छाडो चरण कमल महिमा मैं जानी । राज सन्मुख—व्रजजन लोचन ही को तारों । उत्थापन—जय जय लाल गोवर्धन धारी । भोग में—कहियों मेरे वारे कान्ह कैसे को । आरती में—आज कछु वदन अम्बर छायो । शयन में—कान्ह कुँवर के कर पल्लव पर । मान पौढवे के—वे देखो बरत झरोखन दीपक ।

**विशेषता—**

आसकरणदास जी को पद जब राजभोग में तिलक होय तब गवे—

आज द्वेज भैया की कहियत कर लिये कंचन थाल के ।
करो तिलक तुम बहिन सुभद्रा बल अरु श्री गोपाल के ।
आरती करत देत नौछावर वारत मुक्ता माल के ।
आसकरण प्रभु मोहन नागर प्रेम कुञ्ज व्रज बालके ।

आज यम द्वितीया को अपराह्न में युग्म बहन श्री यमुना, भाई श्रीयम दोनों प्रकटे तासो यम द्वितीया में भाई को बहिन जिमावत है । भाई को तिलक कर पूजन करत है । आरती करत है । ऐसो करिवेसे भाई सुख समृद्धी सो युक्त होय तथा बहिन भी मनोभिलषित फल प्राप्त करत है । जो भाई की पूजन करि जीमावे । आज के दिन नहीं जिमावे सो नरक गामी होय । सात जन्म भाई नहीं होय । यासे जिमानो चाहिये । "कार्तिके यमद्वितीया या शुक्लया मातृ पूजनम् यो न कुर्यात् विनश्यन्ति भ्रातरा सप्तजन्मनि । आदि अनेक पुराणन में वर्णन मिलै । है । ताही सो राजभोग में तिलक होय । भोग आवे बहिन की आड़ी सो । एक दम छोटो श्रृंगार होय है । प्रभुनन्द राजकुमार कहत है—मोको रात को भील लूट ले गये । आदि कथा कही जाय है ।

कार्तिक शुक्ला ३—श्रृंगार वस्त्र ऐच्छिक छोटो श्रृंगार एच्छिक घेरदार को घेरदार वागा धरे सासनी जरी के लाल ठाडे वस्त्र गोल चन्द्रिका आभरण गुलाबी मीना के लिये पद इन्द्रमान भंग के होय । खण्ड पाट वस्त्र जैसे यम द्वितीया के । आज गोवर्धन धारण कियो आज सो सात दिन अक्षय नवमी तक वर्षा अधिक जेवनार में भई तासो ।

कार्तिक शुक्ला ४ श्रृंगार ऐच्छिक—वागा चाकदार गुलाबी जरीके धरे श्री मस्तक पे पगा धरें । तथा मध्य को श्रृंगार और शिखा ठाडे वस्त्र श्याम सोना के आभरण । पद इन्द्रमान भंग के खण्ड पाट वस्त्र जैसे ।

कार्तिक शुक्ला ५—श्रृंगार ऐच्छिक परन्तु टिपारा धरें । पिछवाई चितराम की । वस्त्र चाकदार वागा श्री मस्तक पर टिपारा वनमाला को श्रृंगार कुण्डल चोटी आभरण जडाऊ धरें । पिछवाई गिरिराज धारे भये तथा ग्वाल-वाल गोपी उनकें



नन्द यशोदा घुघ्घी ओढे भये सब बरषा बरसती उपर चितराम की श्रीजी के बड़े मुखिया गंगादास जी साँचीहर वारी आवै ।

कार्तिक शुक्ला ६—श्रृंगार ऐच्छिक वस्त्र घेरदार वागा श्री मस्तक में पाग पीरी जरीके वस्त्र ठाड़े मेघश्याम आभरण हरे पन्ना मोती के छोटो श्रृंगार कतरा लूम को पद इन्द्रमान भंग के पिछवाई खण्ड वस्त्र जैसे ।

कार्तिक शुक्ला ७—श्रृंगार ऐच्छिक वस्त्र लालजरी के चाकदार धरे । मोर चन्द्रिका फेंटा को श्रृंगार होय पिछवाई खण्ड वस्त्र जैसे वाम भाग को कतराधरे मध्य को श्रृंगार ।

**इन्द्रमान भंग की विशेषताएँ—**

प्रश्न—क्योंजी गिरिराज पूजन होइ के अन्नकूट अरोग चुके बाद सन्मुख सो ही इन्द्रमान भंग के पद होय है वे आज के दिना ताई ही क्यों होय है ।

उत्तर—अन्नकूट अरोगे अरु इन्द्र पूजा न होइके गोवर्धन पूजा भई तासो ता समय सोही इन्द्रमान भंग के पद होय है । इन्द्र को तो मान मर्दन हेही गयो जब गिरिराज पूजा भई । यासोही गावे अरु सात दिन पर्यन्त ये पद होय हैं सो आज सात दिन पूरे होत है ।

श्री गोवर्धनधर श्रीनाथजी को नामहूं इन्द्रदमन है तासो इन्द्रमानभंग के वैलक्षण्य भावसो अष्ट पद अष्ट छाप के या प्रकार है श्रीमद्भागवत इन्द्रमानभंग ।

कृष्णयोगानुभावंतं निशम्येन्द्रोतिविस्मितः
निस्तम्भोभ्रष्ट संकल्पः स्वान् मेघान् संन्यवारयत् ।१०-२५-२४।
गोवर्धने धृते शैल आसाराद् रक्षिते व्रजे ।
गोलोकाद व्रजत् कृष्णं सुरभिः शक्रएवच ॥
विविक्त उपसंगम्य व्रीडितः कृतहेलनः ।
पस्पर्शपादयोरेनं कीरीटेनार्कवर्चसा ॥
दृष्टश्रुतानु भावोस्य कृष्णस्यामिततेजसः ।
नष्ट त्रिलोकेशमद् इन्द्र आह कृताञ्जलिः ॥१०-२७-१-२-३

व्रजजन लोचनही को तारो ।
सुन यशुमति तेरोपूत सपूतो कुलदीपक उजियारो ।
धेंनु चरावन जात दूर जब होत भवन अतिभारो ।
घोष संजीवन पूत हमारो छिन इत उत जिन टारो ।
सातघोष गिरिराज धर्योकर सात बरस को बारो ।
गोविन्द प्रभु चिर जीवो रानी तेरो सुत गोपवंश रखवारो ।

—गोविन्दस्वामी

सुन्दर मुख निरखत ही नेन चेन पावत अति गोपी ग्वाल आंखन को तारो।
रूप की निधि काम की सिधी जानत प्रेम की विधि धेनु सेन साज गृह आवत सवारो।
छीतस्वामि गिरिवर धर अपने कर कोमलतर राख लियो गोवर्धन वारो।

—छीतस्वामि

जय जय लाल गोबर्धन धारी इन्द्रमानभंग कीनो।
वामभुजा राख्यो गिरिनायक भक्तन को सुखदीनो।
सातद्यौस मधवा पचिहार्यो गोसुतश्रृंग न भीनो।
कृष्णदास गिरधर पिय आगे आन पर्यो वलहीनो।

—कृष्णदास

अब न छांड़ो चरण कमल महिमा मैं जानी।
सुरपति मेरो नामधर्यो लोक अभिमानी।
अबलों मैं नहि जानत ठाकुर है कोई।
गोपी ग्वाल राखलिये मेरी पति खोई।
एरावत कामधेनु गंगाजल आनी।
हरिको अभिषेक कियो जयजय सुरवानी।
वारंवार प्रणाम करत गोवर्धनधारी।
परमानन्द गोप भेष लीला अवतारी।

—परमानन्द

जय जयति हरिदास वर्य धरणे।
वारि वृष्टी निवारघोष आरति टारि देवपतिमान भंग करणे।
जयति पटपीत दामिनी रुचिर वर मृदुल अंग सजल जलद बरणे।
कर अधर वेणु गान कलरव शब्द सहज व्रज युवति जन चित हरणे।
जयति वृन्दाविपिन भूमिडोलन अखिल लोक वंदन अम्बु असित चरणे।
तरणितनया निकट विहार नन्द गोपकुंवर कहत कुम्भन दास त्वमसि शरणे।

—कुम्भनदास

जय जयति गोवर्धन उद्धरण धीरे।
वृष्टि दुस्तर तरण ब्रज कुल अभयकरण देव पति दर्पहरण शामल शरीरे।
जयति वारिज वदन रूप लाबण्य सदन शिर श्रीखण्ड चन्द कटिपट सुमीरे।
मुरलिकान व्रजयुति मन आकर्ष संगविहरत सुभग यमुना तीरे।
जयति रसरासमुविलाश वृन्दाविपिन सकल सुखपुञ्ज मलयज समीरे।
चत्रभुज दास गोपाल नटवेष सोई राधिकाकन्त सब गुण गम्भीरे।

—चत्रभुजदास

साँवरे हो बलि गई इन भुजन की।
क्यों गिरि सुवल धर्यो कर कोमल बूझत हों गति तनकी।
इन्द्र रिसाई वरस्यो व्रज उपर तेहू ते हरि हारे।
भेटत ग्वाल कहत हंसिमैयातें हमें भले उबारे।
हरद दूब अक्षत दधि कुंकुम हरख यशोदा लाई।
कर सिर तिलक चरणरज वंदित मानो रंक निधि पाई।
परसे चरण कमल ब्रज सुन्दरि हरख हरख मुसकाई।
फिरि फिरि दरसन करत याहि मिस मदन की प्रीति दुराई।
सूरदास सुरपति जिय कम्पित सुरभी संग ले आयो।
तुम दयालु अवगत अविनासी में कछु मरम न पायो। —सूरदास

कान्ह कुंवर के कर पल्लव पर मानो गोवर्धन नृत्य करें।
ज्यों ज्यों तान उठत मुरली में त्यों त्यौं प्यारो अधर धरे।
मेघ मृदंग बजावत दामिनी दमक मानो दीप जरें।
ग्वाल ताल दे नीके गावत गायन के संग सुर जु भरें।
देत अशीश सकल गोपीजन वर्षा को जल अमित झरें।
अति अद्‌भुत अवसर गिरधर को नन्ददास के दुख जु हरें। —नन्ददास

लाल आज देखो गिरि कैसे धर्यो कर।
एक कर कटिधर दूजे पर कर गिरि सब व्रज कुल राख्यो अपनी छाय तर।
पीतपट फहरात है धेन रूप निरखत है हरखत है वार बार भुजन की लटक पर।
कबहुक मुरली कर धरत कमल मुख पिचपिच गावत लेत सप्तस्वर।
सुरराज हार मानी लायो है गंगाजल पानी हरि कों न्हवाय गाय सुरभी भेट धर
नन्ददास प्रभु के सुन्दर बदन पर वारत आरती माय नेनन नीर ढर।

—नन्ददास

गौ श्रृंगार दिवाली के पूर्वं कार्तिक कृष्ण १० सों पद गान होय गो क्रीड़ा भोजन के पद यहां दो या प्रकार के है।

(राग सारंग)

श्याम खिरक के द्वारे करावत गायन को श्रृंगार।
नाना भांति सींग मण्डित किये ग्रीवा मेले हार।
घण्टा कण्ठ मोतिन की पटिया पीठन कों आछे ओछार।
किंकिणी नूपुर चरण विराजत बाजत चलत सुढार।
यह विधि सब ब्रज गाय सिंगारी शोभा बढी अपार।
परमानन्द प्रभु धेनु खिलावत पहरावत सब ग्वार।

**गौअन को भोजन करावते प्रभु :—**

सब गायन में धूमर खेली ।
श्रवण पूँछ उचकाय सीधी ह्वे ग्वाल भजावत फिरत अकेली ।
पकरि लई गोपाल आप ही कंठ बनावत सेली ।
चुंमत मुख आँको भरि भेटी टेर कहत लावो गुर भेली ।
आप गोपाल खिलाय खवावत गायन को भेली ।
परमानन्द देखे बनि आवे जब धोरी की वछिया मेली ।

## गोपाष्टमी कार्तिक शुक्ला ८

गोपाष्टमी को उत्सव देहली वन्दन माल हाँडी अभ्यंग पिछवाई गायन की श्याम धरती में मोती सिलमा सितारा की । चोकड़ीन में गायें पीताम्बंरलाल दर्याइ को सूथन केशरी जरी को काछनी हरी, लाल जरी की चोली मेघश्याम मुकुट जड़ाऊ श्रृंगार । उत्सव के आभरण पन्ना, मोती, माणक जड़ाऊ ठाड़े वस्त्र सुफेद वनमाला को श्रृंगार कुण्डल जड़ाऊ आज सो चार दिन की नौबत की वधाई बैठे ।

आज मुकुट को छेलो श्रृंगार होय है शीतकाल में मानादि लीला होय है । रास नहीं । तासो मुकुट जादा गरमी जादा शीत में नहीं धरें ।

आज आरती में लकुट धरें गाय घेरन के भाव सों । पद—मंगला सन्मुख—प्रथम गौचारण को दिन आज । श्रृंगार होते में—गोविन्द चले चरावन गैया । चले हरि वच्छ चरावन आज । श्रृंगार सन्मुख—प्रथम गौचारण चले री कन्हाई । राज भोग आये पैं—छाक—गौचारण के भाव की ।

(१) भावत है वन वन की डोलन (३) भयो मध्यान्ह छाक की बिरियाँ ।
(२) अकेली वन वन डौलि रही (४) छाक को भई अबार आई नहि छर्कहारी ।

राजभोग सरे पे—मैया गाय चरावन जैहो । बीड़ी के । राज० सन्मु०—गोपाल माई चलत देखियत नीके । भोग में—आगे गाय पाछे गाय इत गाय । आरती—लटकत चलत युवति सुखदानी । शयन में—धेनु को ध्यान मेरे निश दिना री । मा० पो०—बोलत कान्ह नागर वेन । पोढ़िये घनश्याम बलैया लेहो ।

## उत्सव की विशेषता

नन्दराज कुमार जब पाँच वर्ष के भये तब आज के दिन प्रथम ही गौचारण करिवे पधारे, तासों यह उत्सव गोपाष्टमी कही गई । गोप गण गायन की अष्टाङ्ग योग सो सेवा करत है तासो आठम तिथी को गौ पूजन करिके गाय चरावन पधारें ।



पुष्टि मार्ग ही एक ऐसो मार्ग है जामें गौ पालन गौ लालन गौ क्रीडन गौ संवर्धन होय है । प्रभु के सम गायन की सेवा होय है ताके कई पद हू गावें हैं । तथा प्रभु नन्दराज कुमार की समस्त जीवन क्रीयाहू गौ चारण में भई । वही गौ लीला सों आपको नाम हू गोपाल भयो । जगद्गुरू वल्लभ महाप्रभू ने सर्व प्रथम छल्ला बेचिके गाय मगाय प्रभु सेवा में राखी तथा अनेक गायन को पालन आज हू होय है । सर्वप्रथम गाय के दूध अरोग के ही आपकी ऊर्ध्व भुजा प्रकटी ।

प्रभु स्वरूप गाय ही है याके पुराणन में तथा भागवत में कई वर्णन मिले है वे यहाँ हू उधृत करें है । कछुक—

"गौर्भूत्वाश्रुमुखि खिन्ना क्रन्दति करुणं विभो" १०-१-१८

जब पृथ्वी भार भूत भई तब गौ रूप धरि बैकुण्ठादि लोक सों देवतान कों लेई प्रभु पास पहुँची ।

गाय में प्रभु विराजें ताको वर्णन कितने स्थान न में प्रभु श्री कृष्ण हैं । ये दैत्य लोग अपनी सभा में या प्रकार बर्णन करें ।

विप्रा गावश्च वेदाश्च तपः सत्यंदमः शमः ।
श्रद्धा दया तितिक्षाच क्रतवश्च हरेस्तनुः ।। १०-४-४१

प्रभु प्राकट्य में सबसों पहले गायें सिनगारी गई काय कों; गोपाल जो पधारे ।

गावो वृषा वत्सतरा हरिद्रा तैल रूषिताः ।
विचित्र धातु वर्हस्रग् वस्त्र काँचन मालिनः ।। १०-५-७

जब छोटेपन में ही पूतना आई तबहू गौ माता सो ही रक्षा माँगी ।

गौ मूत्रेण स्नापयित्वा पुनर्गो रजसार्भकम् ।
रक्षा चक्रुश्च सकृता द्वादशाङ्गेषु नामभिः ।। १०-६-२०

संस्कारन में भी गौ को ही स्थान—

अलक्षितोस्मिन् रहसि मामकैरपिगो व्रजे ।
कुरु द्विजाति संस्काराः स्वस्ति वाचन पूर्वकम् ।। १०-८-१०

खेलन में भी गौ पूंछ सो क्रीड़ा—

अन्तर्व्रजे तदवला प्रगृहीत पुच्छैः । १०-८-२४

वाल लीला में "वत्सान् मुञ्चन् क्वचिदसमये क्रोष संजात हासः"

पौगण्ड लीला में—ततश्च पौगण्ड वयश्रितौ व्रजे बभूवतुस्तौ पशुपाल सम्मतौ ।

गाश्चारयन्तौ सखिभिस्समं पदैर्वृन्दावनंपुण्यमतीव चक्रतुः ।

कुमार लीला में—अविदूरे व्रज भुवः सह गोपाल दारकैः ।
चारयामासतुर्वत्सान् नाना क्रीड़परिच्छदैः ।।

किशोर लीला में—

क्वचित् वनाशाय मनोदधे ब्रजात् प्रातः समुत्थाय वयस्यवत्सपान् ।
प्रवोधयन् शृंग रवेण चारुणा विनिर्गतो वत्स पुरस्सरै हरेः ।

ये ही भावन सो गायन के विना प्रभु एक क्षण नाहि रहै । अष्टयाम में गायन की सेवा वहुत प्रकार वर्णित है । भोजन करते में हू मंगल भोग में या प्रकार लीला वर्णन है ।

पिछवारे ह्वै बोल सुनायो ।
अरी मैया इक व्याई गैया कोर न मुख लौ आयो ।
कमल नयन हरि करत कलेऊ बछरा वहाँ बिसरायो ।
मुरली न लई लकुट हू न लीनो अरवराय कोऊ सखा न बुलायो ।
चकत भई नन्द जु की रानी सत्य यह कैधो सुपनो आयो ।
परमानन्द सयानी ग्वालन उलटि अंग गिरधर पिय पायो ।
वन सों लौट के आवे को सरूप या प्रकार छीत स्वामी वर्णत हैं :—
आगे गाय पाछे गाय इत गाय उत गाय गोविन्द को गायन में बसिवो भावे ।
गायन संग धाये गायन में सचु पाने गायन की खुर रेनु अंग लपटावे ।।
गायन सो ब्रज छायो वैकुण्ठ हू बिसरायो गायन के हेतु गिरि ले उठावे ।
छीत स्वामि गिरधारी विट्ठलेश वपु धारि ग्वारिया को भेष धरे गायन में आवे ।।

## माँ बेटा की बातचीत—

मैया मैं कैसी गाय चराई ।
बूझ देखि वलभद्र ददा सों कैसी टेरि बुलाई ।
विडरि चली सघन वन महियाँ हेरी दे ठहराई ।
ग्वालन के लरिका पचिहारे वे सब मेरी दाँई ।
भलो भलो कहि महरि हँसत है फूली अंग न समाई ।
परमानन्द प्रभु बीर वचन सुन जसुमति देत बधाई ।

सखियन के संग महारानी यशोदा जी की बातचीत कन्हैया को गौ प्रेम—

धेनुन को ध्यान निशदिन री मेरे मोहन को,
सपने में कहत गौरी गायन आई ।
आनन उजियारी मनवारी हों सभार लई,
वा बिन न आऊँ मोहि बाबा की दुहाई ।

कजरारी कण्ठवारी मखतूल फुन्दना वारी,
झाँझरी झमक प्यारी मो मन भाई ।
हरिनारायण श्यामदास के प्रभु देखे हों तो,
छकि रही चिर जीवो री कुँवर कन्हाई ।

आज शयन में कुल्हे धरे चाकदार बागा मेघश्याम धरै कर्णफूल के शृंगार मध्य के होय ।

**प्रश्न**—और घरन में आज के दिन कुनवारा अरोगे श्रीजी में क्यों नही होय ?

**उत्तर**—दान एकादशी शरद पूनम एवं आज गोपाष्टमी ये तीन उत्सव अवतार लीला के होय सो श्रीजी में कुनवारो नहीं होय ये तीनो लीला नित्य हैं । नित्य रास गौलोक में होय है। ब्रज में नित्य दान मांगतै है । तथा नित्य ही गौचारण लीला करत है तासो ये कुनवारा तो उत्सवांग ब्रज भक्त वरसाने में पधराय के अरोगावै हैं ।

**प्रश्न**—तो फेर ओर घरन में क्यों होय है ?

**उत्तर**—और घर नन्दालय के है नन्दराजकुमार को जब तिलक करि गौ चारण को भेजे तब सव ग्वाल-बालनके साथ अरोगाय छाक संग बाँधि पठाये तासो ही पदन में हूँ गाये है ।

गोविन्द चले चरावन गैया ।
हरखि हरखि कहे आजु भलो दिन कहत जसोदा मैया ।
उबटिन्हवाय वसन भूषण सजि विप्रन देत बधैया ।
करिशिर तिलक आरतों वारत फिर फिर लेत वलैया ।
चत्रभुजदास छाक छींकन सजि सखन सहित बल भैया ।
गिरधर गमन देखि अंक भरि मूख चूम्यो नन्दरैया ।

ताही सो आज छेलो मुकुट हू धरै है। ये नित्य लीला होवे सो उत्सवाङ्ग आज मुकुट के बाद कुल्हे धरें । आज सो आठहु समय में गौ चारण के तीन दिना तक होय है ।

**प्रश्न**—क्योंजी आप उपर कहि आये कि ये लीला नित्य है । फेरि तीन दिन ही गोचारण के पद क्यों होय ?

**उत्तर**—पुष्टि मार्ग में समस्त शास्त्रोक्त पर्वन को प्रभुरस लीला में परिणत करिके प्रभुसुख को पूर्ण ध्यान राखिकै सेवाक्रम कीर्तन भोग राग शृंगारन की परिपाटी राखी जो तत् तत् रितु में तत् तत् सामग्री तत् तत् राग जो लिख आये हैं

तासों तीन लोकन की गौमातान को आपने चराई अरु वह तीन दिना उत्सवाङ्ग भूत पद गान राखे तीन लोक पवित्र करन हेतु अथवा त्रिगुणात्मिका गौअन को तीन भावना सो चरावन हेतु तीन दिन ही यह गान होय है ।

जब तक सुखेन गौमाता नहीं अरोगे बिराजे तब तक श्रीनाथ जी राजभोग नहीं अरोगें तासो ग्वाल बोले बाद गोपीवल्लभ सर चुके तब गौशाला को मुखिया आयके दर्शन करि श्रीजी सो बीनती करत है गौमाता सुखेन विराजत है तब राज भोग आवै है तथा प्रति उत्सव महोत्सव में थूली अरोगावै है ।

यासो वर्तमान तिलकायत श्री गोविन्दलाल जी महाराज ने नाथूवास में नवनीत पधराय मनोरथ कियो तासों विशद वर्णन अरोगवे को न लिख के यहाँ संक्षेप में वर्णन कियो है ।

## अक्षय नवमी कार्तिक शुक्ला नवमी

शृंगार सब अन्नकूट वत् चोखटा नहीं । पीत पिछोरी (ऊर्ध्व भुजा दर्याई को) नहीं । कंदरासो निकसमा गद्दर नहीं । वाकी सब अन्नकूटवत् पिछवाई चितराम की। बड़ी गायन वारी ये पिछवाई आज छैली आवे चितराम की । अब महोत्सव पे आवेगी । आज भोग आरती में तुलसी की बड़ी गोवर्धन माला धरें । आज पेठा की सामग्री विशेष में अरोगे । यदि कार्तिक कृष्ण ३० को ग्रहण होय तो आज अन्नकूट होय । गोपाष्टमी के दिन पुनः कान जगाई होय । नवनीत पधार के श्रीजी की गोद में विराजे । शृंगार गोपाष्टमी को ही रहे आज अन्नकूट वत् सारी सेवा होय । आज त्रेता युगारम्भ दिवस होवे सो पेठा की सामग्री तथा पेठा को दानादि होय ।

आज के पद या प्रकार होय मंगला—प्रथम गौ चारण चलेरी कन्हाई । शृंगार होते में—गोपाल आज कानन चले सकारे । शृंगार सन्मुख—सुनरी सेन दई ग्वालन को । रा० आ० छाक वीरी आचमन के । रा० सन्मुख—सोहत लाल लकुट कर लीने । भोग में—आवत बने कान्ह गोपबालक संग धोरी धूमर पीयरी कारी । संध्यार्ति—नन्दनन्दन नवल नागर । शयन में—केसे के गाय चराई बात कहो मोसों बन की । पोढवे में—आँगन में हरि सोय गयो री ।

कार्तिक शुक्ला १०—वस्त्र लाल जरीके घेरदार वागा ठाडे वस्त्र पीरे मोर चन्द्रिका सादा पाग जरी की आभरण पन्ना मोती के कर्णफूल को शृंगार छोटो । पिछवाई लाल धरती में सिलमा सितारा की गायें चौकडीवारी कमल भाँत चारो दिश गाये । ऐसो ही खण्ड आज के पद में होय ।

(१) कोन बन जेहो भैया आज ।
(२) आज अति आनन्दे ब्रजवासी ।
(३) हेरी देत चले ब्रज बालक ।
(४) फूले ब्रज जन अंग न समात ।
(५) गोधन चारत मदनगोपाल ।
(६) गावत चले बजावत तारी ।
(७) नन्द को लाल चले गौ चारण ।
(८) घेरो लाल अपनी गैया ।



आज सवा लक्ष दल तुलसी के धराय के बन्द । आज सो शीतकालिक पड़दादि । सामग्री में हू शीतकालिक भोगादि आवें । जैसे गुड, कस्तूरी, मिश्रित समस्त वस्तु एवं कंद चटनी, रतालू की पिण्डखजूरादि मेवा धरें ।

**देव प्रबोधिनी हरि प्रबोधिनी कार्तिक शुक्ला ११**—आज देहली सफेद खडी सों मड़े । वंदनमाल हाँडी अभ्यंग होय आतमसुख आज सो डोलोत्सव तक धरें । आज पिछवाई खण्ड सफेद जरी की काट चोपकी । साज सब सोना को जडाऊ तकिया गादी शय्यादि वस्त्र सुनहरी जरी फरकसाई के वागाचाकदार । सूथन ठाडे वस्त्र मेघश्याम चोखटा जड़ाऊ कुल्हे हीरा को जोड़ मयूर पक्ष पांच को शृंगार उत्सव को बनमाला को कुण्डलहांस लवल आदि जडाऊ मोजा धरें देवप्रबोधिनीसवेर होय तो सूर्योदय के पहले मण्डप में बिराजे यदि सायं होय तो सूर्यास्त के बाद मण्डप में विराजे सवेर होय तो शृंगार में विराजे सांझ को होयतो ग्वाल अरोगके विराजे पद या प्रकार महाम्त्य के ही गवें मंगला में—गोविन्द तिहारो सरूप निगम नेति नेति। अभ्यंग के छ तथा महात्म्य के छ पद गवे ।

शृंगार सन्मुख में सुभग शृंगार निरख मोहन को । राजभोग आये पै छाक वीरी के अचवन के । राजभोग सन्मुख अरी जाको वेद रटत ब्रह्मा रटत । उत्थापन में जो रसरसिक कीर मुनि गायो । भोग में पद्मधर्यो जन ताप निवारण, बाहर प्रलयपयोधि जले । आरती में मोहननन्द राजकुमार । वन्देधरन गिरिवर भूप । शयन सम्मुख—चरण कमल बन्दो जगदीश । मण्डप में—देवदिवारी शुभ एकादशी जागे जगजीवन जगन्नाथ । छेल्लीतुक तुलसी पूजन में भीतर मणिकोठा में जायके पूरी होय धनधन माता तुलसी वडी ।

## प्रबोधिनी की विशेषताएँ

"एकादश्यां निराहारः समभ्यर्च्य जनार्दनः" श्रीमद्भागवत १०-२८-१

कार्तिक सुद एकादशी शुभदिन इक्षु से कुञ्ज बनावे ।
पाट सुरंग बसन पहिरावे परम प्रमोद मनावे ॥ (हरिराय उत्सव पद)

प्रश्न—सर्वत्र कार्तिक मास स्नान करें तथा चातुर्मास्य हू ताको कहा आशय जब "मासानां मार्गशीर्षोऽहं" कह्यो गयो है फेर या कार्त्तिक में कहा विशेषता ।

उत्तर—एक समय की वात है शंखासुर नामक अति बलवान राक्षस हुतो । ताने समस्त पृथ्वी तथा देवतान को जीत लीने अरु सबन को स्वर्गसो निकारि दीये तापर भी वाये सन्तोष न भयो वाने देवतान को बल वेदशास्त्र मानि कै वेदन को हरण करिवे उद्यत भयो अरु ब्रह्मलोक में ब्रह्मा के पास गयो वा समय चातुर्मास्यहतो भगवान् शयन करत हुते । शेषशायी के समक्ष वेदन ने अपनो आधिदैविक सरूप जल में प्रवेश कर दियो असुर समुद्र में पहुँच्यो पर वाय वेद प्राप्त न भये । यहां वेद

बिना देवता लोग घबराय के शेषशायी प्रभु के सम्मुख पहुँचे अरू अनेकविधिसो स्तुती कीनी तब प्रभु प्रसन्न होइ आज्ञा किये तुम लोग आश्विन शुक्ला एकादशीसो लेके कार्तिक शुक्ला एकादशी पर्यन्त रात्री के चतुर्थभाग में स्नान गीत वाद्य मंगलध्वनि सों करिके स्नान तप दान साधना करोगे तो में शंखासुर को वधकरि वेद निकारि के लाऊँगो जो या मास में स्नान दान करेंगे तिनसों मैं प्रसन्न होऊँगो ।

"हरि जागरणं प्रातः स्नानं तुलसी सेवनं ।

उद्यापनं दीपदानं व्रतान्येतानि कार्तिके ॥१॥"

एकादशी कों हरि मंदिर में जागरण करनो चाहिए । प्रभु को सब देवतान ने जगाये तासों प्रबोधिनी एकादशी कही गई । पुष्टि मार्ग में समस्त शास्त्र सम्मत व्रत त्यौहार प्रभु सुखार्थ लीला निहित करि विविध प्रकार सों साहित्य संगीत कलादि सों प्रभु को रिझाये हैं । भक्तगण अपने घर पे सब कुछ लौकिक अलौकिक समर्पण कर देत हैं ।

जा समय देवोत्थापन होय तो वो मण्डप डोलतिवारी में माड़ें । प्रातः होय तो मंगला के दर्शन भीतर ही होय । यदि सायंकाल होय तो उत्थापन भोग सन्ध्यार्ति भीतर ही होय । मण्डप सुवासिनी बहू बेटियाँ माड़ें । ताय कोंडी कहत हैं । या कोंडी में एक चौक बीच में तथा आठ अगल बगल चोक होय है । एक एक सों मिले होय है । ये नौ चोक की कोंडी होय है, जामें चार चार डोरन सों बाँधी भई होय है यह सफेद खड़ी सों माँड़े हैं तथा उनमें सब प्रकार के रंग भरें । वे रंग या प्रकार भरे जायँ जिनसो सफेद डोरहू दीखती रहे । उनके चारों दिस आयुध चार हू माँड़ें शंख, चक्र, गदा, पद्म । तथा शंखोलिया उपर बेल तथा डोरन पै माँड़े है । बीच के चौक में स्वस्तिक तथा और आठ चौकन में विविध कलात्मक ढंग सो परम्परा गत विधि सोही माँड़े है । फेर उनपे ईख ( साँटा ) सोलह - सोलह तथा आठ-आठ चार - चार राखिके मण्डप बनावें वो ईख पत्तान सहित पूरे चारों दिश रहे बीच सों दर्शन होय है । उनके बीच हरे बाँस एक एक धरत है, तामें तीन तीन डोरी सों उन सांटान को बाँधि के उपर सबन को सामूहिक बाँधत है । दीपक आठ—चार पीछे चार कोनान में ताको आशय अष्टयाम अष्ट मूलरस उद्दीपन हेतु धरें । चारों दिशान में दीपक चारों प्रकट करि धरें तथा प्रभु विराजे ताके पीछे हू चार दीपकन की तथा अनेक दीपकन की पंक्ति करें हैं ।

चारों दिश बाँस की टोकरीन में कच्चे फल धरें । साटां के टूंक, सकरकन्दी, बोर छोटे, सिंघाड़े, चणा की हरी भाजी तथा बैंगन धरें हैं । फेरि झालर, घंटा,



शंख ध्वनी के साथ बालकृष्ण जी चरण चौकी की गादी पै विराजि के सम्पुट में पधारें । अरु दक्षिण मुख श्रीजी की आडी विराजे । फेर तीन बेर श्लोक पढ़ि प्रभू को प्रवोध करावें है । फेरि पंञ्चामृत होय है । तिलक होय संकल्प करि तुलसी सर्मापि दूध, दही, बूरा, सहत, घृत पुनः शुद्ध जल सों अभ्यंग होय । चन्दन सों स्नान करि विराजें, फेरि गद्दर उठावें है । अन्य घरन में भी भोग आवें है । यहाँ श्रीजी के सम्मुख जाय श्रीजी को गद्दल धरें, मोजा धरें, शीत की भीत सों अंगीठी आवें । फेर उत्सव भोग आवें ।

श्लोक या प्रकार बोलें हैं—

उत्तिष्ठोतिष्ठ गोविन्द त्यज निद्रां जगतत्पते ।

त्वय्युत्थिते जगन्नाथ ह्युत्थितं भुवन त्रयम् ॥ १ ॥

त्वयि सुप्ते जगन्नाथ जगत्सुप्तं भवेदिदम् ।

उत्थिते चेष्टते सर्वमुतिष्ठोतिष्ठ माधव ॥ २ ॥

## विशेषता तथा भावना

**प्रश्न**—सफेद खड़ी सों कोडी क्यों माड़ें तथा रंग क्यों भरें । चार-चार डोर तथा नौखण्ड ही क्यों ? कोंडी क्यों कही ? मण्डप क्यों न कह्यो ।

**उत्तर**—नवधा भक्ति के नौ चौक हैं तथा यश स्वरूप सुभ्र सुधाविर्भाव हेतु खडी सों माँढ़ें । चार डोर चार यूथाधिपान के भाव सों । एक-एक सों मिलके नवधा भक्ति प्रभु प्राप्ति उन यूथाधिपान की कृपा से करें । रंगविरंगे भक्त तथा विविध प्रकार की गोपियाँ ही अनेंक रंग सों माँड़े हैं । उनके वक्षस्थल पर प्रभु विराजें । कोंडी चारों तरफ सों गोलाकार होय सो कही गई । याके उपर शंखोलिया शंखोसुर उद्धार को द्योतक है अथवा प्रभु कूँ शंख बहुत प्यारो है । सो शंखोलिया माँड़े । चार आयुध चतुर्व्यूह द्योतक है । कहूँ कहूँ मण्डप हू कहै हैं ।

**प्रश्न**—दक्षिण दिश डोल रथ हिंडोला तथा मण्डप मुख करिके क्यों विराजें ? तथा सेवा हू होय है ।

**उत्तर**—दक्षिण दिश में नरक को वर्णन मिलै है तासों दक्षिण स्थित जीवोद्धार हेतु उनको रसदानार्थ मुखारविन्द करिके विराजें ।

**प्रश्न**—साँटा को मण्डप क्यों होय है अरु वाय कुञ्ज कहैं—ताको आशय कहा है ?

**उत्तर**—गंडेरी (सांटा) रसमय है ताके सर्वाङ्ग में रस है। आज सों रसलीला मानादि लीलारंभ होय है। अरु सांटा के मध्य जो ग्रंथी है ताके खण्डिता की वक्रोक्ति आदि अनेक भाव हैं। दस इन्द्रियें एक मन पाँच तन्मात्रा या प्रकार षोडष ईख होय। अथवा एकादशाह मनसा हि वृत्तयः आकूतयः पंच धियोभिमानः। मात्राणि कर्माणिपरं च तासां वदन्ति एकादश वीर भूमिः। एकादश पे अरु पञ्चतन्मात्रा या प्रकार षोडष साटाँ आवैं।

अथवा नायक अरु नायिकान के आठ प्रकार के वर्णन मिलै हैं। वे अष्ट नायिका या प्रकार हैं। जहाँ आठ आठ आवें हैं वहाँ संयोग वियोगात्मक ये नायिका षोडश होय हैं।

"खण्डिता विप्रलब्धाच वासक सज्जाभिसारिका
कलहांतरिता चैव तथैवोत्कंठितापरा
स्वाधीनभृतृ का चैवे तथा प्रोषितभर्तृका
संभोगे विप्रलब्धाच इत्यष्टौ नायिका स्मृता

अथवा ये अष्ट नायिका रूप भक्त चारों दिश तथा पीछे चार दीपक रसोद्दीपन करैं। कच्चे फलन को संयोग करि आप परिपक्व करैं। तासों कच्चे फल धरैं भाव अंकुरित करैं अथवा मेघराग प्रभु रसदान में सहयोगी होय सुख सेवा करैं है। वे फल तथा उन रागन के स्वरूप या प्रकार अंगीकृत होय हैं।

**बेंगन, सकरकन्द, सिंघाड़ा, चणा की भाजी, छोटे बेर, सांटा के टूक**—

**बेंगन** (मेघराग)

श्याम वसन है मेघ को गहे हाथ कर वारि।
अति आतुर चातुर खरो गावत सुरत विचार॥

**सकरकन्द** (श्रीराग)

श्री पराग के कर कमल पुहुप रूप पटलाल।
बरस अठारह को तरुण गावत कण्ठ रसाल॥

**सिघांड़ा** (भेरों राग)

भेंरों शिव छवि शिर जटा स्वेत वसन त्रयनेत्र।
मुंडन की माला गरे सिंह रूप सुखएन॥

**चणा की भाजी** (मालकोष)

मालकोष नीले वसन स्वेत छरी लिये हाथ।
युवतीन की माला गरे सखी सकल है साथ॥



**छोटे बेर (झड़बेरिया) (दीपक राग)**

दीपक गज की पीठ पर बैठ्यो वागे लाल।
मुक्ता माल पहरे गरे चहू ओर सब बाल॥

**सांटा के टूंक (हिंडोल राग)**

पीत वसन हिंडोल के हेतु हिंडोला माँहि।
सखी झुलावे चाव सों गाय गाय मुसकाँहि॥

(नवमप्रकाश—संगीत चिंतामणि)

या प्रकार ये सब साकार रूप धरिकैं प्रभु सुखार्थ आवैं हैं। अरु इनकी स्त्री पुत्र पौत्रादि अनेक रागनी आदि विस्तारादि होय हैं। वे सब प्रभु सुख वर्धन करैं हैं।

**प्रश्न**—पंचामृत तथा देव उठायवे को कहा भाव है।

**उत्तर**—पंचामृत सों यहाँ प्रभु विषे निर्दोषता को भाव स्थित करैं है। अरु समुद्र सो उठत ही वेद विधी के स्थान में पञ्चामृत करैं है। अथवा विवाह स्थल हेतु मण्डप में प्रभु बिराजे तो मधुपर्कादि करैं है। देव उठायवे को आशय या प्रकार है कि प्रभु में निर्गुणता जो मानी ताये सगुणता सो त्रिगुण त्रिविध भक्त जगावैं।

**प्रश्न**—सब ठोर रतजगा-जागरण होय। यहाँ जागरण नहीं होय तथा चार भोग हू नहीं आवे—कारण ?

**उत्तर**—यहाँ गौ लोक लीला है तथा और स्थलन में नन्दालय की लीला है।

काका वल्लभ जी के वचनामृत में आज्ञा किये कि गोपीनाथ जी के बेटी जी षट्पदी विवाह में होते में विधवा है गईं। वालक हुती कछु समझी नहीं। तब नवनीत प्रिया जी की सेवा में लगाई अरु तन मन सों दिन रात सेवा करन लगी। तब एक दिन सेवा करत भोरी वेटी जी बोली—काका जी मेरी पठौनी कब होयगी। आचार्यश्री एवं परिवार भोलेपन तथा अंजान मान बहुत दुखी भये। अरु तादिन सों ये नवनीत प्रिया आदि घरन में विवाह की हल्दी के चार भोग आदि प्रारम्भ करि मनोरथ किये।

## विशेषता

गोपालदासहू वल्लभाख्यान में गाये है।
"लक्ष्मी सत्यभामा बेऊ अग्रज नी अनुहाररे।
श्री नवनीतप्रियाजी ने रीझव्या सेव्या विविध प्रकाररे।"

तासों श्रीनाथजी में जागरण नहीं होय है । नित्य क्रमवत् सेवा होय फेर पौढे है । उत्सव भोग आयवे में ये दोनों समय में जब मण्डप भोग आवे तब तुलसी पूजन अन्नकूट की रसोई में होय । तुलसी महाराणी के हू साँटा को मण्डप आवे तथा पूजन होय । यह पूजा बारह महीना में आज ही होय । तुलसी काहे कों महाराणी कही गईं ? इनकी उत्पत्ति कैसे है ?

**कथा**—स्कन्द पुराणान्तर्गत कार्तिक महात्म्य की एक कथा हैं । कश्मीर देश में हरिमेधा सुमेधा नामक दो ब्राह्मण हुते । हरिभक्ति में लग्न रहते । एक समय दोनों तीर्थयात्रा करन को चले । मारग में धूप के कारण थकि गए अरु निर्जन वन में एक तुलसी को खेत हुतो अरु पास में बरगद को वृक्ष हुतो । हरिमेधा ने तुलसी को प्रणाम कीनो तब सुमेधा बोल्यो भाई याको कहा महात्म्य है ? तब हरिमेधा वा बरगद के वृक्ष के नीचे बैठि महात्म्य कहन लाग्यो । "दुर्वासा के श्राप सों इन्द्र को एश्वर्य नष्ट भयो । तब देवता अरु दैत्यन नें मिलकें समुद्र मंथन कियो । तामें ते एरावत हाथी, कल्पवृक्ष चन्द्रमा, लक्ष्मी, उच्चश्रवा (घोड़ा) कौस्तुभमणी निकरी अरु धन्वन्तरी भगवान् अमृत कलश लेई चार भुजान सों क्रीट मुकुट धोती उपरना धारण किये कुण्डल हारादि सो युक्त होइके दोऊ श्रीहस्त में कलश एक में धातु चक्र एक में बनोषधी लेकर बड़े हर्ष भरे भए प्रकटे । सबन को श्रम सफल देखि असंख्य देवदानवन की जय-जयकार सो प्रसन्न होय जो आनन्दाश्रु पड़े वे कण अमृत कलस सो लगिके नीचे पड़ते ही तुलसी के बिरवा बनें । लक्ष्मी अरु तुलसी दोनोंको ब्रह्मा आदि देवतान की प्रार्थना सो प्रभु ने अंगीकार करी । तब तुलसी जगदीश्वर की पटराणी महाराणी बनी । भगवान को तुलसी अति प्रिय है । तासों ही विष्णु समान इनकी पूजा होय है ।"

यह कथा सुनत ही वह बरगद को वृक्ष नीचे गिरि गयो । तामेंतें एक पुरुष निकरि उन ब्राह्मण कुमारन की परिक्रमा देय अपनो परिचय दीनो । मेरो नाम आस्तीक है । मैं नन्दन वन में ललनान के साथ विहार करि रयो हुतो । मोती की माला उछरि के वहां के आश्रम में लोमस रिषी के गरे में परी अरु ललनान के द्वारा परी पर मोय श्राप दीनो । मैंने विनती कीनी । तब आज्ञा किये तुलसी महात्म्य जब तेरे नीचे कोऊ कहेगो तब तेरी वृक्ष योनि छूटेगी । आज ही कृतार्थ भयौ । तासो पुष्टिमार्ग में तुलसी को हू प्रभु सरूप मानि पूजा तथा विवाहरूप आज मण्डप में विराजे हैं । ता समय कृष्णदास जी को यह पद गावै हैं । यह पूजा प्रभुसंनिध में नाहि होय है ।



धनधन माता तुलसी । बद्री नारायण के चरणन चढ़ी ।।
जो कोऊ तुलसी की सेवा करे । कोटि पाप छिन में परिहरे ।
जो कोऊ तुलसी की फेरी देत । सहज जनम सफल कर लेत ।
दान पुन्य में तुलसी होय । कोटिक फल पावे नर सोय ।
जा घर तुलसी करे निवास । ता घर सदा विष्णु को वास ।
कृष्णदास कहें बारबार तुलसी की महिमा अपरंपार ।

आज सों शंखनाद प्रात: ४ बजे सो होन लगे है । आज जयन्तीन के पद या भाव सों होय है कि प्रभु को प्रबोध होत में प्राकट्य मान्यो है । ताको आशय शेष शैया से आप जागे । आज सो शीतकालिक सामग्री गुड रत्तालू चटनी पिण्ड खजूर आदि आवें । अष्टनायिकान के पद कहूँ कछू गवै । कछू नाहिन गवै ।

**स्वाधीन पतिका**—

हौं नीके जानत री आली तेरे हृदय की बात ।
गोविन्द प्रभु निधनी को धन पायो, तेनेही छिपायो ।
मोते दुरावत जो तू डारडार तो हौं पात पात ।

जाको पति रमि आवे बाय खंडिता जानिये । सुघर तिय कोन वाही वे उतारोंराइलौन । सूने घर जाई पछताई वि प्रलब्धासो । नैनन सेन चले दे कानन । परमानन्द गोविन्द चन्द निज वासर कलप भयो मोको अब । वासकसज्जा हेरे पंथ पिय को सेज ठानिये । लालन इतनी बार तुम कहाँजु रहे । सगरी रेन पंथ चाहत चाहत नेन दहे ।। सांझ जु आवत कहि गये लाल भोर भये देखे । चलि अभिसार मिले पिय सो मोद मानिये । प्यारी पग होरे होरे धरि जैसे तेरे नुपुर न बाजे । लरि पछितात कलहांतरिता सोई— जियकी न जानत हो पिय आप स्वारथ के गाहक । अरु प्रोसितपतिका है वियोगिनी बखानिये । चातक पिऊ-पिऊ बोलत । पिय गुपाल की सुरत आवत ताते मेरो मन डोलत ।

## कार्तिक शुक्ला १२ गुसाईंजी के ज्येष्ठ पुत्र गिरधरजी को उत्सव तथा पंचम पुत्र रघुनाथजी को उत्सव

देहली बन्दनमाल । हाँडी वस्त्र सुनहरी जरी के घेरदार वागा पटका चीरा श्री मस्तक पे । सूथन लाल जरी को । ठाडे वस्त्र पतंगी आभरण सब जडाऊ । उत्सव के सेहरा जड़ाऊ लूम मोती को तुर्रा दोनों आड़ी चोटी जेमनेदिश कुण्डल जडाऊ हाँस त्रवल । ये सब जडाऊ मोजा सुनहरी जरीके पिछवाई लाल धरती में विवाह की मोरछल करती गोपियाँ तथा संकेत वन के विवाह के भाव की नीचे ब्रह्मादि विवाह कराते भये ।

पद या प्रकार गवे मंगला—सन्मुख मंगल आरति गुपाल की। शृंगार होते में चार पद विवाह के। शृंगार सन्मुख—दिन दूल्हे मेरो कुवंर कन्हैया। ग्वाल में—गिरधर नाम आवे सो। राजभोग आये पै—श्री वृषभान सदन भोजन को मिल जेवत लाडले लाल भोजन करत भावते जिय के चल देख सखी विधि। अचवन के बीडी के—राजभोग सन्मुख में—सेवक की सुखरास सदा श्री। उत्थापन में—जुलिवर आवत है गठजोरे। भोग में—तू है बनरारे वन आयो भो मन। आरती में—वाह वसो मेरे नेनन में यह जोरी। आ० सन्मुख राधा प्यारी को दुलह लाल। शयन में—अरी चल दूल्हे देखन जाय। मान में—नहीं छूटे मोहना डोरना। पोढवे के—पोढे लाल लाडली संग।

**उत्सव नायक एवं उत्सव की विशेषता—**

आज के वस्त्र सब विट्ठलनाथजी के घर सो आवें। तथा शृंगार हू उनके घर के होय है। ये शृंगार मथुरेश जी वारेन को होत हुतो। ताको आशय नाथद्वारा सिहाड गाँव में श्रीनाथजी पधारे अरु दामोदरजी (दास जी) पधराय के लाये। ता समय श्री हरिराय जी हुते उनके कोई बालक भये नहीं। तासो इनके (दामोदर जी के) लालजी गोद लीने आगे इनके वंश में पूना में बड़े समारोह सो श्री नृसिंह लालजी को उत्सव मनायो गयो। उनके गादी में श्री कल्याणरायजी विराजे उनके यहाँ गिरधर जी आज के दिना भये। वह प्राकट्योत्सव के लिये गो. ति गोविन्द जी अपने तिलकायत पद सो भाई श्री गिरधरजी को प्राकट्य आज के दिन होवे सो ये शृंगार दीयो तब ये तथा इनके घर के शृंगारी भये।

आज बारह महीना में घेरदार पर सेहरा आज ही धरत है ताको आशय मथुरेशजी के यहां घेरदार पर सेहरा नहीं आये। कारण श्री गिरधर जी ने श्री मथुरेशजी के मुखारबिन्दु में जा दिन प्रवेश कीनो ता दिन घेरदार सेहरा हुतो सो वोही शृंगार श्रीजी में उनके उत्सव के दिन होय है।

आज के उत्सव नायक की बधाई तथा मंगला शयन के पद में उनके गुण लीला या प्रकार वर्णित कीनी तासों ही ये पद गवें।

**मंगला में**—मंगल आरती गुपाल की (चत्रभुज)

**शयन में पोढवे को पद—**

पोढे लाल लाडली संग।
नौतन सेज बनी अति सुन्दर विच-विच सोधे को पुट दें।
हों करि हो चरनन की सेवा जो मेरे मन नेनन अति सुख द्वै।



आपको जन्म वि० १७९७ आज के दिन भयो। श्रीद्वारकेशजी ने हू मूल पुरुष में गायो है।

पन्द्रह सो सताणू कार्तिक विमल द्वादशी मंगल नित ढिग।
प्रथम पुत्र प्रकटे श्री गिरधर षड्गुण धर्मी धर्म धुरन्दर। **(मूल पुरुष)**

इनके वहूजी श्री भामिनी जी जिनने घनश्यामजी सप्तम बाबा अपने देवर को लालन पालन कियो।

बहुरि पुत्र विठ्लेश गृह प्रकटे गिरधर लाल।
कार्तिक सुद बारस सुभग मुनि निधि ऋषिभाल।। **(सम्प्रदाय कल्पद्रुम)**

आपके तीन पुत्र भये। प्रथम श्री मुरलीधरजी दूसरे दामोदारजी तीसरे दीक्षित जी (गोपीनाथजी) भये।

**आपको जाती कर्म**

जातिकर्म करि वेद विधि श्री विट्ठलनाथ कृपाल।
नन्द महोत्सव नन्द सों भूपति कीन विशाल ।।१।।
षष्टी पूजन शुभ करी नाम कर्म पुनि कीन।
दुख दरिद्र हर द्विजन के भूपति मान प्रवीन ।।२।।
बहुरि आय गोपालपुर श्री विठ्ठल द्विजराय।
मुदित जु गिरधर लाल कों गिरधर पाय लगाय।। ३।। **(सम्प्रदाय कल्पद्रुम)**

आपको चौल-कर्म (मुण्डन)—१६०१ चैत्र शुक्ला ८ गोकुल में भयो। उपनयन (जनेऊ) १६०५ चैत्र शुक्ला ५ काशी में भयो। विवाह वि० १६१४ को काशी में भयो। प्रथम पुत्र १६३० मुरलीधरजी आश्विन शुक्ला १०। द्वितीय पुत्र १६३२ श्रावण शुक्ला १५। दामोदर जी तृतीय पुत्र १६३४ दीक्षितजी गोपीनाथजी। आपकी लीला प्रवेश गोकुल जतीपुरा में मथुरानाथजी के मुखारबिन्दु सन्मुख कन्दरा में (केचित् मुखारविन्द में कहे) १६७७ पोषकृष्णा द्वितीया को भयो।

**आपकी बैठकें**—(१) गोकुल में गुसाईंजी की बैठक के पास
(२) जत्तीपुरा में मथुरानाथजी के मन्दिर में
(३) कामेरी में गुफा में
(४) नरीसेमरी में

आप उद्भट विद्वान भये। कई ग्रंथ बनाये। आज ही रघुनाथजी श्री गुसाईंजी

प्रकट भये रघुनाथ फिर रुद्रकला व सुमान।
कार्तिक सुद बारस हि को विट्ठलेश गृह आन ।। (सम्प्रदाय कल्पद्रुम)

सोलह सो ग्यारस कार्तिक सित अर्क बुद्ध रघुनाथ श्री सहित। (मूलपुरुष) आपको उपनयन गोकुल में वि० १६२१ तथा विवाह १६२६ में भयो। आप चन्द्रमाजी के स्वरूपासक्त प्रधान आचार्य भये। आप षडैश्वर्य में श्री स्वरूप माने है आप पंचमकुमार होवे सों धर्मी प्राकट्य माने जैसे दशम स्कंध सुबोधिनी के तामस प्रकरण पीछे अरु फल प्रकरण श्री अरु दशमाध्याय के पीछे वैराग्य पीछे ज्ञान है—तैसे ही आप पाँचवे बालक है आप उद्भट विद्वान् तथा अन्तरंग भाव सरूप होवे सो आपके अनेक ग्रंथन में श्री गिरधर्याष्टक तथा गौकुलेशाष्टकादि अनेक सरस ग्रन्थ है। आपके बहूजी जानकी बहूजी हैं। आपने ही सन्त तुलसीदास जी को भगवान राम के रूप में दर्शन दिये।

गिरधर्याष्टक— त्रैलोक्य लक्ष्मी मृद भृत्सुरेश्वरो,
यदा धनैरन्तकरै ववर्ष:
तदा करोत् स्वबलेन रक्षणं,
तें गोपवालं गिरिधारिणंभजे ।।१।।

**कार्तिक शुक्ला १३**—शृंगार ऐच्छिक। घेरदार वागा लाल जरी को धरें। श्याम ठाडे वस्त्र। छोटो शृंगार। श्री मस्तक पर पाग कतरा जेमनी। पन्ना मोती के आभरण। पद नित्य के।

**कार्तिक शुक्ला १४ गोस्वामि तिलक श्री गोविन्दजी महाराज को उत्सव**—देहली वन्दनमाल वाराजलेवी की हाँडी। वस्त्र पीली खीन खाफ के चाकदार वागा सूथन मोजा लाल खीन खाफ के पिछवाई। पीरी खीन खाफ की लाल हासिया वारी कुल्हे माणक की जोड चमक को (घेरा बादला को) आभरण सब माणक मोती के चोटी जुगावली अनारदाना की कुण्डल पहुँची। ये सब माणक मोती के। पद ये होंय है।

मंगला—कुल्हे के भाव के ऐच्छिक। शृंगार में आसावरी के कुल्हे के भाव के। राजभोग सन्मुख वल्लभनन्दन रूप सरूप अनूपम रूप कह्यो नहि। भोग में—आज बने मनमोहन पिय। आरती—राखी हो अलक। शयन में—बारह महीना में आज ही एक शृंगार तथा पद होय वह शृंगार सवेरे वत् ही रहे। पर श्रीमस्तक पर पाग केशरी चन्द्रिका सादा आवे। अरु ये पद गवे—लाल बने रंग भीने गिरधरलाल। मान पोढ़वे के पद होय।

## उत्सव नायक परिचय एवं विशेषता

ये उत्सव नायक द्वितीय गृह श्री विट्ठलनाथ जी के घर के प्रधान आचार्य के पुत्र गो० श्री कृष्णराय जी हते। यहाँ श्री दुहेरा मनोरथ कर्ता दाऊ जी के लीला प्रवेश वाद चार वर्ष श्री लक्ष्मी बहूजी ने तिलकायत पद की सेवा करिके विक्रमाब्द १८८६ आषाढ़ शुक्ला ६ कौ गोद लीये। आपको जन्म वि० १८७७ आज के दिन भयो। जब आप कुमार भये तब वि० १८८६ में जनेऊ भयो। तथा विवाह बडोदा में १८९० में वैशाख शुक्ला ११ को भयो। वि० १८९२ कोटा पधारे अरु आपने अपनो सर्वस्व समर्पण करिके भी प्रभु के सुख में जीवन सम्पन्न कियो आप अपने कूँ स्वामिनी की सहचरी वत् मानते हते।

ताही सों आपने शयन दर्शन में विशेष उत्सव मनोरथ शृङ्गार कियो जो अद्यावधि दर्शन होय है। यह शृङ्गार पद एवं घटना के आधार पै भयो। साथ ही प्रभु श्रम निवारणार्थ वि० १८९७ में मैं लालबाग पधराय मनोरथ कियो। आपके ही पुत्र वीर शिरोमणि श्री गिरधारी जी १८९९ में जेष्ठ शुक्ला १३ को प्रकटे।

विचित्र घटना एवं प्रभु कृपा के साथ सेवा। आप जबसे गादी विराजे तब से श्री जी के भोग राग शृङ्गार सेवा विधी में कर्ज बढ़तो ही गयो। आपने सम्पूर्ण अपनी सम्पत्ति प्रभु विनियोग कर दीनी। तापर भी वम्बई के धन मदांधन ने श्रीनाथ जी की हुण्डी (जो लेन देन को व्यवस्था पत्र) बंद कर दीनी। ताते सात लाख को कर्ज है गयो। वि० १९९६ में शीतकाल के दिनन में श्रीजी के शयन भोग आते समय कृष्ण भण्डार के मुनीम को बुलायके छठी वारे कोठा में सारो आय-व्यय को हिसाब श्री प्रभु गोवर्धन धर श्रीनाथ जी कौ सुनाय दैन्य भाव सों अश्रुधारे छोड़ते प्रार्थना करी। भक्त कामना कल्पतरु भक्त की कातरता सहि न सके। अरु किशोर युवक को स्वरूप धरिके बम्बई में सात लाख हुण्डी के रुपैया चुकाय रसीद कृष्ण भण्डार में भेजी या श्रम को तथा श्रीनाथ जी की दयालुता देख स्त्री भावना सों वीनती कीनी कि मैं तो सोहनी, मंदिर-वस्त्र करिवे वारी सहचरी हूँ। प्राणनाथ जाने तो प्राणनाथ ने कर्ज चुकारा कियो। वाही समय माणक के दो लड़ा भेट करि बड़े धूम धाम सो लाल बाग में नवनीत पधराय विविध मनोरथ किये तथा श्री जी को लाड लडाये वो पद शयन में तथा मोर चन्द्रिका को शृंगार कियो सो पदन में लिखित है। नाथद्वारा के कीर्तनकार श्री मुखिया जी गोविन्द राम जी या प्रकार गावे है।

लाल बने रंग भीने। गिरधर लाल बने रंग भीने।
लाल बने रस भीने। आदि आदि

मोर चंद्रिका कौ पद—

लाल बने रंग भीने गिरधरलाल बने रस भीने ।
पिय के पाग केशरी सोहे, देखत रति पति को मन मोहे ।
ता पर एक चन्द्रिकाधारी, प्यारीजु अपने हाथ सँवारी ।
पिय के अरुण नयन मन भाये, प्यारीजु बहु विधि लाडलडाये ।
पिय के पीक कपोल विराजे, अधरन अंजन रेखा छाई ।
पिय के उर मरगजी माला, बोलत वचन शिथिल नन्दलाला ।
छवि पर नन्ददास बलिहारी, अंग अंग राँचे कुंज बिहारी ॥

सहचरी रूपा गोविन्द प्रभु की प्रेमासक्ती देखि के श्रीनाथ जी अंग-अंग रंगि गये—कायेते कि आप कुंज बिहारी हैं। निकुंज नायक हैं । तासे ये शृंगार आपने अनेक भाव पूर्ण कियो तथा प्रभु को सुख देख समस्त धनपति वैष्णव भाव विभोर होय आचार्य की शरण आये तासो ही गोविन्द नाम सार्थक भयो श्रीनाथ गिरधर्याष्टक को प्रथम श्लोक या भाव सो निहित हैं सके है ।

**आपके वचनामृत**

माधवदास नामक वैष्णव सों गो० ति० श्री गोविन्दजी एक समें आज्ञा किये । श्री गुसाईजी ने चतुर्थ विज्ञप्ति में प्रार्थना कीनी है । मैं वाही रूप से प्रार्थना करि प्रभु श्रम करायो ।

बहुधैवममापराधवृन्दस्तदपि त्वं न विमुंचसि स्वकीयान् ।
अतएव न कापि कापि चिन्ता भवति प्राणपते ममेदृशस्य ।

मेरे अनेक अपराधन को समुदाय वन गयो है। परन्तु आप कृपा सागर है । मोय छोड़ेंगे नाहिन तासों मोको अब कहा चिन्ता है मेरे प्रभु गोवर्धन घर प्राणपति है ।

आगे आज्ञा किये प्रभु कैसे कृपालू हैं । हरिराय महाप्रभु ने छटे शिक्षापत्र में आज्ञा किये ।

अनिष्टमेव सर्वज्ञो बलाद् दूरी करोतिहि ।
इष्टानिष्ट विवेको ही जीव बुद्ध्या न जायते ।

अनिष्ट कछू भी प्रभु होन न देवे; आगे सो ही दूर करि देय हैं । परन्तु जीव वाय समझ न सके। इष्ट अनिष्ट की पहचान हू नाहिन । काहेते जीव बुद्धी जो ठहरी। तासो श्री गोवर्धनधर अनेकानेक भक्तन की वल्लभ प्रभु श्री विठ्ठलनाथ गुसाईंजी की कृपा सो कार्य सिद्ध किये कर रहे करेंगेही—समक्ष न सक्यो ।



कार्तिक शुक्ला १५—वस्त्र सफेद जरी के चाकदार वागा मोजा सूथन ठाडे बस्त्र में घनश्याम श्रीमस्तक पे क्रीट अलक धरे । कुण्डल मयूराकृत हीरा के । आभरण सब जडाऊ हीरा मोती के । वनमाला को शृंगार मोजा उपर तोडा पायल हीरा की । पिछवाई नीली धरती पै । तारावारी जो माघ शुक्ला ४ को आवे सो । तथा पद भी वे ही होय ।

कार्तिक मास समाप्ति पै मानसी गंगा चक्रराज पे दीया आकाशी बन्द । शीतकाल की सेवा गोपमास को प्रकार आरम्भ । पद क्रीट के भाव के । ललित पंचमादिराग आरम्भ चन्दबा टेरादि वदलें । तथा पद में खन्डिता षिसान्तर हिलग एवं शीतकालिकापदारंभ ।

या प्रकार श्री ललिताजी की सेवा को प्रथम मास सम्पन्न भयो—

**प्रश्न**—क्योंजी शीतकाल में वेग अरु उष्णकाल में शंखनाद अवेरे क्यों ? अरु वेग क्यों सदा ब्राह्म महूर्त में क्यों नाय होंय ?

**उत्तर**—पुष्टिमार्ग में छओं ऋतु स्वरूपात्मक श्रीनाथजी के सन्मुख सेवा में सदा सन्नद्ध रहे हैं । जो जा रितु में जो लीला रस सुख प्रभू को प्राप्त होय वै षड्रितु दिन रात में या प्रकार है । वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर । ये दश दश घड़ी दिन रात में क्रम सो वर्तत है । दिनरात मिलके ६०० घड़ी भई । अरु छः रितु प्रथम प्रातःकाल वसन्त सो प्रारम्भ होय है । प्रभु को विभूति योग स्वरूप वसन्त है । "मासानामार्गशीर्षोऽहं ऋतुनां कुसुमाकरः" तासों मंगला सो लैके राजभोग पर्यन्त १० घड़ी होय है । भोजन की अवधी वसन्त में कही है । फेर दसघड़ी ग्रीष्म आवत है। सो तो पोढनो सुन्दर लगे तासो अनवसर रहे । फेर वर्षा रितु आवत है। तामें दशघड़ी उत्थापन सो लेकर शयन पर्यन्त सेवा होय है । तासो घूमवे फिरने नीको लगे सोऊ वर्षा रितु में सायंकालिक सेवा, फेर शरद् हिमन्त शिशिर ये तीन रितु ३० घड़ी निद्रा शयन अनवसर पोढनो सुखद होय है ।

जब दिन वड़े होय है तब उष्काल में चार घड़ी दिन बड़ो होय तासों । तथा शीतकाल में रात्री बड़ी होय तासो चार घड़ी वढ़ जाय सो पाछली रात बसन्त आयवेते वेग होय अरु ग्रीष्म में सभी छोटी होवेते ग्रीष्म के कारण रितु वसन्त देर से बैठे तो शीतकाल में मंगला सिदोसी तथा उष्णकाल में अवेरी याही कारण होय है ।

**प्रश्न**—पुष्टिमार्ग में भगवद् द्रव्य कासों कहनो चाहिए ?

**उत्तर**—भगवद् द्रव्य सों आशय देवद्रव्य सों है । देवद्रव्य को तात्पर्य—देव को चढ़ावे सो द्रव्य । देव श्रीकृष्ण को भेंट कियो भयो द्रव्य ही देवद्रव्य होय है ।

... प्रभु श्रीकृष्ण आपको ये समर्पण करूं हूँ ये प्रतिज्ञा करै है। वही अर्पित अरु निवेदित कह्यो जाय हैं। प्रभु विनयोग के पश्चात् प्रसादीरूप सों सेवक अपने उपयोग में ले सके। चाहे वो खाय पहरें उपभोग करे। जैसे भोजन की वस्त्र गहनादि वस्त्रादि। किन्तु भेट को द्रव्य सन्मुख को सेवक उपमोग में नहीं ले सके।

सेवकानां यथा लोके व्यवहार प्रसिद्ध्यति,
तथा कार्यं समर्प्येव सर्वेषां ब्रह्मताततः"

वाकी टीका श्री गोकुल नाथजी करैत है।

सेवकानां दासानां भगवदीयानां भगवदुच्छिष्टं ग्राह्मम्। नान्यद्रव्यस्य व्यवहार प्रकारः। यथाग्रे निशंकं लोक प्रसिद्धो भवति। तथा अति प्रसिद्धतया निःशंकतया सेवकैः समर्प्येव कार्यम्।

सेवक अर्थात् भगवान को दास भगवद् उच्छिष्ट ले सकै हूँ। दूसरों न लेय यह व्यवहार ताको लोक में निडर रीति सों प्रसिद्ध है। निडरता को आशय भगवान् को समर्पित करके लेनो।

श्रीमद्भागवत में उद्धव जी को वाक्य या प्रकार है।
"त्वयोपभुक्त स्रग्गन्धवासोलंकार चर्चित उच्छिष्ट भोजनोदास्यः"

भगवत् समर्पित पदार्थन को उपयोग करिवे को पुष्टिमार्ग ने सेवकन कों अधिकार दीनो है। यदि एसो न होतो तो ब्रह्मसंबंधी जीव देवद्रव्य खायवे वारो कह्यो जातो।

**भेट-काढी भेट**—सन्मुख भेट जो करी जाय वे चार या पाँचभेट वैष्णव को करनी ही चाहिये—(१) जन्माष्टमी में पालना पे पधारे बाद वो झगा टोपी के भाव सों। (२) दिवाली की हटडी भेट में प्रभु प्रिया प्रीतम के संग चोपड पांसा खेले ता भावसों प्रभु अंगीकार करें। (३) पवित्रा की भेट वैष्णव धर्म पुष्टि पुरुषोतम प्राकट्य दिवस (४) गुरून की जन्म दिन की भेट जा दिन गुरू को जन्म दिन आवे तादिन वो भेट करनी। जहाँ गुरू न विराजते होंय तोहू काढ़ि के इकट्ठी करिके भेजनी। तथा उपरोक्त भेट हू गुरू गृह जहाँ सों प्रभु पुष्ट करि पधराये तहाँ पठावनी है।

(१) **काढी भेट**—यह भेट मृतावस्था में कण्ठी माला के साथ अथवा जीवतहू। यामें गुरू कों तथा श्रीनाथ जी की भेट द्विगुण तथा सातों घरन के स्वरूपन की हू भेट काढ़े ताय काढी भेट कहै हैं।

**प्रार्थना दर्शन तथा सेवा के चार प्रकार हैं**—(१) काम सों, (२) भय सों, (३) लोभ सों, (४) प्रेम सों।

(१) काम सों नवीन वरवधू प्रार्थना करें, दर्शन करें सेवा करें। (२) भय सों डरके प्रार्थना करें, दर्शन करवे आवै सेवा करें। (३) लाभ सों–पुत्र, धन, मान-सम्मानादि के लोभ सों सेवा प्रार्थना दर्शन करें। (४) प्रेम सों—ये दर्शन, सेवा सर्वोत्तम हैं।

माधुरी लीला—प्रेम प्राप्ती के दश धर्मन को वर्णन मिले हैं।

(१) चक्षु प्रीति, (२) अन्तर हेतु, (३) मनःसंग (४) संकल्पोत्पत्ती (५) तनुता (६) विषय व्यावृत्ति (७) लज्जाप्रणय (८) उन्माद (९) मूर्छा (१०) प्रमाधिक्य।

कई दूसरे मत या प्रकार हैं :—

(१) चक्षु प्रीति (२) अन्तर हेतु (३) चिन्तन (४) निद्राभेदन (५) तनुता (६) विरक्ति (७) लज्जा (८) उन्माद (९) मूर्छा (१०) मृत्यु।

**(१) चक्षु प्रीति उदाहरण—**

ए जरि जाओ लाज मेरे कोन काज आवे री,
कमल नेन नीके देखन न दीने।
नन्ददास प्रभु प्यारी ता दिना ते,
मेरे नयना उनही के अंग संग रस भीने॥

**(२) अन्तर हेतु—**

नन्द सदन गुरु जन न भीर तामें,
मोहन वदन नीके देखन न पाऊँ।
नन्द दास प्यासे को पानी पिवाय ले,
जिवाय जियकी जानत तोसों कहा जनाऊँ॥

**(३) मनःसंग—**

विधाता विदा हू न जानी। (गोविंद स्वामी)
सुन्दर वदन पान करिवे को रोम रोम प्रति नेन न कीने
करी यह बात अयानी।

**(४) संकल्पोत्पत्ति—**

मेरो माई माधव सों मन मान्यो। (परमानंद)

**(५) तनुता—**

बात हिलग की कासों कहिये। (चतुर्भुज)

(६) विषय व्यावृत्ति—

उपभोग साधनं विषय: (विशेषेन सिनाति बध्नाति इति)।

देख जीयो माई नेन रंगीलो।

ले चल री सखी तेरे पाय लागों गोवर्धनधर छेल छबीलो ॥ (कृष्णदास)

................................................

(७) लज्जा प्रणय—

बैठी पिय कों वदन निहारे।

लावण्य रूप पर बार बार तन मन धन जौवन वारें।

कबहुक जाय निकट प्रीतम के पगियाँ पेच सुधारें।

कबहुक चुम्बन करत कपोलन हेर चन्द उजियारे।

कबहुक पीवत अधर सुधारस भेंटत अंग उघारे।

रसिक प्रीतम संगम कों प्यारी पूरव बिरह विचारें।

(८) उन्माद—

राधिका आज आनन्द में डोले। (श्रीभट्ट)

(९) मूर्छा—

व्रज की पौर ठाडो सांवरो ढिटोना तिन मोय मोह लई।

जब देखो तब श्यामसुन्दरी चल न सकत आली दीनी काम नृपतई।

(सूरदास मदनमोहन)

(१०) प्रेमाधिक्य—

पिय तोय नेनन ही में राखों।

तेरे एक रोम पर प्यारे जगत बारने नाखों। (नंददास)

(११) मृत्यु—

यामें कहा सिखाई आगे या कुल की पहचान।

ऐसो कछूहि सिखाइयो जो बिछुरत निकसे प्रान।

## मार्गशीर्ष मास

ललिता जी की सेवाक्रम में कार्तिक, मृगसर और पौष ये तीन मास होय हैं। तामें कार्तिक तो महा महोत्सव अन्नकूट में आय गयो अब मृगसर को प्रारम्भ तथा ललिता जी की सेवा को यहाँ वर्णन करें हैं।

मृगसर मास (गोप मास)—सब से उत्तम मान्यो है। विभूति योग श्रीमद्-भागवत एकादश स्कंध में उद्धव के प्रति भगवान आज्ञा करें हैं :—

"मासानां मार्गशीर्षोऽहं नक्षत्राणां तथाभिजित्" (११–१६–२७)



गीता में भी विभूति योग में प्रभु आज्ञा करें हैं :—

"मासानां मार्गशीर्षोऽहं ऋतुनां कुसुमाकरः"

तासों वल्लभ सम्प्रदाय में हूँ या मृगसर मास कों गोप मास कहि के बिविध सेवा सामग्री तथा उत्सवन के प्रकार कहे गए हैं। या में हूँ बहुत से बालकन के प्राकट्योत्सव आयवे सों ये उत्तम मास वल्लभ सम्प्रदाय में मान्यो है। क्योंकि ये भगवत्स्वरूपात्मक मास है। सेवाक्रम में जैसे—वैशाख जेष्ठ आषाढ उष्णकालीन सेवा में यमुना जी के तीन मास, तथा श्रावण भाद्रपद आश्विन श्री राधा जी के—जामें प्रिय प्रीतम के झूलादि होवें तथा ये मान खण्डिता मिषान्त रादि लीलाधार पैं। तथा या मास में व्रतचर्य्या के पद होय के पूर्णिमा के दिन उद्या-पन के रूप में छप्पन भोग होय तासों ललिता जी के ये तीन मास होय हैं। स्वामिनी स्वरूपा श्री आचार्य वल्लभ महाप्रभु, चन्द्रावली स्वरूपा श्री गुसाईं जी विट्ठलवर; ललिता जी स्वरूप श्री दामोदरदासजी हरसानी तुर्य प्रिया श्री यमुना माँ—या प्रकार द्वादशमास की सेवा को क्रम होय है।

पुष्टि मार्ग की सेवा उत्सव महोत्सवादि सारी श्रीमद्भागवत के आधार पर ही है। ये गोपमासहू भागवताधार पैं है। दशम स्कन्ध श्रीमद्भागवत की बाईसवें अध्याय की लीला को ये मास है :—

"हेमन्ते प्रथमे मासे नन्द व्रज कुमारिका ॥

चेरुर्हविष्यं भुञ्जानाः कात्यायन्यर्चनव्रतम् ॥ आदि १०-२२-१-२-३-४-५

हेमन्त रितु के प्रथम मास में नन्द बाबा के व्रज की कुमारियाँ कात्यायनी देवी की प्रतिमूर्ति रेणुका की बनाय व्रत करि पूजन करि कै दही भात खाती सूर्यो-दय के पूर्व उठि कै परस्पर कंधन पैं हाथ धरि भगवत्कीर्तन करतीं भईं स्नानार्थ जातीं। स्नान कर पूजन करती तहाँ प्रभु ने वस्त्रहरण किये तासों ही या मास में प्रभात की सेवा वेग होय।

आचार्य श्री विट्ठलनाथ जी (गुसाईं जी) ने श्रृंगार रस मण्डन में हेमन्त कों सर्वोत्तम बतायो है। यामें प्रभु की सारी वस्त्र हरण लीला के साथ, रितु वर्णन तथा अन्य चरित्रादि वर्णित हैं। व्रतचर्य्या की अष्टपदी कैई बार होय है। मंगला में "व्रजानन्दकन्दं व्रजानन्दकन्दं। घोष पति भाग्य भुविजातम् ॥

व्रतचर्य्या के पदन में नवरस की झलक व्रज साहित्य के भक्तन ने दिखाई है। श्रृंगार रस की प्रकृति श्याम देवता विष्णु कामदेव प्रकट करिवे वारो युवति नायिका भ्रू विक्षेप चन्दन चमेली आदि।

**शृंगार रस—**

हरि जस गावत चली व्रज सुन्दरी नदी जमुना के तीर।
लोचन लोल बाँह जोटी करि स्रवनन झलकत वीर।
.........................................................................

परमानन्द प्रभुवर दैवे कों उद्यम कियौ मुरार।

यामें व्रजललनान के अंग वर्णन, गीत वर्णन के साथ स्नानार्थ गमन तहाँ प्रभु कौ मिलन है। तासों या पद में शृंगार रस है।

**वीर रस**—उत्साह स्थाई भाव; महेन्द्र देवता हेम वर्ण।

तुम हरि हरे केवल चीर।
हरत मुरली वसन भूषण पराक्रम कुलधीर।
तुम आय जाय मनाय लावत चतुर हलधरवीर।
मुरलिका धुन सुनत व्रजपति मनहि होत अधीर।

केवल वस्त्र ही नहीं हरण करे अपितु मन भी हरण किये।

**करुण रस**—अनिष्टनिवृत्ति, मन देवता, शोक स्थायी भाव आदि—

शीत तन लागत भारी।
.........................................................................

गोविन्द प्रभु करो मनोरथ पूरन, हम हैं दासी तिहारी।

करुण रस में दया को आविर्भाव होनो चहिये।

**अद्भुत रस**—[स्थायी भाव विस्मय]

बसन हरे हरि कदम्ब चढ़ाये।
सोलह सहस गोप कन्यन के अंग आभूषण सहित चुराये।

या में अद्भुतता या बात की है—वस्त्र आभूषण डार और पत्ता बने कदंब नयो ढंग कों। आशाफल देवे वारो बन्यौ।

**हास्य रस**—अतिहसित, हसित, प्रहसितादि भेद [हँसी स्थाई भाव]। वर्ण श्वेत।

हसत श्याम व्रज घरकौं भागे।
लोगन यह कहि कहि सुनावत मोहन करन लँगराई लागे।
हम अस्नान करत जल भीतर आपुन मीडत पीठ कन्हाई।
कहा भयो जो नन्द महर सुत हमसों करत अधिक ढिठाई।
लरिकाई तब ही लों नीकी चार बरस के पांच।
सूर श्याम जाय कहें हम जसुमति सों श्याम करत है नाच।

यामें पीठ मर्दन करनों आदि हास्य है। मन्द मुसकान सों उपालम्भ सों डरावनो। आदि

**भयानक**—[भय स्थाई भाव श्याम वर्ण]

हमारे अम्बर देहु मुरारी।
लैकर चीर कदम्ब चढ़ि बैठे हम जल मांझ उघारी।
तट पर बिना बसन क्यों आवें लाज लगत है भारी।
चोली हार तुमहि को दीने चीर हमारे देहो डारी।
तुम यह बात अचम्भो भाखो नांगी आवो नारी।
सूर श्याम कछु नेह करोजु शीत भयो तन भारी।

**बीभत्स रस**—[जुगुप्सा स्थायी भाव; नील वर्ण]

मोहन बसन हमारे दीजै।
बारी जाऊँ सुनो नन्द नन्दन सीत लगत तन भीजै।
कौन स्वभाव वृथा अन अवसर इन बातन कैसे जीजै।
सुनि दुख पावे महरि जसोदा जाय कहै अब हीजै।
सब अवला जल मांझ उघारी दारुन दुख कैसे सहीजै।
प्रभु बलराम हम दासी तिहारी जो भावै सो लीजै।

(ये रस निकृष्ट है।)

**रौद्र रस—**क्रोध स्थाई भाव है। [शत्रु आलम्बनादि]।

देहो व्रजनाथ हमारी आंगी।
नातर रंग बिरंग होयगो कई बिरियाँ हम मांगी।
व्रज के लोग कहा जु कहेंगे देख परस्पर नांगी।
खरे चतुर हरि हो अन्तरगत रैन परी कब जागी।
सकल सूत कंचन के लागें बीच रतन के धागी।
परमानन्द प्रभु दीजै न काहे प्रेम सुरंग रंगपागी।

या में रोष को भाव है। 'रंग बिरंग होयगो' में रौद्र की झलक है।

**शान्त रस**—[स्थायी भाव शम उत्तम प्रकृति]।

नीके तप कियो तन गारि।
आप देखत कदम्ब पै चढ़ि मान लई मुरारि।

बरस भर कित नेम संयम इन कियो मोहि काज।
कैसे हू मोकों भजे कोऊ मोहि बिरद की लाज ।।
ध्यान व्रत इन कियो पूरन सीत तप तन वारी।
काम आतुर भजे मोकों नव तरुनी ब्रज नारी।
कृपानाथ कृपाल भये तब जानि जानकी भीर।
सूर प्रभु अनुमाने कीनों हरूं इनकी पीर।

यामें प्रभु स्वयं प्रकट होय कामनापूर्ण करिवे को वचन दियौ तासों शान्तरस भयो। या प्रकार ये नवरस सिद्ध भये।

मृगसर एवं पौष मास हेमन्त रितु होयवे सों सीत कालीन सेवा में प्रभु सुखार्थ भोग, नित नूतन पौष्टिक तथा शृङ्गार जड़ाऊ आवैं। एवं पद हूँ हिलगके, मिषान्तर के, मान के, खण्डिता के, व्रतचर्या के तथा सीत कालीन चित्रसारी रंग महल आदि के होंय है।

शृङ्गार में हीरा पन्ना माणक पिरोजा पुखराज आदि के कुलहे, टिपारा, पगादि तथा वस्त्रहू मोतीन के भरमा फूल वारे, फतवी घुण्डीन की बन्द दुहेरा वस्त्र निकसमा गद्दल तथा सोना की, हीरा की, पाग आदि। सामग्रीन में उदड़ की रोटी टिकड़ा चूरमा, सुहाग-सोंठ, अदरक के प्रकार लोंग के प्रकार आदि।

या मास कूं गोप मास तथा पोष को धनुर्मास कहे हैं तासों ही देव प्रवोधिनी के दूसरे दिन सों लेके माघ शुक्ला ५ से पूर्व प्रभु बाहर नहीं पधारें। ठण्ड होवे सों। यामें पलनाहू मन्दिर में होय है। और सम्पूर्ण सेवा प्रभु-सुखार्थ ललिता सहचरी की आज्ञा सों होय है। श्री ललिताजी की सेवा, स्वरूप तथा भावना या प्रकार वर्णन में आवे हैं—

**श्री ललिताजी—**

चिरादासक्ता सा कृश तनुरसक्ता धृतिकृतां
तदा राधा बाधा शत वलित भावा प्रिय सखी
क्वचित् कुजे गुंजन्मधुप मुखरे धीर पवना
श्रिते लीना दीना निज सहचरीमाहललिताम्।

श्री ललिताजी के पिता श्री ललितभानजी माता शारदा, निवास उचो गाँव। आपकी आयु १४ वर्ष तीन मास बारह दिन जन्म दिन भाद्र पद सुदी छठ।



आज सखी शारदा कन्या जाई।
भादो सुदी षष्ठी है शुभ दिन शुभ नक्षत्र वर आई।
........................................................................
ब्रजपति की स्वामिनी यह प्रकटी ललिता नाम धराई।

आप ही रूपान्तर सों श्रीदामोदरदास हरसानी भये। वार्ता आचार्य महाप्रभु-"दमला तेरे लिये मार्ग प्रकट कियो है।"

ललिताजी की सेवा में प्रभु सुखार्थ ललित कलात्मक वस्त्र बागा भोग शृङ्गार राग आदि होंय। तथा अनेक ललितकला ज्ञाता ही ललिताजी के नाम सों सेवा में ललितता लावैं हैं।

**नित्य सेवाक्रम में ललिताजी को वर्णन (राग बिभास)—**

प्रात समें नव कुञ्जद्वार ह्वै ललिता ललित बजाई वीना।
पौढे सुनत श्याम श्री श्यामा दम्पति चतुर नवीना।
अति अनुराग सुहाग भरे दोऊ को कला जु प्रवीन प्रवीना।
चत्रभुजदास निरख दम्पति सुख तन मन धन नौछावर कीना। **(चत्रभुज)**

**जगायवे में (बिभास)**

ललिता जगाय देरी भई बड़ो बार बड़ी।
अलबेली पौढी पिय के संग अलक लड़ी के लाड़ लड़ी।
तरुण किरण रन्ध्रन में आई अरी तू तो बाहिर ही अड़ी।
नन्ददास प्रभु को कवि वरन सकै यह छवि मोपै न जात गढ़ी।

**मंगलभोग (बिभास)**

लाडली लाल सेज उठि बैठे सखी सब मंगल भोग धरावैं।
कंचन जटिल थार में मोदक लेकर ललिता हरि ढिंग आवें।
देत परस्पर कौर बदन में नेन उनींदे अति अरसावें।
मृदु मुसकात मोद बढ़ावेत दास निरखि बलि बलि जावें।

**मंगला सन्मुख पधारते बीडी अरोगते (बिभास)**

आवत कुञ्जन की यहु पीरी।
पिय अलसात जम्हा रस भरे ललन खवावत बीरी।
सुरत सिथिल अंग अंग सिथिल अति भुजभर श्यामा रसिक रसीली।
विट्ठल विपुल विनोद करो मिलि नई ललितादिक नीली।

**शृंगार (राग विलावल)**

माई री प्रातकाल नन्दलाल पाग बधावत ढिखावत दर्पणभाल रह्यो लसि।

**राजभोग अरोगत में—(सारंग)**

जेंवत श्री वृषभान नन्दनी कान्ह कुँवर की परछाई ।
जोइ-जोइ व्यंजन भावत सोइ-सोई ललिता लै आई ।
हित सों जिमावत मोहन प्यारो मधु मेवा पकवान मिठाई ।
अति अनुराग बढ़तजु परस्पर द्वारकेश वलि जाई ।

**शीतकाल में राजभोग अरोगत—(धनाश्री)**

जेंवत ललना लालन संग ।
मनिमय महल विराजत दोऊ परदा परे सुरंग ।
धरी अंगीठी धधकत कनक की सन्मुख दोऊ राजे ।
रतन जटित सिंहासन तामें गादी तकिया साजे ।
सुन्दर झारी भरी जमुना जल धरी सखी की ओर ।
कनक थार नव ओढन खिचरी धरी ब्रजजन कछु ओर ।
रोटी लीटी बहु घृत चुपरी नीकी धरी करि प्रीत ।
ललितादिक मनुहार करत दोऊ जेंवत अति रस रीत ।
प्यारी काहे देत पिय के मुख प्यारो मुख में झेले ।
रसिक प्रीतम रस रीत पियारी रतिनाथ कंठभुज मेले ।

**राजभोग सन्मुख आरती—(सारंग)**

वृन्दावन सघन कुज बैठे ब्रजराज वदन ललितादिक प्रमुदित मन करति आरती ।

**सांयकालीन सेवा में—(राग पूर्वी)**

पाछे ललिता आगे श्यामा प्यारी आगे पिय मारग में फूल बिछावत जात ।
कठिन कली वीन करत न्यारी न्यारी प्यारी के चरण कोमल जान सकुचत
गडे बहू को डरात ।
अरुझी लता अपने कर निवारत ऊँचे ले डारत द्रुम पल्लव पात ।
सूरदास मदनमोहन पिय की आधीनताई देखति मेरो मन सिरात ।

**राग—(कान्हर)**

राधाजू कों ललिता मनाय लिये आवत हरिजू के कान परी नूपुर भनक ।
तल्प रची किसलय दल हाथ रहे प्रति धुन हिये भई बाजे झनक ।
जब जाय मिली लपटानी हरि हियो त्यों त्यों फिर मिटत कासे की ठनक ।
सूरदास मदन मोहन श्याम रीझे परस्पर हँसत हँसत पोढे पर्यंक खनक ।

**शयन भोग में [दूसरे दूध के समै] (विहाग)**

हँसि हँसि दूध पीवत नाथ ।
मधुर कोमल वचन कहि कहि प्राण प्यारी साथ ।
कनक कटोरा भर्यो अमृत दियो ललिता हाथ ।
लाडली अचवाय पहले पीछे आप अघात ।
चिन्तामणि चित वस्यो सजनी नाहिन और सुहात ।
श्यामा श्याम की नवल छवि पर रसिक बलि बलि जात ।

**पौढवे में—**

एक सेज पौढे जुगल किसोर ।
नन्द नन्दन वृषभान दुलारी सुरत केलि की उठत झकारे ।
विजना बयार करत ललितादिक चन्दन भरि धरी कमोर ।
हरि नारायण श्यामदास के प्रभु माई विनती करत दोऊ कर जोर ।

बारह महीना के उत्सवन में तथा धमार ब्याह आदि में अनेक पदन के साथ प्रधान सेवा आपकी है । कछु उदाहरण—

ब्याह—ललिताजी के आज बधायो वृन्दावन ब्याह रचायो ।

**मृगसर बदी १ प्रतिपद [गोपमासारम्भ]**

वस्त्र लाल तामें सुनहरि फूल बेलवारे बेलबूटा वागा घेरदार सथन लाल उपरोक्त फूलनवारो पाग सुनहरी जरी की (चीरा) ठाडे वस्त्र सफेद लट्ठा चीकने के मोजा लाल चन्द्रिका सादा मोर पक्ष की आभरण पन्नामोती के छोटो शृंगार लूम पन्ना मोती के कर्ण फूल ।

आज सों लेकर मृगसर सुदी १० तक मंगला शृंगार में व्रतचर्या के पद होंय राजभोग में तथा अन्यमें खण्डिता नित्य कीर्तन । सामग्री मूंग को मगद । गोपीवल्लभ में । सखड़ी के चूरमा । पिछवाई खण्ड लाल धरती पै सुनहरी धोरा पै बेल हरी कलात्मक ।

**विशेषता—**

आज लाल वस्त्र या लिये धरें—अनुराग कौ रंग लाल मान्यो है । गोपकन्यन को अनुराग प्रारम्भ होय यथा ललिताजी कौ स्वरूप अनुराग रंगवारों । मोर चन्द्रिका । ब्रजराज के निष्काम भक्तन के प्रतीक सुनहरी फूल । स्वामिनी जी की कृपा सों ये ब्रजभक्त सेवा में अंगीकृत होंय । तासों ठाडे वस्त्र सफेद । यश को प्रतीक होयवे सों । आज की दिनभर की सेवा श्री ललिताजी की है । तासों आपके स्वरूप शृंगारवत् प्रभु को शृंगार होय है ।

या मास में लाल वस्त्र जादा धरें । आपको स्वरूप एवं वस्त्रन के वर्णन या प्रकार मिले है ।

गौरोचना रुचि मनोहर कान्तिदेहां
मायूर पिच्छ तुलति तुच्छ विचार खेलाभ् ।
राधे तब प्रिय सखीं च गुरुं सखीनां
ताम्बूल भक्ति ललितां ललितां नमामि ॥१॥

आप ताम्बूल सेवा में रत तथा अन्य सेवा में तत्पर हैं ।

**मृगसर बदी दूज—**

श्रृंगार ऐच्छिक आज पिछवाई भरत की सिलमा सितारा की खण्ड सहित आवे। वस्त्र हरे साटन के किनारी वारें चाकदार वागा ठाडे वस्त्र लाल वस्त्र लाल वस्त्रन में सुनहरी फूल के नागफणी को कतरा श्रृंगार मध्य को पगा धरें। वाला कर्ण फूल चार। मोजा पिरोजी रंग के साटन के। श्रृंगार आज को सेवा सहित सौरभाजी की और सूं जो ललिता जी की प्रिय सखी हैं। पद नित्य के जैसे शृंगार बैसे सीतकालिक सामग्री नित्य की ।

**मृगसर बदी तीज**—श्रृंगार ऐच्छिक आज गुलाबी गहरे साटन धरें। घेरदार बागा पाग मोजा, सूथन, पिछवाई सादा साटन की बेलवारी, आभरण सोना के कतरा (किलंगी) छोटो श्रृंगार मोजा जैसो श्री मस्तक पे रंग के धरे वैसे आमे। आज को श्रृङ्गार सेवा ललिता जी के परिकर रतिकला जी की आड़ी सों होय ।

**मृगसर बदी चौथ श्री तिलकायत दाऊजी महाराज कृत षट्स्वरूपोत्सव—** देहली वन्दनमाल पिछवाई खण्ड लाल धरती पे सुनहरी धमला (प्याला) ये फूलवारे पता सहित छोटे पोधा कलाबत्तू के। ठाड़े वस्त्र मेघश्याम वस्त्र सुनहरी जरी के बागा चाकदार सूथन मोजा फेंटा दुमाला बीच को अन्तर्वर्ति पटका सफेद जरी को कुण्डल को श्रृंगार वनमाला को उत्सव के आभरण श्रीमस्तक पर जमाव की चन्द्रिका तथा वाम भाग को कतरा भारी श्रृंगार। महाप्रभू गुसाईं जी आदि की राजभोग में "विहरत सातों रूप धरें" आदि बधाई होय। सामग्री गोपीवल्लभ में चन्द्रकला ।

**विशेषता—**

आज वर्तमान तिलक० श्री गो० गोविन्दलाल जी महाराज के जन्म दिन की नौबत की बधाई बैठे, वि० १८७९ में आज छः स्वरूपोत्सव भयो। स्वरूप तो १४ हैं परन्तु कह्यो छः स्वरूप ही गयो है। चौदह स्वरूपन के पधारवे कूं भी छः स्वरूप ही कह्यो जाय। ताको कारण यह है श्रीनाथ जी नवनीत प्रिय तथा गोद के छः स्वरूपन कूं गिनके श्री मथुरेश जी, विट्ठलनाथ जी, द्वारकानाथ जी, गोकुलनाथ जी, चन्द्रमा जी अरु मदनमोहन जी ये छः स्वरूप पधारे तिनके साथ मुकुन्दरायजी



छठे घर के आपश्री ने निरधारित किये। पधराय के स्थित किये। चौदह स्वरूपन को वर्णन या प्रकार मिले है—

"लाल दामोदर जी बड़ भाग के मन्दिर चौदह सरूप पधारे" प्रथम मनोरथ में लाल जरी के वस्त्र कुल्हे बागा चाकदार धरें तथा वाद में उपरोक्त श्रृंगार श्रीजी में आपने कियो। आज के स्वरूप के भावानुसार आपने विविध मनोरथ किये। तासों यश स्वरूप चन्द्रमा की तरह स्वच्छ चन्द्रकला की सामग्री अरोगें। श्रृंगार में विशेषता फेंटा पै कुण्डल नहीं धरें। परन्तु आपने नूतन श्रृंगार कियो। आपने अन्तरर्वति पटका धराये ताकों स्वेत जरी चन्द्रावली जी के भाव सों। श्रीजी वक्षस्थल में दाऊजी के भावन कूं अन्तर छिपाय राखे तथा स्वामिनी वत् महाप्रभू के भाव सों। छप्पन भोग में वस्त्र सुनहरी जरी के तथा ब्रज लीला सों फेटा। या प्रकार आप श्रृंगार किये। आज की सेवाक्रम श्री चन्द्रावली जी की ओर सूं भयो।

**मृगसर बदी ५**—आज को श्रृंगार पाछली रात के पद के भाव को होय है। पिछवाई लाल धरती में दोनों दिश वृक्ष वृक्षन पै पंच्छी सोये भये बैठे हैं। तथा रात्री के दर्शन होय हैं। खण्ड भी वाही प्रकार कलाबत्तू को कलात्मक। पाग सुनहरी जरी की चीरा चन्द्रिका सादा मोर पक्ष की। वस्त्र घेरदार साटन के शोभते रंग के आज गहर गुलाबी धरें। ठाड़े वस्त्र शोभते आज लाल धरें। छोटो श्रृंगार कर्णफूल को मोती हीरा के आभूषण। आज सेवा बेगी होय। प्रातः सात बजे तक राजभोग होय जांय। आज की सेवा रत्नप्रभा जी की ओर सों होय है। पद नीचे प्रमान होंय। सामग्री नित्यवत् ।

**विशेषता—**

विक्रमाब्द १९६६ सों ये श्रृंगार गोस्वामि तिलक गोवर्धनलाल जी ने परचारग श्री दामोदरलाल जी महाराज की प्रार्थना सों नई सूझ बूझ सों पद के आधार पै ये कियो सो अद्यावधि प्रचलित है।

**मंगला में**—"देहो ब्रजनाथ हमारी आँगी" (व्रतचर्या)।

**श्रृंगार में**—श्रृंगार के आधार सों ये पद। पद के आधार सों श्रृंगार।

पाछली रात परछाह पातन की,
लालजू रंग भीने डोलत द्रुम द्रुमन तरन।
बने देखत बने लगत अद्भुत मने,
जात की सोत में निकस रही सब धरन ॥

कृष्ण के दरस कों अंग के परस कों,
महा आरति मान चली मज्जन करन ।

नुपुर धुन सुनत चक्रत ह्वै थकि रही,
परि गयो दृष्टी गोपाल सांमल बरन ॥

जरकसी पाग पर मोर चन्द्रिका बनी,
कमल दल नयन भ्रू बंक छवि मन हरन ।

धाई सब गहन कों रस वचन कहन कों,
भामिनी बनी अति छवि सुधारत चरन ॥

रोम रोम रमि रह्यो मेरो मन हरि लियो,
नाहि बिसरत वाकी झुकन में भुज भरन ।

कहे भगवान हित राम राम प्रभु सो,
मिली लोक लाज भाजि गई प्राण परवस परन ।

नन्दराज कुमार गोवर्धनधर परकिया के यहां पधारे । प्रभात पुनः अपने घर पधारते समय को वर्णन यामें भगवानराय करि रहे हैं । जरकीसी पाग ताको आशय स्वामिनी जी के आधीन आप हैं । मोर चन्द्रिका धरे है । ताको आशय निष्काम भक्त व्रजललनायें हैं अरु उनको आप अहसान मानि शीस पैं धरि राख्यो है । कही हू है—"हों रिणी तिहारो" तासो ये दर्शन कमल नयन घनश्याम के होत ही सब ललना पकरिवे को दौरी । परन्तु स्वाधीनपतिका श्री स्वामिनी जी अपने चरणन के नुपुर सुधारन हेत पाछे रह गई । काहे ते मानवती भामिनी है । श्री वल्लभस्वरूपा अरु श्यामसुन्दर ने भुज भरि झुकि के उठाय लई । तब सब सखीन के बीच लोकलाज परवस ह्वैकें प्राण परवस है गये । कछु करत कहत न बन्यो ।

या भाव को श्रृंगार वेगी होय । अरु दिनभर या आशय के पद होंय ।

जैसे राजभोग में—कहि न जात तेरी उनकी विकट बात । आन आन प्रकृति कैंधों कैसे कवनि आवे जोरी, तू डार डार त्यों है वे पात पात । उत्थापन में—बलि बलि लटकन मराल चाल नन्द लाल प्यारे । भोग में—उतर कहि हों कहा जाय पिय सों हों आई अधये की । अर्ध निशा बीति हो हारी तू जीती मैं जु कही तोसों, कोटिक बात तेरे भाये बूंद तये की । सन्ध्यार्ति में—अति हट न कीजे प्यारी चल गिरधरन लालन कुञ्ज विहारी । प्रनत सुन्दर सुकुमार कबके निशि जागत है कुलिस समान हृदय भारी । शयन में—हो तो वार डारी री तन मन धन लालन पर लाल शिर पाग ढरक रही रतन पेच शिर सुभग संवारी ।



मान में—

आजु आये हो उनींदे आपु न पोढिये पलका हो पलोटों पाय ।
इतनी सकुच जिय जानो प्यारे औरन को सो सुभाय ।
मोही अचरज आवे इन बातन मन करत और मानती पिय सों गाढ़े मान मनाय ।
कल्याण के प्रभु गिरधर रीझि हँसी कर लीनी मोय गरे लगाय ।

आज को श्रृंगार एवं पद नवीन भावपूर्ण निर्णय कियो । प्रथम स्वाधीन-पतिका परकीया के यहाँ प्रभु पधारे । अतः रुठि गए और सखियाँ मनावें । राजभोग में दोनों के परस्पर मिलन स्नेह प्रणय तथा रूठनो । फेर सखियन कों प्रभु वियोग चित्रण । क्षमा याचना हेतु मान छुड़ानो । साँवरी सूरत पर आसक्ती पौढ़वे में क्षमा याचना । या प्रकार यह आज कौ श्रृंगार नियमित भयो ।

**मृगसर वदी ६**—श्रृंगार ऐच्छिक—आज पीरे चाकदार बागा साटन के धरें । हरे ठाडे वस्त्र पाग छज्जेदार नागफणी को कतरा पिरोजी आभरण मध्य को श्रृंगार पिछवाई भरत की गिरिराज पर निकुन्ज तथा क्रीडास्थली । पद-नित्य के व्रतचर्या, खण्डिता, मान आदि के । आज की सेवा मन्मथमोदाजी की आड़ी सों होय ।

**मृगसर वदी ७—[वर्तमान गोस्वामिनलक गोविन्दलाल जी को जन्म दिन]**

देहली वन्दनमाल हाँडी वाराजलेवी को । पिछवाई राजभोग तक कसीदा सिलमा सितारा की झकझाक की । नन्द प्राङ्गण में बाल क्रीडारत बछरा खिलावते भये । राजभोग में सोना को बंगला सन्ध्यार्तिपर्यन्त । वस्त्र पतंगी साटन के । बागा घेरदार । सूथन । ठाडे वस्त्र मेघ श्याम । पाग पीरी लटपटी । पटका कटि को पीरो सुनहरी किनारी को । आभरण हीरा मोती के । चन्द्रिका चमक की गोल । येहू श्रृंगार पद के आधार पै होय है । सखड़ी में पांच प्रकार के भात । छोटो श्रृंगार कटि पे हीरा को । मोती की लडें हीरा की दुकदुकी । जब आप प्रकटे तब ये श्रृङ्गार तथा ये बधाई गाई हुती सों आज तक हू चले । सायं उत्थापन भोग सरे पै नवनीत पधारें फेर भोग आवें । भोग आरती सामिल होय के आरती भये बाद नवनीत पुनः पाछे पधारें । नित्य क्रम की सेवा होय । अलक धरें कर्णफूल और आभरण जड़ाऊ वस्त्र हू किनारी के । विविध सामग्री अरोगायवे में आवे ।

**पद मंगला में**—देहो व्रजनाथ आंगी । **श्रृंगार होते में**—बाल लीला के तथा बधाई के । **श्रृंगार सन्मुख**—कुल्हे की पाग पर पेच अति । **ग्वाल में**—मोहि दधि मथन दे गोविन्द । **राजभोग में**—दो पद होंय एक बधाई कौ गवै ।

(१) श्री वल्लभनन्दन रूप-सरूप ।

(२) नेक चितै अब चलेरी लालन ले जु गये । **उत्थापन में**—ठाडे कुञ्ज भवन गिरधर । भोग आरती में बधाई जैजैवन्ती राग में जन्माष्टमी की । शयन में बाललीला के, मान, पौढ़वे के, आज की सेवा रसालिकाजी के साथ ललिताजी की है अरु दिन भर उनकी आड़ी सों मनोरथ होय हैं ।

**विशेषता—**

आज तीन नूतन पद वर्तमान तिलकायत के उपलक्ष में होय हैं—

**शृंगार में—**

कुल्हे की पाग पर पेच अति जगमगें चमक रही चन्द्रिका चन्द्र वारे ।
लाल ढिग मटकि मुरि भ्रूह की चटक पर मोतिलर माल उडुगन के तारे ।
सघन घन कान्ति तन जटित भूषण दिपत निरखि छवि गिरधरन दुख द्वन्द टारे ।
काछ कछ मल्ल हरिराय वेनी गुही पीत पट फहरत फेंट मारे ।

नेक चिते अब चलरी लालन ले जु गये चितचोर ।
जब की हों द्वारे ठाड़ी चितवत ही पियको मुसकानी, मुखमोर ।
ठाडे कुञ्ज भवन गिरधरन ।
लटपटी पाग छूटी अलकावलि घूमत नयन सोहे अरुन बरन ।

**आचार्य श्री गो० ति० गोविन्दलालजी महाराज को संक्षिप्त जीवन परिचय—**
तिलकायतन में तीन गोविन्द भये और वे तीनों कार्तिक मृगसर पौष मास में । प्रथम गोविन्दजी विट्ठलवर सों गोद आये ये कार्तिक में जन्मे कर्मठ कार्यकर्ता हते दूसरे आप अगहन मास में जन्मे । यह महिमा वारो मास है । यामें गोविन्दजी श्री गुसाईंजी के द्वितीय लालजी तथा सप्तम लालजी तथा चतुर्थ लालजी भये । तासों ये महिमा वारे मृगसर मास में तीनों आचार्यन के प्रतीक रूप आप गोविन्दलालजी मृगसर में प्रकटे तीसरे गोविन्दजी पुष्टि पोषक, रसपोषक पौष में बाल भाव भावित भये ।

द्वितीय पुत्र गोविन्दजी षडैश्वर्य युक्त राजयोग लिये अष्ट व्याकरण ज्ञाता भये । वर्तमान गोविन्दजी आप राजयोग लिये भये तथा पुष्टिमार्गीय सेवा रूप आठ प्रकार की व्याकरण शब्द सिद्धि आप में निहित है ।

सप्तम पुत्र घनश्यामजीवत् विरह वैराग्य रूप हैं । गुसाईंजी ने मधुराष्टक की टीका उनके ही लिए कीनी हती । उनकौ स्वभाव परिवर्तित भयौ टीका पढ़िकै । षडैश्वर्य में ये वैराग्य स्वरूप हुते । वर्तमान गोविन्दजी भी त्याग वैराग्य स्वरूप प्रभु विरह कातर श्रीजी की सुख व्यवस्था ने लीन जनहित में सदा तत्पर रहे है ।



चतुर्थ पुत्र श्री गोकुलनाथ जी, जिनने माला तिलक रक्षा करी । साहजांहगीर प्रबल सत्ताधारी सों संघर्ष में विजय प्राप्त करी । गोकुल परित्याग करवे की धमकी दीनी । तथा पुनः गोकुल पधार सेवा यथावस्थित जमाई । और अनेक चमत्कार किये ।

वर्तमान गोविन्दलाल जी राज्य सत्ता सों जूझिकै श्रम करि माला तिलक रुप पुष्टि मार्ग के मूर्धन्य स्थान की रक्षा करी । सोरोंजी की भांति मुंबा नगरी निवासी भये । कश्मीर की भांति दिल्ली जाय पुष्टिमार्गीय वैष्णवन की रक्षा करि पुनः नाथद्वारा पधारे । उजड़े गोकुल की भांति उजड़े नाथद्वारा कूँ फेरि वैभव पूर्ण कियो । तासों आप महिमा वारे मृगसर में प्रकटे । सप्तमी तिथि या लिये लीनी श्री गोकुलनाथ जी की तरह श्रम करिकै विजय पताका फहराई तथा प्रभु सुखार्थ मनोरथन की झडी लगाई ।

श्री नाथद्वारा के तिलकायतन में चौदहवे रत्नरूप आप मणिरूप गो० ति० गोवर्धनलाल जी के पुत्र गोस्वामी दामोदरलाल जी के एक मात्र पुत्र संकर्षण रूप होयवे सों गोवर्धनलाल जी के समक्ष राज्य श्री विभूषित भये । वि० सं० १९८४ में आज के दिन नाथद्वारा में प्रातः काल प्रकटे । आपको प्राकट्य होते ही गोवर्धनधर श्रीजी एवं नवनीत प्रिय में विशेष सामग्री अरोगी । तथा दिन भर दोनों भण्डारन में यह आज्ञा दीनी कोई भी विमुख न जाय । भले ही वो फिरि फिरिके नग लै जाय । ता महोत्सव एवं उल्लास कूँ देख गन्धर्व अप्सरान के नृत्य की भांति उत्थापन में जैजैवन्ती की बधाई गाई गई । जो बधाई वितरण की परिचायिका है । यह आनंद एक मास लौं रह्यौ ।

माई आज तो गोकुल गाम कैसो रह्यो फूलिकै ।
.................................................
नन्द राय देत फूले नन्ददास बोलि कै ॥

या बधाई की भांति नाथद्वारा नगर में प्रत्यक्ष शोभा तथा वैभव दीखन लाग्यो । वर्धमान चन्द्रमा की भांति नवजात शिशु सुन्दर सुडौल बढ्यौ फेरि वि० १९८८ में रतनचौक में आपको मुण्डन भयौ तथा आपको नाम गोविन्द धर्यो गयौ । वि० १९९० में आपके पितामह श्री गोवर्धनलाल जी लीला प्रवेश करि गये । तथा पिता श्री दामोदरलाल जी हू वि० सं० १९९२ श्रावण शुक्ला पूर्णिमा कूँ लीला प्रवेश करिवे पर गोविन्द प्रभु निपट निस्साधन निस्सहाय से भये । फेरि तो श्री गोवर्धनधर एवं माता कोही लाड मिल्यो । या पर राज्य के कुचक्र बदनीयती वारेन कोहू प्रकोप भयो । सो नाथद्वारा नष्ट भ्रष्ट कियो भी । वि० १९९५ में आपको उपनयन (जनेऊ) भयो तथा आप तिलकावत पदासीन भये । नाथद्वारा के शुभ

दिनन की आशा बेल पुनः लहलहावे लगी। वि० १९९५ चैत्र वदी ५ को जनेऊ तथा जेष्ठ शुक्ला १० को गादी बिराजे को मनोरथ भयो। जामें पूर्व में सादा केसरी वस्त्र आमते पर आपके गादी विराजवे पर रूपहरी पठानी किनारी के वस्त्र धराये गए। और सब नित्यवत् सेवा भई। आप जब से गादी विराजे तब से आज तक धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक कार्य करि रहे हैं।

**धार्मिक**—प्रभु सुखार्थ मनोरथ तथा सेवा क्रम खूब करि रहे हैं। वि० सं० १९९८ में आपने अपने जन्मदिन पर सोना को बंगला में नवनीत प्रियजी पधराय मनोरथ कियो। वि० २००५ में नाव को मनोरथ जलविहार सब स्वरूपन में होयवे सों आपने हू कियो। श्रीजी में सं० २००९ में श्रीनाथ जी, श्री नवनीत प्रिय में हीरा को टिपारा को जोड़ भेंट करि सतत सेवा में राख्यो। सं० २०११ फागण के महिना में नवनीत प्रिय को विट्ठलेशराय जी मन्दिर पधराये। छप्पन भोग कियो। प्रथम २०१४ में श्रावण वदी १२ सोना का हिंडोला। फागन में गुलाल कुण्ड स्थाई कियो तथा आ० कृ० ५ हरिराय जी के उत्सव कों सांझी को मनोरथ स्थाई कियो। अनेक पिछवाईयां बनवाय रस लीला हेतु कराई। अपने जन्मदिन की भरत की, बड़े बाबा के जन्मदिन की भरत की, कसीदा की कर्णाटकी नृत्य की, मोती को सिलमासितारा को बंगला। कांच को बंगला। नाद की पिछवाई कुञ्ज की पिछवाई वल्लभाचार्य प्राकटय की पिछवाई पवित्रासातस्वरुपन कूं धराये सो पिछवाई। सप्तस्वरूपोत्सव की पिछवाई हिंडोरा सिलमासितारा को। आदि अनेक प्रभु सुखार्थ सिद्ध कराई। सप्तस्वरूपोत्सव में कई आभूषण भेंट कियो जो आज भी धराये जांय।

बि० २००२ में मृगसर मास में आपको विवाह तृतीय गृह बलभद्र लालाजी की कन्या रसिक प्रिया के साथ नाथद्वारा में भयो। आपके विवाहोपरान्त प्रति वर्ष धार्मिक कार्य होते ही रहे। कई बार १०८ भागवत पाठ। गायत्री महायज्ञ सर्वोतमस्तोत्र महायज्ञ। सुन्दरकाण्ड गणपति, महादेव, देवी आदि के अनेक सतचण्डी। सहस्रचण्डी आदि। जिनमें शतशः ब्राह्मणन को अतुल दान सेबा कराय धार्मिकता सिद्ध करो। सहधर्मिणी बहूजी भी आप जैसी ही दान पुन्य में सबल हैं।

**प्रश्न**—क्योंजी पुष्टिमार्गीय आचार्य होयके अन्य देवतान के प्रयोगादि क्यों कराये।

**उत्तर**—जब से नाथद्वारा निर्माण भयो तब से नाथद्वारा में सभी देवता विराजमान हैं तथा उनकी सेवा पूजा नाथद्वारा ठिकाने सों होय है। सो ये जब गादी पर आसीन भये इनने काऊ देवता कूं दूसरो न मानि कै प्रभु सेवक मानि उनकूं तथा उनके भक्तन कूं दान पुण्य किये एक धर्माचार्य सब को राज्य में स्थान दे हैं। एतदर्थ आप कराते रहे हैं।

आपने वि० २०२३ में अधिक श्रावण में सप्तस्वरूप पधरायें जामें सात मनोरथ पूर्ण किये श्री जी सन्निधी सब स्वरूपनकों पलना झुलाये नाथूवास गोशाला में नवनीत प्रिय कूं पधराय छाक को मनोरथ कियो लालबाग में बड़ो मनोरथ सात झूलान को कियो। सब स्वरूपन को एक साथ पवित्रा धराये सब स्वरूपन के साथ नवनीत प्रिय के चौतरापै बंगला में मनोरथ किये। छप्पन भोग आदि जब जब अधिक मास में तथा प्रभु प्रेरणा करें तब तब मनोरथन को अनुपम लाभ वैष्णवन को दिवायो। जैसे उर्ध्वभुजाप्राकटय, द्वादश निकुञ्ज, कमल चौक में पांच स्वरूपन के संग शरद् उत्सव ऊष्णकालीन खसखाना, जलविहार, गुप्त मनोरथ, मेवा, केशर आदि के बंगला कई बार किये। या प्रकार द्वारकाधीश जी विट्ठलनाथ जी मदन मोहन जी नवनीत प्रिय तथ श्री गोवर्धन धर श्रीनाथ जी इन मनोरथन के साथ जो पूर्व में द्वादश मास के उत्सव होयवे सो होय ही हैं छप्पन भोग कई बार किये। आपकूं धार्मिक मनोरथन में उत्साह है।

षड्दल, द्वादशदल कमल नवनीत प्रिय को निजी बगीचा में पधराय रितु अनुसार कई बार कई मनोरथ किये। आगेहू करेंगे। आप जब जब भी परदेश पधारे वहाँ ब्राह्मण, विद्वान, कलाकार, संगीतज्ञ को सम्मानें एवं श्री प्रभुन के लाड लडाये। जहाँ जो स्वरूप तथा जैसी सम्प्रदायन की परिपाटी वाके अनुसार श्रद्धा सहित सेवा करें।

**राजनीतिक**—

आप जब से तिलकायत पदासीन भये तब से राजनीति में अनेक संकटन को सामनो कियो। साहित्य सम्मेलनादि में प्रभूत द्रव्यदान, साधु सम्मेलन में खूब दान दियो। राजनीति में आपके विरोधीन ने आपको हर तरह फंसानो चाह्यो पर आप ऐसे वीर भये जो दिल्ली में आठ दस वर्ष संघर्ष करिकै विजयी भये। तथा अपनी धारी वस्तु लै करि ही आप पधारे। जैसे गोकुलेश प्रभु ने। राजस्थान के समस्त नेतागणन के साथ बिराजकै रसाला के चौक में महा सभा करि अपनो आचार्य पद समलंकृत कियो। उपदेश दै सबन कूं सन्मार्ग दिखायो। जामें सुखाड़ियाजी राजस्थान के मन्त्री मिनष्टर आदि। अनेक नेतागणन कूं सन्तुष्ट करि अपनी सफलता को चमत्कार दिखायो।

**आर्थिक**—

त्यागी, विरागी, भक्तन को एवं आचार्यन के लिए एकमात्र धन है वो प्रभु सुख है। तासों ही प्रभुन कों निधी कहें। आपने गोवर्धनधर श्रीनाथजी एवं नवनीत

प्रिय की सुन्दर सुदृढ़ सेवा बनी रहे और अर्थ व्यस्था तथा सेवा में प्रतिबन्ध न पड़े या लिये भविष्य कूं सामने राखि नाथद्वारा के वयोवृद्ध वरिष्ठ नगर के गण्यमान्य सेवकन में पुराने सच्चे सेवकन को अर्थव्यवस्था दै आप दूर से द्रष्टा बने। उनमें पारिख मन्नू भाई मदनसिंहजी गौरवादि जब असफल भये तो भारत के प्रसिद्ध धनपती सेवकन की कमेटी बनाई। उनके कथनानुसार एक बृहत् कमेटी वि० २००८ में बनाय सबकी प्रार्थना पर सर्वाधिकार दीयो। परन्तु कमेटी वारेन ने श्रीनाथ जी एवं नवनीत प्रभू के सेवकन कों तथा नाथद्वारा नगर के व्यक्तिन को हेय तथा नगण्य माने। तब तिलकायत स्वयं सब लीला देखते रहे; बाद में दूरदर्शिता सों अपुनो सर्वाधिकार सुरक्षित तथा प्रभु सुख स्थिर बन्यो रहे तासों आपश्री ने टेम्पल बोर्ड (मन्दिर बोर्ड) की स्थापना कराई। आप अध्यक्ष बने। अर्थव्यवस्था सेवा व्यवस्था सुन्दर चलाई। प्रभु सेवा ही आर्थिक जीवन को सार है। ये आपको आदर्श रह्यो।

**सामाजिक—**

वि० सं० १९९५ में गादी विराजते ही नाथद्वारा नगर को अभ्युदय कामना सों तथा समाज सुधार होय या भावना सों आपने १९९७ में साहित्य सेवा हेतु बडोबाग की जमीन दैकर पर्याप्त मुद्रा प्रदान करि सर टी० राघवाचार्य द्वारा शिलान्यास करवायो। सुन्दर भवन तथा नीचे चिर स्थायित्व हेतु दुकानें बनायवे की आज्ञा दीनी जासों वाचनालय, पुस्तकालय पाठशाला सों शिक्षित नगर निवासी कूं लाभ मिले और संस्था चलती रहें। व्यास बाग में 'मार्डन स्कूल' चलायवे की आज्ञा दै अपनो बाग समाज हितार्थ विनियोग कियो। मोतीमहल के पास चौपाटी में वचनालय तथा बैंक स्थापित कराय २०१४ में आपने उद्‌घाटन कियो। २००४ में बड़े बाजार की पुलिस लाइन में सिन्धी ब्रांच स्कूल के लिये जगह प्रदान करी जो आज भी विद्यमान हैं। २०१४ में जेल वारे स्थान कों कन्याशाला हेतु प्रदान कर बालकन को हित कियो। १९९९ में आपने जनता के खेलकूद हेतु पब्लिक पार्क (गोविन्दोद्यान) खुलवायो। १९९६ में जनता के हितार्थ सुन्दर विलास बाग में कृष्णकुण्ड करवायो तथा १९९८ में वल्लभपुरा निर्मित कराय जमीन दीनी। २००५ में बसनजी लालजी की धर्मशाला, २०१४ में मणिभाई की धर्मशाला, सिंधी धर्मशाला एवं केशरीसिंह राणावत द्वारा बड़े बाग में धर्मशालायें बनवाई। आपने २००६ में विद्याविभाग प्रेस की उन्नति हेतु शुद्धाद्वैत विद्यापीठ की स्थापना करी। तथा सुन्दर ढंग से श्रीनाथ पंचाङ्ग टिप्पणी जी निकरवे की योजना बनाई। गोविन्द वाचनालय गोविन्द पाठशाला हू चालू करी।



वि० २०२३ में सात स्वरूप पधरायवे बड़े मनोरथन में दर्शन लाभ जनता को न होवे पर आपने २०२३ आश्विन कृष्णा ५ को मणिकोठा बन्द कर भेदाभेद मिटाय सबन को समान दर्शन होय तासों डोलतिवारी में दर्शन की व्यवस्था कराई। २०२४ को डोलतिवारी में दर्शनार्थीन को कष्ट देखिके कीर्तनिया गली के तीन बड़े द्वार बनवाये।

वि० २०२३ में श्रीजी में सात स्वरूप पधारे हते। अनेक यात्री प्रसाद पायवे में कष्ट पावते। तासों आपने समाधानी कारोबार २०२७ के नवीन वर्ष सों कमल चौक में शाकघर की तिवारी में स्थापित करायो। वि० २०२४ मृगसर वदी ५ को मंगला के समय आरती कमल चौक में आवनी सुरू करी तासों सब जने लाभ लै सकें। धक्का मुक्की गली में होती सो बन्द भई। वि० २०२४ भाद्र पद शुक्ला ९ को कमेटी के मेम्बरन कों अपने अधिकार को स्वरूप दिखावे हेतु ग्वाल एवं उत्थापन के दर्शन बन्द कराये। यद्यपि आप की इच्छा नहीं हती। पर कोइकों मन न दुखे, तासों आज्ञा दीनी। पर प्रभु श्रीनाथजी कौतुकी है माघ मास की बसन्त पंचमी कों विशेष जनता को आग्रह देखि आपने पूर्ववत् जनता के लिए सब दर्शन चालू किये। भेद-भाव मिटायवे हेतु २०२६ में वसन्त के दिन सों टिकिट के रूप में भेंटवारे मनोरथीन की सुविधा हेतु पटिया लगाय दर्शन की नई व्यवस्था कीनी। आप तो मौन रहे परन्तु गोवर्धनधर तो गोपीजन बल्लभ हैं। यहाँ की समस्त गोपीन ने पटिया तथा टिकिट व्यवस्था रुकवाय दीनी। आप चतुर शिरोमणि तिलकायत ने प्रभु की लीला देख गोवर्धनधर की इच्छानुसार पुनः समानता राखी। २०३२ में आपने तीज की मगरी में औषधालय हेतु स्थान देकर जन सुविधा दीनी। तथा कई कटरादि बनवाये। २०३३ में पायगा में यात्रीन के हेतु क्वाटर बनायवे की आज्ञा दीनी।

कृष्ण बलदेव सुभद्रा की भांति आपकी तीन सन्तानें हैं। बलदेवजी बड़े बाबा की भांति दाऊजी, राजीव जी वि० २००५ पौष कृष्णा १ को प्रकटे आपको भी प्रभु मनोरथन को विशेष आग्रह तथा गुप्त मनोरथ आदि की भावनानुसार सेवा में चित्त राखें। आपके द्वितीय कुमार इन्द्रदमन राकेश जी २००६ फागण शुक्ला ७ मथुरेश जी के पाटोत्सव पै प्रकटे। आपभी सेवा शृंगार मनोरंजन में आसक्ती राखें। आपके एक बेटीजी वि० सं० २०१० ज्येष्ठ शुक्ला १२ को प्रकटीं। उनके जन्मदिन पर श्री गोविन्द प्रभु ने पदाधार पर शृंगार कियो। वह आज भी चालू है। केशरी पाग केशरी पिछोड़ा केशरी पटका को मध्य को शृंगार चत्रभुजदास को पद के भाव सों चालू है। पद :—

"आज बने नन्द नन्दरी नव चन्दन को तन लेप किये।"

पुष्टि पुरुषोत्तम नन्दराज कुमार एवं मर्यादा पुरुषोत्तमराम ये दोनों ही जब सों भूतल पै अवतरित भये तब सों लेकर आसुर व्यामोह लीला तक कष्टकारी, युद्ध संघर्ष ही करते रहे। कारण उनको अवतार दैत्यवध, भू भार उतारवे को हतो। आप स्वयं कष्ट सहनं करि भक्तन को अभय किये। याही प्रकार तिलकायत श्री गोविन्दलाल जी महाराज ने भी जब सों प्रकटे तब सों लेकै आज पर्यन्त स्वयं संकट सहि कर दूसरेन कों सुख पहुँचावन हेतु ही अवतार धर्यो। ताही सों आपके जन्म दिन को श्रृंगार पदन की अनुरूपता लिये या प्रकार है—

कुल्हे की पाग पर पेच अति जगमगै चमक रहि चन्द्रिका चन्दवारे।
लालढिग मटक मुरि भ्रोह की चटक पर मोति लरमाल उडुगन के तारे।
सघन घन कांति तन जटित भूषण दियत निरख छवि गिरि घटन दुख द्वंद दारे।
काछ कछ मल्ल हरिराय बेनी गुही पीत पट फहरत फेंट भारे।

या प्रकार आपके अनेक चरित्र हैं यहाँ संक्षेप सों वर्णन कियो है। आपके वचनामृत एवं चरित्र 'गोविन्दाचार्य' नामक बृहद् ग्रंथ में या लेखक द्वारा वर्णित हैं।

**मृगसर बदी ८**—गुसाईंजी विट्ठलनाथजी के दूसरे लालजी श्री गोविन्द जी (राजाजी) महाराज को उत्सव। ये बिट्ठलनाथ जी दूसरे घर के प्रधान आचार्य को उत्सव है।

देहली वन्दनमाल हांडी वस्त्र पीरे साटन के। चाकदार बागा किनारी को। ठाडे वस्त्र लाल। श्रीमस्तक पै कुल्हे। गोकुलनाथ जी वारो। जोड़ चमक को (घेरा) आभरण सब हीरा के। मोजा पिछवाई पीली साटन की। लाल हासियाँ वारी। जामें रुपहरी चौकडी वादला की। चोटी बनमाला को श्रृंगार। हाँसत्रबल आदि सब जड़ाऊ। राजभोग में बधाई गवे। दिन भर कुल्हे के भाव के पद गवें। सामग्री मनोहर।

**विशेषता—**

आप विट्ठलनाथजी के प्रधानाचार्य होयवे सों श्री स्वामिनी जी की आपके यहाँ विशेषता रहैं। जमनाजी के भाव सों आपके यहाँ द्वादशी को भोगमाला। श्रृंगार आवे। तासों श्रीजी में केशरी पीत वस्त्र साटन के धरें। तथा आप विट्ठलवर को स्वरूप रास रसिक सिरोमणि के भाव सों हीरा के चाँदनी की छाया जैसी आभरण धरै। आपके घर के जितने उत्सव होंय उनमें श्री विग्रह हीरा के आभूषण धरें।

**परिचय**—गोविन्द जी को जन्म वि० १५९९ आज के दिन गोकुल में भयो। तहाँ ही उपनयन १६०८ में, चैत्र सवत् १६१५ में विवाह। आप अष्टव्याकरण के ज्ञाता हैं।

आपको स्वरूप राजकीय तेज लिये भये हो। आप ही के पुत्र श्री कल्याण राय जी। तथा पौत्र हरिराय जी भये। जा समै आप श्रीनाथ जी में श्रृंगार करते हते। ता समै आपके पुत्र रत्न भये। तब श्रीनाथ जी ने बधाई माँगी। पुत्र को नाम धर्यो और आज्ञा किये गोविन्द तेरे कल्याण भयो है बधाई दै। तब वे श्रृंगार करते दूर भये। आप आज्ञा किये बधाई पहले दै, श्रृंगार करके चल्यौ जायगो। तब आपने अपने श्रीहस्त सों वीटी निकास भेंट धरी। ताको पन्ना श्रीनाथजी आज तक मस्तक पर धरें। तथा वीटी के खोखा के दर्शन आज भी विट्ठलनाथ जी में होय हैं।

आपको स्वरूप षडैश्वर्य में एश्वर्य रूप है। आप सदा उत्थापन की सेवा करते। निरंतर सेवा में तत्पर रहते। जब कल्याणराय जी को विवाह भयो घुड़चढ़ी भई तब आपके नेत्र प्रभु वियोग सों भरि आये। अश्रुपात देखि गुसाईं जी पूछे बाबा काय को संताप करें। तब आप आज्ञा किये उत्थापन की सेवा छूटेगी। गुसाईं जी आज्ञा किये तुम सेवा करो। मैं जाय परणाय लाऊँगो तब आप बहुत प्रसन्न भये भक्त गाये भी हैं।

यत्पादाम्बुरुह ध्याना द्वो बिन्दं विन्दते जनम्
वन्दे गोविन्द रायं तं विट्ठलेश मुदावहम्।

आपने विट्ठलेश के विविध सेवा बन्धान उत्सवादि किये तथा श्रीजी में लाड़ लड़ाये।

**मृगसर बदी ८ नवनीत के यहाँ को पहलो मंगलभोग**—श्रृंगार वस्त्र श्याम साटन पे सच्चे मोती की बेल तथा बूटा पाग हू सूथन हू ऐसो ही पिछवाई श्याम धरती पै रूपहरी फूल किनारी की। आभरण सब मोती के। छोटो श्रृंगार वस्त्र ठाडे लाल लूम कतरा मोती को जेमनो। कर्णफूल को श्रृंगार आज की सेवा कृष्णावतीजी की आडी की है। पद तथा श्रृंगार हू गो० दामोदर लाल जी महाराज की सूझ-बूझ को। तथा सामग्री हू बेगी आवै। पद या प्रकार मोतीन के भाव के—

**मंगला में**—व्रत चर्या; हरि जस गावत चली व्रजसुन्दरी नदी जमुनाके तीर। **श्रृंगार मैं**—व्रतचर्या; **राजभोग में**—मोती तेही ठौर सब ठारे। **भोग में**—

घूंघट में मोहन को मुख जोवै। चन्द बदनी मृग लोचनीराधे माला मोतिन की लर पोवे

संध्याति में—ते मेरी मोतिन की लर क्यों तोरी।

शयन में—आज बनी वृषभान कुँवर कहत दूनी।

मानव गैर में मोती के भाव के पद होंय।

## विशेषता

जब बारह ही महीना मंगल भोग आमें फिर ये शीतकाल में मंगल भोग कायको आवे ?

बालक कों पौष्टिक पदार्थ शीतकाल में विशेष खवावें सों बालक पुष्ट और स्वस्थ रहे। यों मंगल भोग में सखडी तथा विविध प्रकार के व्यंजन विशेष में आवे। नित्य नेग मंगल भोग तो होय ही है। पूर्व में समस्त बालकन के घर सों जो सात घर कहे जाय है उनके घरन की बहू बेटी अपने प्यारे प्रभु को नित नूतन वस्तु बनाय प्रभु को अरोगावे। ताको ही मंगलभोग कहैं। ये मंगलभोग शीतकाल में होय है। जैसो श्रृंगार तैसो पद गवे। अरु मंगल भोग में धूपदीप न होय। मंगल भोग में सखड़ी विशेष आवे और व्यंजन भी। अब नवनीतप्रिय के यहां के दो तथा विट्ठलवर के यहां के दो ही होय हैं। ये सब घरन सों जैसे साकघर दूध घर सखड़ी रसोई बाल भोग सों आवे। वो प्रकार है। ये सहचरी अपनी मनोरथपूर्ण करन अरोगावे; काहे ? गोप मास जो है तासों शाक घर की चार कटोरी आदा, नीबू, पाचरी, टेंटी, दूधघर सों माखन मलाई। खासा भण्डार सों—बूरा मिश्री गुड़ लोणी घी। सखडी रसोई सों—उपलेटा भरमा, बेंगन भरमा भुजेना चकती दोशाक, आखे बैंगन को तथा मिरच कारी को। रोटी सादा। बाल भोग सों खीर अरु राजभोग में उडद की रोटी, गुड़ बूरा, लोणी, घी या प्रकार जितने मंगल भोग होंय वामें फिरती सामग्री ज्यादा बहुत प्रकार की तथा विविध व्यंजन एक से नही, बेंगन भात आदि अनेक प्रकार के।

मृगसर बदी १० हरी घटा—वस्त्र वागा घेरदार पाग सूथन खण्ड पिछवाई गादी तकिया चौकी ठाड़े वस्त्र सब हरे साटन के आभरण पन्ना मोती के छोटो श्रृंगार कर्णफूल को वेंग होय आज की सेवा संजावली जी की आडी सो। पद हरे हरे के भाव के मंगला हरि तुम हरे केवल चीर। श्रृंगार—वसन हरे हरि कदम्ब चढ़ाये। राजभोग मेरो माई हरि नागर सों नेह। उत्थापन—हरि सों एक रस प्रीत रहीरी। भोग मैं गैयां दूरि गईं टेरो जु कान्ह। आरती—आवत मोहन मान जु हर्यो। शयन—मथुरा नगर की डगर में। मान—हों तो वार डारो री तन मन।



## विशेषता

घटा वाय कहें हैं जो एक रंग है जाय। और आकाश चारों तरफ रंग विरंगे बादलन सों सूर्य को ढकिदेय। अन्य गौ. बालकन के घरन में श्रावण में तथा शीतकाल में ही होय। ताको कारण यह है कि वर्षा रितु के बरसवे वारे दिन के समै में बादर उठे उन्हें गर्भ कहें वे बादर भिन्न-भिन्न रंग के होयवे सो यहाँ भिन्न-भिन्न रंग की द्वादश घटा द्वादश कुञ्ज के भाव सों होय है। पहले चार ही होतीं। गो० ति० गोवर्धनलाल जी ने आठ बढाईं। पूर्व में चार चार यूथाधिपान के भाव वारी सुनी है। सर्वप्रथम हरी होय है। दूसरी श्याम, तीसरी लाल, चौथी पीरी। स्वामिनी जी तथा श्याम सुन्दर को ऐक्य होयबें सों नीलपीत हरी बन जाय है तासों सर्व प्रथम हरी घटा होय है। ये जितनी घटा होंय है उनके भाव श्री दामोदर लाल जी महाराज ने स्थिर कराये। जो अद्यावधि होंय है। मृगसर पौष आधमआध में बारह घटा होंय जिनमें कछु ऐच्छिक है। मृगसर में पाँच होय हरी कारी लाल केशरी चार चांद की। पौष में सफेद जरी की पिरोजी बैंगनी अधरंगा तथा माघ में पीरी फूल गुलाबी सुनहरी जरी की होंय है।

अष्टछाप के पदनहू में घटा को वर्णन या प्रकार मिले—"राधे रूप की घटा" वार्ता साहित्य में हू वर्णन या प्रकार मिले है। [वार्ता आचार्य श्रीके सेवक श्री नारायण दास जी १९ वीं वार्ता प्रसंग]

प्रथम नारायण दास को ठाकुर जी ने अति सुन्दर दर्शन दीये। अति प्रसन्न ठाकुर जी को देखि कै नारायण दास ने कह्यो जो महाराज यह घटा काहे को उनई है न जाने कौन पै बरसेगी। तब आज्ञा किये "ये घटा श्री आचार्य महाप्रभुन की जहाँ सर्वस्व है वहाँ बरसेगी" तासों यहां विविध रंगन की घटा भईं तथा वे घटा पदन के अधार पै निर्माण भईं। आज हरे रंग सों हरे पद वर्णन भये।

द्वादश घटान की द्वादश कुंज जामें जा रंग की घटा वो कुंज मानसी। अरुण कुंज, हरित कुंज, हेम कुंज, पूर्णेन्दु कुंज, श्याम कुंज, कदम्ब कुंज, सिताम्बु कुंज, बसन्त कुंज, माधवी कुंज, कमल कुंज, चम्पा कुंज, नीलकमल कुंज। या प्रकार द्वादश कुंजन में द्वादश घटा।

मृगसर बदी एकादशी :—श्रृंगार एच्छिक परन्तु प्रायः ग्यारस कों खोप क्रीट सेहरा टिपारा धरें यामें रूमाल पटका गाती को तथा कूट के पटकादि भी धरें। जरीन के ठाड़े वस्त्रहू धरें। आज के दिन जड़ाऊ खोय धरें। कुल्हे पर रूमाल धरें। वस्त्र लाल फूल सुनहरी किनारी केन के वागा चाकदार। वनमाला को श्रृंगार ठाड़े वस्त्र हरी जरी के। पिछवाई भरत की भारी। आज की सेवा कुंजरी जी की ओर सों भई। ये ललिता जी की सखी हैं।

मृगसर बदी १२ [प्रथम द्वादशी]

आज सों मृगसर की दो, तथा पौष की दोनों द्वादशीन में चार द्वादशी की चौकी मंगलभोग में आवें। जैसे मंगल भोग पूर्व में वर्णन कियौ। या प्रकार विविध सामग्री को चौकी कहें। ये चौकीन कीसामग्री वस्त्र शृंगार निश्चित हैं। जैसे उष्णकाल में पाँच अभ्यंग होंय विशेष भोग आवे वाही प्रकार सों पांच द्वादशी [माघ की प्रथम द्वादशी सहित] शृंगार तथा सामग्री [गुडकल की] अरोगें आज के मंगल भोग की चौकी में विविध सामग्री, नित्य के अतिरिक्त, अरोगें। तवा पूड़ी खराखरी, थूली ये सब चौकी नवनीत के यहाँ सों आवें।

**विशेषता**

शीतकाल में चार द्वादशी की महत्ता या लिये है श्री सूर्य द्वादशकलात्मक है उनकी पुत्री हू द्वादश कलात्मक होयवें सों द्वादशी कूं प्रधान सामग्री वेगी आवे तथा शृंगारहू निरधारित है हेमन्त रितु के दोमास होंय है तो दोनों मासन में चार द्वादशी गोपकन्यान ने माँ जमुना की विशेष सेवा करी उनकी ओर सूं नन्द राजकुमार कों सामग्री अरोगाई जाय। ये द्वादशी बारह महीना की श्री विट्ठलवर में द्वितीय निधी के यहाँ अलग भोग माला एवं सेचा होय। तासों श्रीजी में हूँ चार द्वादशीन की महत्ता लीनी है।

शृंगार पिछवाई बैंगनी। सुनहरी देहरा किनारी की साटन की। ठाड़े वस्त्र सफेद वस्त्र सादा बैंगनी घेरदार वागा। तामें फतवी सुनहरी जरी की पाग। मोजा सुनहरी जरी की कतरा जेमनो लूम छोटो हार पचलडा मोती को। आभरण मोती के छोटो शृंगार कर्णफूल को वेग होय।

**भावना**—ब्रजललनान ने ये चाह्यो जैसे आप श्रीस्वामिनी जी के वशीभूत हू के सुखदान करें तैसे ही हमारी इच्छा है। या सों गिरिराज स्वरूप श्रीजी के बैंगनी, वक्षस्थल पै फतवी सुनहरी जरी की स्वामिनीवत् धारण करें। भक्तन ने विपरीतरति एवं परस्पर मिलन के पदहू गाये हैं। यहां एक दो उदाहरण देत हैं। शीतकाल में आलिंगनबद्ध होय कें ओढ़ के बैठनो नीको लगे। हरिराय जी वर्णन करे हैं :—

"हिमकर सुखद सरसरितु आई अद्भुत शोभा बरनी न जाई।
प्यारी जू के फरगुल सौहै पीतम ओढे सरस रजाई।
परि गये परदा ललित तिवारी धरी अंगीठी सुखदाई।
बरत अंगार धूम अम्बर लौं सरस सुगंध रह्यौ तहँ छाई।
जब अति शीत कोमल तन व्यापत बैठ रहत उर सों उरलाई।
रसिक प्रीतम पिय प्यारी की छवि पर निरख निरख बलिजाई।



पौढे हरि झीनो पट दै ओट।
संग श्री वृषभान तनया सरस रस की मोट।
नील पीत दोऊ अदल बदल लेत भरि भरि अंक। आदि

अतः उभय रस स्वरूप हैं।

**मृगसर बदी १३ [श्री गुसाईं विट्ठलनाथ जी के सप्तमपुत्र घनश्यामजी को उत्सव]** :—देहली वन्दनमाला हांडी। वस्त्र लाल साटन के। वागा चाकदार किनारी सुनहरी को। कुल्हे जड़ाऊ। पन्ना की जोड। मयूर पक्ष को आभरण सब पन्ना मोती के। वनमाला को शृंगार कुण्डल मयूराकृति पन्ना मोती के। पद राज भोग में बधाई के गवें। दिन भर नित्य के तथा कुल्हे के भाव के। पिछवाई खण्ड सादा साटन को लाल दुहेरा किनारी सुनहरी को। मोजा हरे काम वारे सिलमा सितारा सों जटित सामग्री मनोहर। ठाड़ वस्त्र पीरे।

**विशेषता**

श्री घनश्याम जी को जन्म श्री गुसाईं जो विट्ठलनाथ जी के द्वितीय वहूजी पद्मावती जी की कोख सों वि० १६३८ आज के दिन गोकुल में भयो। आप को उपनयन गोकुल में १६३५ में भयो। आपकी छोटी अवस्था में ही आप के मातु श्री पद्मावती जी लीला प्रवेश करवे सों श्री गिरधर जी के वहूजी श्रीभामिनी जी ने लालन पालन कियौ। तथा अति स्नेह सों राखे। आपको मातृ विरहानुभव विशेष न होय यासों पिताश्री गुसाईं जी ने मधुराष्टक की टीका कीनी। वाके पढ़िवे सों आप के स्वभाव को परिवर्तन भयो आप षड़ैश्वर्य में वैराग्य स्वरूप हते। श्री मदनमोहन जी के चोरी में चले जायवे पर आपने भोंयरामें वियोगानुभव कर लीला प्रवेश कीनों। आपके माथे सप्तम निधी मदन मोहन जी विराजे ये पूर्वजन के यज्ञस्वरूप यज्ञनारायण भट्ट जी से प्राप्त भये हते।

मन्मथ मोहन के विरह प्राण तजे घनश्याम।
तिहि दुःख दामोदर जु फिर तुरत गये निज धाम।

तिलकायत दामोदर जी ने भी आपके और मदन मोहन जी के चोरी में पधारवे सों देह त्याग कीनो पुनः नाथद्वारा में शाकधर में बाई के पास ये स्वरूप प्रगट मिले। हरिराय महा प्रभू ने इनके चरित्र में वर्णन कियौ। तासों ही आज के उत्सव नायक की ओर सूं शृंगार मोर पक्ष के कुल्हे को जोड़ धरें मयूर वैराग्य होवें सो धरें। अनुराग प्रभु में हतो मधुराष्टक की टीका के कारण लाल वस्त्र धरें। उभय स्वामिनी भाव सों पीरे ठाड़े वस्त्र धरें जो मदनमोहन जी के दो स्वामिनी बिराजें तासों।

**मृगसर बदी १४**—शृंगार ऐच्छिक आज चाकदार वागा हरे साटन के धरें। तथा सोना के आभरण श्री मस्तक पर पगा धरें। शृंगार मध्य को भयो। ठाड़े वस्त्र धरें पगा पै मोर चन्द्रिका सादा बाला धरें तथा मोजा पगा गहरे गुलाबी धरें।

आज ये पद विशेष में होय—

सोनो शीतल लाग्यौ रैन विदा भई जानी।
मिल रस रंग प्रेम आतुर है चार जाम पिय जाग्यौ।
करि मनुहार बहोरि हों पठई अधर सुधारस भाग्यो।
रसिक प्रीतम प्रिय वे बहुनायक तेरे प्रेम रस पाग्यौ।

**मृगसर बदी ३० श्याम घटा**—आज वेग होय आज गादी तकिया खण्ड पिछवाई। ठाडे वस्त्र, पाग, वागा घेरदार, सूथन चौंकी बगैर मोजा सब श्याम बिना किनारी के। आभरण हीरा, मोती के। गोल चन्द्रिक रुपहरी चमक की कर्णफूल। धवल हीरा की शीशफूल बगेर बाजू पहुँची कडा चरणन में हीरा के। छप्पन भोग की भट्टी पूजा होय अधिकी में सेवक नहावें। बाल भोग के लिये।

**विशेषता—**

आज दिनभर श्याम नाम आवे सो पद होंय तथा राजभोग को पद बारह महीना में आज ही होय और श्रीमद् भागवत्ताधार पै उराहने को तथा भावपूर्ण श्रृंगार के आधार पै पद गवें।

मंगला में—शीततन लागत भारी। श्रृंगार होत में—श्याम नाम वारे। श्रृं. सन्मुख में—मोहि दधि मथन दै गोविन्द। ग्वाल में—श्याम लग्यौ संग डोलै। राजभोग में—महर आन लै पहचान ढोटा और को कि तेरो। उत्थापन में—मेरे जीवन सुजान कान। भोग में—मीठी मीठी बतियन करन आये। आरती गोवर्धन चढ़ि टेरी हौ गौंग बुलाई धूमर धौरी। शयन में—अरी हो श्याम ही रंगरंगी। पोढवे में—पौढे श्याम श्यामा संग।

बारह महीना में आज ही के दिन पद होय वे श्याम घटा के भाव के राजभोग में। "ध्वान्तागारेधृतमणिगण स्त्रार्थमङ्क प्रदीप" के आधार पै।

**मृगसर सुदी एकम्**—ऐच्छिक श्रृंगार। आज पीरे साटन पर लाल टिपारा धरें तथा जोड गुलाबी मीना के आभरण। वनमाला को श्रृंगार। कुण्डल, चोटी, पिछवाई भरत की। सिलमा सितारा की। ठाडे वस्त्र जरीके हरे।

भक्तन ने द्वादश घटान को भाव निम्न प्रकार मान्यो है—

(१) हरी—श्याम हरित द्युति होय। (२) पिरोजी—समुद्र लहर पदाधार
(३) पीली—प्रीतम प्रीत ही सो। (४) श्याम—कृष्ण सरूप।



(५) हलाल—अनुराग रूप (६) सफेद जरी—चन्द्रप्रकाश धवल यश
(७) अमरसी—स्वामिनीजी को अंग (८) सुनहरी जरी—सोना के महल में
(९) बैंजनी—गिरिराज के भाव सों (१०) गुलाबी—विशाखा जी
(११) अधरंग—पद के भाव सो (१२) चार चाँद पदाधारपै।

**मृगसर बदी दूज**—श्रृंगार चार चन्द्रमा को बेगी होय। वस्त्र सफेद जरी के घेरदार बागा, सूथन, मोजा, पाग ठाडे वस्त्र मेघ श्याम आभरण हीरा मोती के छोटो श्रृंगार। कतरा अर्ध चन्द्रमा को शीशफूल में चन्द्रमा वक्ष स्थल पै। चन्द्र हार पिछवाई में चन्द्रोदय को चन्द्र पिछवाई सिलमा सितारा की दोनों तरफ ब्रज ललना दुलाई ओढे श्रीजी के संग दुलाई में दोनों और वृक्षन में पंछी; रात्री के कारण सोते भये जमना पुलिन आदि सुन्दर तारा छिटके भये। कलात्मक खण्ड जैसो अलक धरें।

**विशेषता—**

गोस्वामी तिलक श्री गोवर्धनलाल जी महाराज ने चि० दामोदरलाल जी बावा साहब के कहिब पर पद के आधार पै ये श्रृंगार दामोदरलाल जी की सूझ बूझ को वि० सं० १९७४ आज के दिन कियो और वह स्थाई भयो।

**भावना**—यशोदाजी ने चन्द्रमा बालपने में दिखाये आप मचले तब आपके वक्षस्थल पै शीश पै तथा पिछवाई आदि में चार चन्द्र दिखाये अथवा स्वामिनी जी नन्दालय में आधे घूँघट सों प्राण प्यारे के दर्शन करें तासों चन्द्र सम मुखार बिन्द के भाव सो ये श्रंगार कियो। आज दिन भर चन्द्रमा के भाव के पद होंग हैं। जामें दो तीन पद तो बारह महीना में आज ही होंय।

महात्म्य—जय-जय श्री वल्लभ चन्द। जगायबे में— प्रात समै उठि सोवत सुत को वदन उघार्यो नन्दन। मंगलभोग—हा हा लेही एक कोर। मंगला सन्मुख—चमक आयो चन्द सो मुख जब कुंजनते निकसी। शृंगार सन्मुख—आज नन्दलाल मुख चन्द नैन। राजभोग सन्मुख—अधो मुख नीलाम्बर ते ढाक्यो। उत्थापन—आधि आधि अँखियन चितवत। भोग में—चन्द्रमा लटबारी मानो सांझ समै। आरती—आवो मेरे गोकुल के चन्द। विमल जस वृन्दावन के चन्द को। शयन में—बनिठनि कहा को चले ऐसी कौन। मान में—तेरे मनायवे ते माननी को लागत। पौढवे—अब पौढन को समय भयो।

रस लीला में भावनात्मक पद ये हैं जो आज होंय—**यशन के पद को भाव**—परकीया के यहां पधार रहे हो। ऐते लगे जैसे दूज को चन्द्रमा सब दर्शन कर चाहें परि आप दुरें प्रकटें। या प्रकार सखी कहै

है—वह परकीया है । सबरी ठकुराई । निकासि लेयगी । वनि ठनि कहाँको चले ऐसी को मनभाई सांवरे कन्हाई । नन्ददास प्रभु यह न बनैगी निकस जाय ठकुराई ।

ऐसो ही राजभोग में राग टोडी में प्रभुनन्द राजकुमार के पार्श्व में दो सखी चन्द्रावलीजी एवं स्वामिनीजी आधी दुलाई ओढे खड़ी है । आपने अलक धरि राखी है । लता पतान सों आच्छादित मुख ऐसी त्रिभुवन सुन्दरी आप श्री स्वामिनी हैं । आधो मुख नीलाम्बर ते ढांक्यो विथुरी अलक सोहैं । भोग में— चन्द्रमा लटवारी मानो सांझ समय उदित नृत्य करन ।

**मृगसर शुक्ला ३**—श्रृंगार ऐच्छिक । वस्त्र केसरी साटन के । वागा चाकदार फूल वारे दुहेरा किनारी के । पटका छोर को सेहरा जडाऊ तुर्रा लूम मोती के । चोटी जेमनी । मोजा केसरी । आभरण जडाऊ । कुण्डल । वनमाला को शृंगार । ठाडे वस्त्र । मेघ श्याम । कस्तूरी की माला गुंजा कली । भारी श्रृंगार कुण्डल जडाऊ । पिछवाई भरत की व्याहला की चँवरी में स्वामिनीजी ठाडे गठ जोडा बांधे सेहरा को श्रृंगार स्वामिनीजी के सखि चँवर मोरछल करती संकेत वन के भाव की नई । वर्तमान श्री तिलकायत गोविन्दलालजी द्वारा बनवाई । पद व्याहला के शीतकालीन सेहरा के भाव के मुगल छबि के पद की विशेषता—

तू है वनरा रे वन-बन आयो मो मन मायो रस उपजायो ।
अति उतंग नीली घोड़ी चढ़ि धर शिर सेहरो सरस सुहायो ।

**मृगसर शुक्ला ४ श्रृंगार ऐच्छिक**—वस्त्र हलके गुलाबी । साटन के वागा चाकदार श्री मस्तक पै दुहेरा पाग, दो रंग आभरण पीरोजा के बाल धरे । कर्णफूल चार मध्य को शृंगार ठाडे वस्त्र श्याम पिछवाई । भरत की गुमट में श्रीजी गुलाब की छत्री में बिराजे । बाहर बेल गिरराज वृक्षावली आदि । मोजा दुहेरे रंग के पाग हरी लाल दो रंग की । पद के आधार को शृंगार यह गोविन्द स्वामी की पाग के भाव को होय है । कई पद हैं—

सोहत नौ रंग दो रंग पाग लला के ऐसे लोचन लोने ।
मेरी मति राधिका चरण रज में रहो ।
यही निश्चय कर्यो मेरे मन में धर्यो भूल के कोऊ कछू और वह भल कहो ।
कर्म कोऊ करो यानहु अनसरो मुक्ति केवल गही वृथा देही दहो ।
रसिक चरण कमल पर आशधर पुष्टि पथ फल लहो ।



**मृगसर शुक्ला ५—दूसरो मंगलभोग**—वस्त्र गहर गुलावी घेरदार सुनहरी फूलवारे पाग हीरा की आभरण हीरा के छोटो शृंगार हीरा को त्रवल कर्णफूल श्री मस्तक पर गोल चन्द्रिका चमक की । मोजा टकमा हीरा के । अलक धरें । सामग्री मूँग की मगद की ।

**विशेषता—**

मंगलभोग में पूर्ववत् बैंगन भात, थूली, सीरा । भागीरथी बहूजी को जन्म दिन के शृंगार नियम के । गो. तिलक श्री गोवर्धन लालजी के पुत्र दामोदरलाल जी की बहूजी (भागीरथी बहूजी ) ने श्रीजी को मनोरथ कियो । श्रीहस्त सो सामग्री विविध अरोगाई । ये परम्परा आज भी चालू है ।

**व्रतचर्या—मंगला—**

देहो व्रजनाथ हमारी आंगी ।
नातर रंग विरंग होयगो कई बिरिया हम माँगी ।
या पद में सोना से जडी हीरा की पाग को वर्णन मिले है ।
शयन में—दो पद राग कान्हरा में—
शिर सोने के नूतन सोहे पाग पेच पर नग लगे ।
रतनारे भारे ढरारे नयनन देखत मूरछित मैंन जगे ।

ये पद बहूजी की आज्ञा सों भये । हीरा की पाग में सुन्दर श्री अंग के दर्शन भये सो नन्दरानी (राणी बहूजी) छवि निहार काहू की दृष्टि न लगे यासों बलैया लेत है । सारी सरस बनी जगरमगरयो जराव को टीको ऐसी बनी जैसे हीरा की कनी । दुलरी उपर तिलरी राजत बिच-बिच पदक भनी । श्री विट्ठल गिरधर छवि निरखत यह छवि कापै जात गनी ।

आज सों लेकर छप्पन भोग तक प्रतिदिन गोपीवल्लभ में फिरती सामग्री आवे । ताको कारण छप्पन भोग में बने वो विशेष सामग्री विविध रूप सों गोपी वल्लभ में आवे । बालक नई वस्तु देखि मांगे मचले रोवे तासों माता देवता की सामग्री निकासि के बालक कूँ देय सो छप्पन भोग की सामग्री में से नित नई वस्तु अरोगें ।

**मृगसर शक्ला ६—श्रृंगार ऐच्छिक** आज दूधिया साटन के वस्त्र चाकदार फेंटा । श्रीमस्तक पै पन्ना मोती के आभरण । वाम भाग कतरा मोर शिखा । मध्य को श्रृंगार कर्णफूल को । ठाडे वस्त्र श्याम धरें । पिछवाई भरत की भारी ।

झूमक सारी तन गोरे ।
जगमगरयो जराय कोटी को छवि की उठत झकोरे ।

रतन जटित के तरल तरोना मानो हो जात रवि भोरे।
दुलरी कंठ निरखि नकवेसर तिय दृग भये चकोरे।
मंद-मंद पग धरत धरनी पे हसत लसत चित चोरे।
श्यामदास प्रभु रस बस कीने चपल नयन की कोरे।

मृगसर शुक्ला ७ गुसाईजी विट्ठलनाथजी के चतुर्थ पुत्र श्री गोकुलनाथजी को उत्सव—देहली वन्दन माल हाँडी वारा जलेबी को। आज दिन भर झांझें बजें माला तिलक की रक्षा करी तथा आप श्री गुसाईजी के हृदयवत् माने गए तासों शयन आज सों भीतर होंय। वस्त्र बड़े बूटा के। रेसमी छाया के लाल कुल्हे। श्री गोकुलनाथजी वारी वार्ता प्रसंग में उल्लिखित जोड मयूर पक्ष को। कुल्हे जडाऊ आभरण उत्सव के ठाडे वस्त्र मेघश्याम। मोजा गोकुलनाथजी वारे जडाऊ। पिछवाई भरत की भारी। चीटी धरें वनमाला को शृंगार। हांस त्रवल और सब वस्तु जडाऊ गोपी वल्लभ जलेबी को।

**विशेषता—**

आप भक्त कामना कल्पतरु भये। कृष्ण दासी की प्रार्थना पै अच्छो महूर्त आयवे पै वि० सं० १६०८ आज के दिन श्रीगोकुल में प्रकटे। जब प्राकट्य की बधाई देवे गुसाईंजी कूँ वधैया गयो तब वैष्णवन सों आप आज्ञा किये। ये बालक चमत्कारी होयगो तथा नयो मार्ग स्थापित करेगो। ये बात श्री नवनीत प्रिय की सेवा करते कही (जननाशौच सों सेवा में विक्षेप पडवे पर आप या प्रकार आज्ञा किये।) आप सुन्दर सुडौल एवं चतुर हुते। आपको उपनयन गोकुल में सं० १६१६ में भयो तथा विवाह काशी में १६३१ में भयो। षडैश्वर्य में आप श्री तथा यश को उभयस्वरूप माने गए हैं। बँटवारे में आपके माथे श्री गोकुलनाथजी उभय स्वामिनी सहित बिराजें जो श्रीजी कहे जाय है।

जब सर्वप्रथम जन्माष्टमी आई गोवर्धनधर गोकुलेश को पालना में पधराये और स्वरूप प्रौढ़ लीला में डोल झूले। ये बाल स्वरूप ह्वैके डोल झूले। ये गुसाईंजी को हार्द जान गेलागेल (बीच) बैठाये। बालस्वरूप को पालने में बैठानो चाहिये और स्वरूप प्रौढ़ लीला में डोल झूलें पर एक कालावच्छिन्न सब लीला करें। ये बात गोकुलनाथजी जान गये। श्री स्वरूप सो आपने चतुर्विधलीला करी। राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक।

राजनैतिक—आपको चरित्र बहुत स्थानन में प्रकाशित है। यहाँ संक्षेप में कहै हैं—

जहाँगीराद्रक्षिता माला, ह्यधर्माद्रक्षिता जनाः।
चिद्रूपाद्रक्षितांधर्मः पातु वः पार्वतीपतिः ॥

साह जहाँगीर सों माला तिलक की रक्षा हेतु काश्मीर पधार चमत्कार दिखाय विजयपताका फहराई। अधर्मरत जीवन के धर्म रक्षा कर अपने-अपने धर्म पालन की स्वतन्त्रता दिवाई। चिद्रूप सन्यासी सों शास्त्रार्थ करके धर्म स्थापन करि पुष्टि पताका फहराई। तासों ही आज श्रीजी में दिन भर वल्लभ महाप्रभू की तथा विट्ठलेश की बधाई झाँझन सों गवे।

साहित्यिक—आपही सर्वप्रथम गद्य साहित्य के निर्माता लेखक, संपादक आचार्य भये। आपने घरु वार्ता, निजी वार्ता, चौरासी वैष्णव दो सौ बावन वैष्णव वार्तान कों व्यवस्थित स्वरूप दियो। हिन्दी ब्रजभाषा साहित्य के अनेक ग्रंथ रचे। आज घर-घर वैष्णवन के यहाँ वार्ता इनकी कृपा से ही बाँची जाय। वार्तान में पुष्टि धर्म, सेवा, भक्ति, सिद्धान्त एवं वैष्णवन के आचरण को स्वरूप स्थिर कियो है।

धार्मिक—सब घरन में उत्सव स्थित किये। तथा श्रीनाथजी में छप्पन भोग निर्धारित किये। गोकुल महावन के आगे दाऊजी बलदेव जी के मन्दिर को जीर्णोद्धारोपरान्त पाट बैठाये। विविध मनोरथ किये। वि० सं० १६३२ में मृगसर शुक्ला १५ को दाऊजी प्रतिष्ठापित किए। साथ ही श्रीनाथजी में छप्पन भोग अरोगाए सो अद्यावधि प्रचिलित है।

श्री मथुरानाथजी द्वारिकानाथजी में चौरासी खम्भन को मनोरथ भावनायुक्त फागण शुक्ला १३ को निर्धारित, कियो सो आज तक चालू है। विट्ठलवर में बारहदरी को मनोरथ तथा अनेक भावना सों सेवाक्रम बढ़वायो। आपके परम भक्तन में हरिरायमहाप्रभु प्रधान भये।

आपने अपने यहाँ दशौधी को मनोरथ भाद्र पद शुक्ला २ को तथा मास दिना को उत्सव आश्विन वदी अष्टमी को चालू किये। भाद्रपद शुक्ला ५ को द्वितीय स्वरूपोत्सव सुरू कियो। माघवदी छठ को गुप्त मनोरथ तथा १८२७ अषाढ़ सुदी १० को अपने जनाने में पधराय गुप्त मनोरथ कियो। और घरन में हू बहुत मनोरथ स्थित किये। सेवा कौमुदी सेवा प्रकार आदि की रचना करी।

आर्थिक—सब स्वरूपन के आभूषणादि अंगीकार किये। श्रीजी में मुकुट कुल्हे, मोजा, तोडा भेंट किये तथा मुकुट की न्यौछावर में पुष्टिमार्ग की स्थिति पचास वर्ष और बढ़ाय दीनी। आप अद्भुत विद्वान अच्छे साहित्यकार गद्य पद्य की रचना में अतुल शक्ति वारे हैं। यहाँ आपके दो पद दिये जांय हैं। आप अपनो दूसरो नाम वल्लभ हतो सों पदन में 'वल्लभ' नाम दियो है—

[राग सारंग]

बैठे हरि राधा संग कुञ्जभवन अपने रंग कर,
मुरली अधर धरें सारंग मुख गाई।
मोहन अति ही सुजान परम चतुर गुण निधान,
जान बूझ एक तान चूक के बजाई।
प्यारी जब गह्यो बीन सकल कला गुन, प्रवीन
अति नवीन रूप सहित वही तान सुनाई।
वल्लभ गिरधरन लाल रीझ दई अंकमाल,
कहत भले जु भले सुन्दर वर राई।

आपके आराध्य गोकुलेश के उभय स्वामिनीन में चन्द्रावली जी के वीण होयवे सों यह पद आपने बनाय सुनायो।

श्रावण में प्रिया प्रियतम झूल रहे हैं।
गोवर्धन धर मचकी चढ़ाय रहे हैं।

स्वामिनी जी डर रही हैं, वे कह रही हैं—

[राग मल्हार]

बिहारी जू बारी हैं नेक सारी संभारू, हा हा नेक होले होले झूलो।
पटली पगन ठहरात नहीं थहरात पींडुरी फहरात दुकूलो।
टूट्यो हार गजरा गिरि गयो छूट गई कबरी खस्यो सीस फूलो।
श्री गोकुल नाथ जू प्यारे तिहारी संभार नाहिन अहो आज हूलों।

**उष्णकाल में पुष्प क्रीड़ा—**

फूल महल में फूले दोऊ नील कमल और पीत चमेली।
श्यामाजु अति सुखद सरोवर तिनकर सीचत मनमधुकर रस
निपुण नवेली।
फूली ललिता लतन दृग ललिता चन्द्रभगा चम्पो शिर मूली।
इन्दा विन्दा विपुल कलीसी भामा वेली विलोकि सहेली।
यह सुख सखी कहत नहि आवें ग्रीसम रितु पीतम संग खेली।
ऐसे ही फूल फूलो ब्रज पति निसदिन गोकुलनाथ करो नित खेली।

श्रीनाथ जी के पास मेदपाट नाथद्वारा में बहुत समय तक गोकुलेश विराजे तासों गोकुलनाथ जी के मंदिर पीतम पोली में आज हू शयन उपरान्त कीर्तन मण्डली होय। अन्य बालकन की न होय—



मंगला—बहुरि कृष्ण गोकुल पुनि प्रकटे। श्रृंगार में—गोकुल जुग जुग राज करो। श्रृंगार होते में—ग्वाल में, राजभोग आये में, सरवे में जामें गोकुल नाम आवे सो बधाई गवे। राजभोग सम्मुख—जे वसुदेव किये पूरण तप।

उत्थापन—भोग में। याचक जन—श्री गोवर्धनधर पै ढाढी गवे। आरती.... वल्लभ खेलत है गृह आँगन। शयन में—वल्लभ राजाधिराज बिराजत।

मृगसर सुदी ८ गोस्वामितिलक श्री गोवर्धनेशजी महाराज कृत सात स्वरूप को उत्सव—देहली वन्दन माल। हांडी। पिछवाई। काच के टूक में भरत सहित गमलान में लाल धरती पै। ठाढे वस्त्र हरे। वस्त्र छोटे बूटा के लाल खीन खाप के बागा चाकदार। कुल्हे। हीरा की जोड चमक को (घेरा) मोजा। खीन खाप लाल के। वनमाला को भारी श्रृंगार। आभरण सब जड़ाऊ उत्सव के। ये श्याम स्वरूप संवत १७९६ में आज के दिन भयो। याको विसद वर्णन प्रवीण कवि ने कियो जो आपके चरित्र में लिख्यो है। ये गोवर्धनेशजी ने मेवाड़ में सात स्वरूप पहले-पहल पधराये दिनभर झाझें बजें। आपके छप्पन भोग को पद भोग आवे तब गवे। गोपी वल्लभ-दहीबड़ा को।

मंगला में—चहुँजग वेद वचन प्रतिपार्यो। शृं० सं०—जयश्री वल्लभ राज कुमार। राज स०—विहरत सातों रूप धरें। भोग में—सब मिलि मंगल गावो गीत बधाई। आर.—हो चरणातपत्र की छैयां। श्री विट्ठल प्रभु नमो नमो। शयन—आज धन धन भाग हमारे।

**मृगसर सुदी ९**—श्री गुसाई जी विट्ठल नाथ जी के उत्सव की बधाई झांझन की १५ दिन की बैठे।

देहली। वन्दन माला। हांड़ी। वस्त्र घेरदार बागा सूथन। पाग ठाडे। वस्त्र पिछवाई खण्ड गादी तकिया उपर नीचे चौकी वगैर के सब लाल लाल घटा सादा साटन लाल की माणक मोती के आभरण अरूणाम्बुज कुंज की भावना सों छोटो श्रृंगार कर्णफूल को कतरा कसूमल रेसम को बेल होय। गोपी वल्लभ-बूरा बुरकी को।

**विशेषता—**

आज से झांझे हर समै बजें बधाई महाप्रभु जी की जन्माष्टमी की गवे तथा गुसाई जी की बधाई लाल घटा में पद के भाव के कारण बैठे पद है—

श्रीमद् वल्लभ रूप सुरंगे।
अंग अंग प्रति भावन भूषण वृन्दावन संपति अंग अंगे।

दरस परस गिरधर जू की नाई एन मेन व्रज राज उछंगे ।
पद्मनाभ देखे बनि आवे सुधि रही रास रसाल भ्रू भंगे ।

आप सुरंग है तासो ही हिंडोलादि रसलीला में "सुरंग हिडोरना हो" आदि पदन में सुरंग लाल वर्णकूं माने है। आपको श्री अंग गौर होयवे सों भावना के भूषण तथा वृन्दावन की चन्द्रावली सखी साधिकारिनी सर्वाङ्ग सुन्दर ही तासों आपकी कुंजहु अरुण कमल अरुणाम्बुज कुन्ज की अधीश्वरी होवे सों । यह घटा होय । आपकी बधाई में श्याम, नीले तथा अमंगल रंग के वस्त्र नहीं धरे । तथा अशुभ में गये सेवकन की दंडवत्‌हू न होय । पद या प्रकार होंय—

**मंगला श्रृंगार**—अहो व्रज भयो महर के पूत जब यह बात सुनी । **राजभोग आयवे पै**—सरवे पै—आसावरी, टोडी, धनाश्री, जैतश्री की बधाई गवे । **राजभोग सन्मुख**—जयति रुक्मणिनाथ पद्मावती । **भोग में**—नातर लीला होती जूनी । श्रीमद् वल्लभ रूप सुरंगे । **आरती**—गये पाप ताप दूर । **शयन में**—सुभग सहेली मिलि आवो ।

**मृगसर शुक्ला १० श्रृंगार एच्छिक**—आज पीरे वस्त्र चाकदार बागा किनारी के साटन के धरे । ठाडे वस्त्र मेघश्याम मध्य को शृंगार पन्ना मोती के आभरण नागफणी को कतरा दुमाला धरें । मोजा दुमाला लाल पिछवाई भरत की । खण्ड भरत को । पद बधाई के । गोपी वल्लभ में मगद-चोखा को । पद—हेरि हेरी रे में ।

**मृगसर शुक्ला ११ श्रृंगार ऐच्छिक**—आज फूलवारी साटन गहर गुलाबी बागा फूले हरे बागा चाकदार श्रीमस्तक पै टिपारा को जोड़ पिरोजी । पगा आभरण सब पिरोजा के । शृंगार भारी । रुमाल धरें । वन माला को कुण्डल को शृंगार ठाडे वस्त्र श्याम । शृंगार जैसो तैसी बधाई गवे ।

**मृगसर शुक्ला १२ (चौकी दूसरी) द्वादशी दूसरी को शृंगार**—वस्त्र हरे साटन के घेरदार वागा वन्द लाल पाग । मोजा लाल ठाडे वस्त्र सफेद कतरा जेमनों कर्णफूल मोती के हीरा के आभरण पिछवाई खण्ड हरे साटन के लाल हासिया हरे । [illegible] खीर बड़ा आदि अनेक सामग्री धरी जाय ।

**मृ० सुदी १२ श्रृंगार ऐच्छिक ।**

**मृगसर सुदी १३**—विट्ठलवर के यहाँ के मंगलभोग गोस्वामी तिलकायत गिरधर जी महाराज को उत्सव । ये वस्त्र सामग्री सब विट्ठल



नाथजी सों आवें । सब सों बड़ी मंगलभोग अरोगें । तामें कई प्रकार की सामग्री आवे । वस्त्र फूलवारे । पीरी साटन के वागा चाकदार । पन्ना मोती के आभरण । ठाडे वस्त्र लाल श्रृंगार मध्य को । आज पंचरंग पाग धरें । बधाई गवे । जमाव की चन्द्रिका धरें ।

**मृगसर सुदी १४ केशरी साटन की घटा**—पिछवाई खण्ड ठाडे वस्त्र वागा घेरदार पाग । सूथन । मोजा खण्ड को । चौकी को । गादी वगैरे सब केसरी साटन के कतरा । दुहेरा केसरी रेसमी झूल । आभरण सोना के । छोटो श्रृंगार कर्णफूल को । आज वर्तमान गोस्वामि तिलक गोविन्द लाल जी महाराज के ज्येष्ठ पुत्र चि. दाऊजी बाबा साहब के जन्मदिन की नौबत की बधाई बैठे ।

**मृगसर शुक्ला १५ छप्पन भोग नियमित**—महामहोत्सव व देहली बन्दन माल अभ्यंग उबटन वस्त्र सुनहरी जरी के वागा चाकदार । सूथन । मोजा टिपारा गोकर्ण सफेद जरी को । पिछवाई श्याम धरती में रुपहरी गायें । ठाडे वस्त्र मेघश्याम । चौखटा प्राचीन । आभरण उत्सव के जडाऊ । कुल्हे को जोड । घेरा सुनहरी । हाँस त्रवल चोटी कुण्डल । ये सब जडाऊ । शंखनाद प्रातः २॥ बजे । आज श्रृंगार ग्वाल नहीं होय । साज सब जडाऊ । वासन सब पीरे । मंगला भये बाद डोलतिवारी रतन चौक धोय कैं मंदिर वस्त्र होंय । छप्पन भोग सजनो सुरु होय । शृंगार होय चुके बाद गोपीवल्लभ भोग के साथ छप्पन भोग अरोगें । धूप दीप होयके भोग आवे ।

वैसे तो या घर की सेवा सामग्री लिखी नहीं जाय सके । कारण प्रभु नित्य नूतन अगणित सामग्री तथा आभूषण वस्त्रादि की कोई कहा गणना कर सके। जो जैसो दर्शन भयो, सुन्यो ताको संग्रह कियो । पूरी विधी न तो लिखी जाय सके न लिखनी हू चाहिये । सामग्रीन के कुछ नाम मात्र यहाँ चर्चित हैं । ऐसो छप्पन भोग कभी होय नहीं । ये तो आज ही या प्रकार सों होय सके ।

**दूध घर सों**—गुञ्जिया केसरी सफेद, बरफी केसरी सफेद, पेडा केसरी, सफेद, वासोंदी केसरी सफेद, अधौटा, खोवा, मलाई, दूध, पूड़ी, खट्टो मीठो दही, माखन मिश्री आदि । अमृत रसावली ।

**शाक घर सों**—विलसारू—पेठा को, केला को, नारंगी को, सेव को, सीताफल को, आमा को, सिखरन, अमरस, अनार को सरबत, बदाम कतली, पिस्ता कतली, चिरोंजी कतली, खोपरा कतली । रस खोपरा हरी पीपल, सब तरह के फूल अचार आदि ।

**सखड़ी में**—दही भात, मेवा भात, खट्टो भात, बडी भात, आदा भात, लोंग भात, पान भात, बेंगन भात, सिखरन भात। कढ़ी—बूंद की, मीठी, फीकी, खडरा की, लोंग की, पान की, अनार दाना की, पकोडी की। रोटी—लोंग रोटी, सूरज रोटी, आदा रोटी, टिकडा, जीरा पूडी। चीला दो प्रकार के पाटिया (सेव) तिनकूडा, मूंग, अटकूदा, बाटी, दाल सब तरह की, भुजैना आठ प्रकार के। लुचई सुहारी पतली पूडी कांजी कचरिया सब तरह की खीर चार प्रकार की माखना की, दलिया की, सेव की, चावल की। शाक बारह प्रकार के चपटियान में। पापड़ आदि। पूड़ी पांच प्रकार की भरमा, दही की सादा, खाजा गुजराती, खाजा, खरखरी अरबी दही, चूकरमा सादा।

**बालभोग सों—**

**मोहन थाल**—बेसन को, उड़द की पीठी कों, पीरी दाल की पीठी को, बूंदी को, मनोहर को, तिगडा को, सादा चून को, बेसन को, जाली को, मेदा को, जाली को, जैंपुरी तथा लाखा साई। मूंग की दाल की पीठी को, तथा वैसो चौदह प्रकार को।

**मगद ८**—उड़द को, मूंग को बेसन को, चोखा को, तिगड़ा को, रतालू को, सूरज को, बीज को, अरबी को।

**मनोहर ८**—गीजड को, खोवा को, मनमनोहर अरबी आटा को, दही को, सादा बूंदी, गुड़ की, खाण्ड की, छूटी घांस की। तवापूड़ी गुड़ की खांड की, मीठी सकोरी गुड़ की खांड़ की, माडां खांड के, गुड़ के, सेव के नग, दही भरा, मठडी, सकलपारा, माखन बड़ा, बूराभुरकी, पपड़ी, रस पपड़ी, खरमंडा, इन्दरसा, थपल्या गुड़ के, खांड के, कपूर नाडी, जलेबी, सुखमंडा, पिरोज मंडा, चन्द्रबट्टा, तिल सांकली। सूरज बट्टा, मुखविलास, पूवा गुड़ के, खाड़ के, दूध पूवा, माल पूवा, गुड के, खांड के, गूंजा डकर के, गुड़ के, खांड के, मेवा के, पिस्ता के, खोवा के, गुड़ खांड के मिलमा, मेवाटी गूंजा, गोदड़्या पूवा, चन्द्रकला केसरी, सफेद फेनी केसरी, सफेद घेवर, केसरी सफेद। **चूरमा**—गुड़ को, खांड को, राखोड़्या गुड़ को, खांड को, तलमा, गुड़को, मिश्री को बावर केसरी सफेद। **सीरा**—गुड़ को, खांड़ को, पेठा को, सकरकंद को, बेसन को, केला को, कांजी बड़ा, सिखरन बड़ी, उड़द-मूंग के बड़ा। बडाफीका (थपेड़ी), सकलपारा, सेव छोटे, झाराकी, बड़े झाराकी, झीने झाराकी, मनोहरके झाराकी; बूंदी के झाराकी, गगन गाठिया, फीकी दाना की, बूंदी, पानवडा. आदा की गुंजिया, मैंथी बड़ा पतखेलिया, चणा फडफडिया तलमा मेवा। सब तरह के गूंझा। आदा के, लोंग के, सूरन के, रतालू के, सूरन, अरबी,



रतालू, भुजेना चार प्रकार के। मैंथी बड़ा, उड़द की दाल की मंगोड़ा, आलू रतालू अरबी पाचरी।

**छप्पन भोग की आवश्यकता तथा विशेषता—**

गोपकन्या एक मास तक व्रत करि प्रातः स्नान करि कात्यायनी पूजन कियो अरु नन्दराजकुमार पति होंय ये भावना राखी। श्रीमद् भागवत में आयो है—

तासां विज्ञाय भगवान् स्वपाद स्पर्श काम्यया।
धृत व्रतानां संकल्पमाह दामोदरोबला ॥२४।१०।२४॥

प्रभुनन्द राजकुमार ने जान्यो इन कुमारिकानने मेरे चरण कमल के स्पर्श की कामनाते व्रतधारण कीनो है अरुजीवन को एक मात्र संकल्प कियो मैंने इनके कारण ही भक्तवत्सल बनि गोपीन के प्रेम सो उलूखल में बंधि के दामोदरभयो तो आप आज्ञा करे हैं :—

संकल्पो विदितः साध्व्यो भवतीनां मदर्चनम्।
मयानुमोदितः सोऽसौ सत्यौभवितुमर्हति ॥१०।२२।२५॥

मेरी प्यारी गोपियो, मैं तुम्हारे व्रत को संकल्पकों भली भाँति जानत हों। मेरी पूजन करि मोको प्राप्त होनो चाहो हो। ताते तुमारो मनोरथ सिद्ध होयगो।

न मय्यावेशितधियां कामः कामाय कल्पते।
भजिता क्वथिताधाना प्रायो बीजाय नेश्यते ॥१०।२६॥

तुमने अपनो मन अरु प्राण मोमें समर्पित कीनो है तासों कामनायें संसारिक भोगन में लैंजायवे कों समर्थ नहीं। जैसे भुनेभयो धान अंकुर पैदा नहीं कर सके ऐसे ही तुम मोमें प्राण अर्पित कर चुकी हो।

**सो या प्रकार आज्ञा करी—**

यातबाला व्रजंसिद्धा मयेमा रंस्यथक्षपाः
यदुद्दिश्य व्रतमिदं चेरुरायार्चनं सतीः ॥

हे गोपियो ! तुम अपने-अपने घरनकूं जाओ तुमारी साधना सिद्ध हे गई हैं। तासो आयवे वारी शरद ऋतु की रात्री में मेरे साथ बिहार करोगी। हे सतियो जा कारण तुमने यह व्रत करि कात्यायनी की पूजा कीनी वो सफल भयो।

ये गोपियां वैधी भक्ति की सीमा पार करि रागात्मिका भक्ति में पूर्ण समर्पित भई। गोपिन ने वैधी भक्ति को अनुष्ठान कीनो हृदय रागात्मिका भक्तिसों भर्यो हतो सो सम्पूर्णभावसों समर्पित हतो ताते व्रतचर्या लीला करी ताकी समाप्ति में उद्यापन रूप छप्पन भोग अरोगायो।

व्रत को जब तक उद्यापन न होय तब तक फल सिद्धि न होय । अतः स्वयं प्रकट होय फलात्मक आज्ञाहू दीनी । पुनि आप विचार किये व्रतान्त में भोजन होनो चहिये, अतः नटखट कन्हैयाने एक समै ब्रज में घूमते फिरते दुर्वासाजी कूं पठाये । महर्षि दुर्वासाजी को व्रत के समाप्ति में पधारे देखि व्रज गोपीन ने पूछी रिषिराज हमारे व्रत को उद्यापन का भाँति है सके । आप आज्ञा किये मोय एक-एक व्यक्ति एक-एक वस्तु की छप्पन प्रकार की सामग्री सिद्ध करि मेरे मुख में नावेगो वो मेरे प्रभु श्रीकृष्ण के मुख में पहुँचेगो । मेरी सन्तुष्टी में प्रभु प्रसन्न होयेंगे तब सब सो पहले ललिताजी उनकी आज्ञानुसार छप्पन भोग सिद्ध कर भोग लगाये उनके मुखमें नाये फेर बारी बारी सब ललनानने मुख में छप्पन छप्पन सामग्री अरोगाई इनके तृप्त होते ही कामना सिद्धी हेतु महारास में अंगीकृत करिवे को आशीर्वाद दियो ।

"इति श्रुत्वा तु तद्वाक्यं पाले दीर्घं व्रजाङ्गना ।
षट्पञ्चाशतान् 'भोगान् नीत्वा सर्वे पृथक् पृथक् ॥ "गर्ग संहिता"

याही बात के आधार पर आचार्य महाप्रभु के वंशजन ने छप्पन भोग चालू कियो । सर्व प्रथम गुसाईं जी विट्ठलनाथजी ने अपने जेष्ठ पुत्र गिरधरजी के विवाह पाछे श्री गोवर्धनधर श्रीजी को छप्पन भोग अरोगायो अरु तबसों ही प्रस्ताव पाछे छप्पन भोग चालू करिवे की पद्धति चली अपने-अपने घरन में अपने-अपने निधीन को छप्पन भोग अरोगावन लागे । जाको संमत् १६१४ है ।

सम्प्रदाय कल्पद्रुम—

बहुरि सुवर्णि सृष्टि लखि किय गिरधरन विवाह ।
मात भ्रात सुत जाति मध विट्ठलनाथ उमाह ॥
पुत्रवधू को संग ले गिरि गोवर्धन आय ।
शरण लीन गिरधरन की श्री विट्ठल द्विजराय ॥
छप्पन भोग मनोर्थ किय मातुश्री मन पाय ।
किय विवाह गोविन्द को श्रीमद् गोकुल आय ॥

यह छप्पन भोग गरमी के दिनन में भयो ताको वर्णन चत्रभुजदासजी या प्रकार करे हैं । छाक में—

बैठे छाक खात तिन में मदन रूप मण्डली रची ।
छप्पन भोग छतीसों व्यञ्जन आनि आगे थार सची ।



गुसाईं जी विट्ठलनाथ जी के चतुर्थ पुत्र श्री गोकुलनाथजी ने गोकुल समीप दाऊजी को बलदेव जो गाँव है, तामें स्थित प्रभु के मन्दिर को जीर्णोद्धार कराय १६३२ मृगसर शुक्ला १५ आज के दिन हांडा अरोगाय प्रतिष्ठा करकें वेद विधि सों स्थापित किये और बड़े भाई को ठाट बाठ सों मनोरथ होय अरु गोवर्धन धरण श्रीनाथ जी अलोने रहें यासों यह छप्पन भोग वहाँ हू प्रति वर्ष होवे की प्रणालिका श्री गोकुलनाथ जी ने बाँधी और चालू करी । दाऊजी में मेला लगे तथा आज के दिन सोना का जड़ाऊ हल मूसल हू धरें ।

छप्पन भोग की भावनाकूं आपने या प्रकार भी विचार्यो—प्रभु श्री नन्दराज कुमार श्री कृष्ण कन्हैया गोवर्धन बरसाने सुसराल सकुटुम्ब सपरिवार अरोगवे पधारे अरु श्री वृषभान जी कीर्ति जी प्रथम न्योतो दे नन्द बाबा आदि समस्त परिवार कूं कन्हैया के साथ फेर स्वागत करि उतारो देय फेर अरोगवे कूं पंगति में बैठावें विविध सामग्री अरोगावें समस्त व्रज ललना गीत गावें ताही भाव सों गोस्वामी बालकन के घर को ही छप्पन भोग होय है । उनके घर प्रभु पधारें हैं और उनमें स्वामिनी भाव होय है तासों आप कूं छप्पन भोग अरोगावें हैं ।

वल्लभ दिग्विजय व्रजयात्रा खण्ड चतुर्थ पटल में आयो है—

यत्र कीर्तेः वृषभानोर्भानु पुष्करं यत्र तौ स्नातौ ।
यत्र सरोवरे यशोदायाः शिविरं नन्दरायस्य ।
षट् पञ्चाशत भुक्तं यत्र स चाभं व्रते स्थिरतौः ॥

जहाँ कीर्ती अरु वृषभाण जी कों जो मानोखर तीर्थ है जामें स्नान करन कों जसोदा कुण्ड है जहाँ नन्दराय जी के डेरा दीने वहाँ आप कूं वृषभानजी ने निमंत्रण देकर छप्पन भोग अरोगाये । श्रीजी में यह छप्पन भोग तो प्रतिवर्ष होवे ही हैं । वा उपरान्त भी समस्त स्वरूपन में जो-जो स्वरूप पधार सकें उनकूं पधराय ताके उपलक्ष बड़ो मनोरथ करि प्रभु सुख को ध्यान रखें ।

काका गिरधर जी के बचनामृत ४३ में सात स्वरूपन को पधराय कै गोकुल में गुसाईं जी ने छप्पन भोग कीनो अरु श्री जी में पृथक् बहुत सामग्री अरोगाई सो पद शयन में आज के दिन होय है ।

प्रकट हूं मारग रीत बताई । श्री
परमानन्द स्वरूप कृपा निधि श्री वल्लभ सुखदाई ।
करि शृंगार गिरधरन लाल को जब कर वेणु गहाई ।
ले दर्पण सन्मुख ठाडे ह्वै निरख निरख मुसकाई ।

विविध भाँति सामग्री हरि को कर मनुहार लिवाई।
जल अँचवाय सुगंध सहित मुख बीरी पान खवाई।
कर आरती अनोसर पकरि बैठे निज गृह आई।
भोजन करि विश्राम छिनक ले निज मंडली बुलाई।
करत कृपा निज देवी जीवन पर श्री मुख वचन सुनाई।
वेणु गीत पुनि युगल गीत की रस वर्षा बरसाई।
सेवा रीत प्रीति व्रज जन की जन हित जग प्रगटाई।
दास शरण हरि वागधीश की चरण रेणु निधि पाई।

अन्यत्र छप्पन भोग में श्री जी भावना सूं सामग्री अरोगे। और भावनासूं पधारें। उपरोक्त पद में अरोगावे के लिए मनुहार कियो है।

श्रुति परम्परा ऐसी भी है कि सब स्वरूप अन्नकूट में पधारें तब आप भाव भगती में सबके स्वागत में रहें। तासों अन्नकूट अरोग न सकें। यह बात दाऊ जी महाराज दामोदरजी सों कही तब आज की सामग्रीन की विधी तथा प्रणालिका में आज के दिन या छप्पन भोग में कोइ स्वरूप नहीं पधारें आप अकेले ही अरोगें हैं।

सर्वप्रथम गुसाईं जी के जेष्ठ लालजी ने छप्पन भोग कियो सतधरा में पधराये। ताको सब स्वरूपन ने साथ वर्णन छीत स्वामी ने कियो—

विहरत सातों रूप धरें।
सदां प्रकट श्री वल्लभ नन्दन द्विज कुल भक्तवरे।
श्रीगिरधर राजाधिराज ब्रजराज उद्योत करें।
श्रीगोविन्द इन्दु जग किरणन सींचत सुधा अधरें।
श्रीबालकृष्ण लोचन विशाल देखे मन्मथ कोटि डरें।
गुण लावण्य दयाल करुणानिधि गोकुलनाथ भरे।
श्री रघुपति यदुपति धन सांवल मुनि जन शरण परे।
छीतस्वामि गिरिधरन श्री विट्ठल जिहि भजि अखिल तरें।

मेवपाठ मेवाड़ में सर्वप्रथम सप्त स्वरूप पधराय गोवर्धनेश जी ने छप्पन भोग वि. १९७६ मार्गशीर्ष में कियो। दुहेरा मनोरथ कर्ता दाऊजी ने दो छप्पन भोग किये चार स्वरूप पधराय के तथा छः स्वरूप पधराय के वि० १८७७ जेष्ठ में मृगसर में कियो। गोस्वामि गोवर्धनलाल जी ने १९६६ में पांच स्वरूप पधराय छप्पन भोग कियो। वर्तमान गो० तिलक गोविन्दलाल जी महाराज ने सात स्वरूप पधराय २०२३ के श्रावण शुक्ला १० कों छप्पन भोग अरोगायो। और घरन में छप्पन भोग होय तो अपने निधीन के अलावा और भावना सूं पधारे जैसे श्रीनाथ जी नन्दबाबा यशोदाजी बलदेवजी तथा श्रीविग्रह स्वयं। या प्रकार अनेक विधी की भावना उन-उन घरन की प्रणाली में लिखेंगे। छप्पन भोग में होयवे वारे पद श्रीजी में होंय सो मंगला में—सुनो री आज नवल बधायो है। अभ्यंग के छः; महात्म्य के छः पद गवें। आज श्रृंगार नहीं होंय। आरसी दिखावें वेणु धरें तब किवाड़ की सूचना पर—सुभग श्रृंगार निरिख०। छप्पन भोग आये पर ये पद आसावरी में गवें।—

श्री वृषभान सदन भोजन कों नन्दादिक सब आये हो।
जिन के चरण कमल धरिवे कों पग पावडे बिछाये हो।
राम कृष्ण दोऊ वीर विराजत गौर श्याम दोऊ चन्दा हो।
तिनके रूप कहत नहि आवे मुनिजन मन के फन्दा हो।
चन्दन घिसि मृग मद मिलायके भोजन भवन लिपाये।
विविध सुगंध कपूर आदि दै रचना चौक पुराये॥
मण्डप छायो कमल कोमल दल शीतल छाय सुहाई।
आस पास परदा फूलन के माला जान गुहाई॥
शीतल जल कुंकुम के जल सों सब के चरण पखारे।
कर विनती कर जोर सबन को कनक पटा बैठारे॥
राजत राज गोप भूपति संग विमल बेस अहीरा।
मानो समाज राज हंसन को जुरो मान सरोवर तीरा॥
धरे अनेक कोटिक जु कटोरा और कंचन की थारी।
ढिग ढिग धरी सबन के सुन्दर शीतल जल की झारी॥
गावन लगी गीत व्याह के सुकुमारी ब्रजनारी।
अति हुलास परिहास परस्पर यह सुख शोभा भारी॥
परोसन लगे पुरोहित हित सों जिन की बदन बड़ाई।
तिनके दरस परस सम्भाषण मानो सुर सरिता घिरि आई॥
ओदन ऊज्वलता मानो सहज रूप धरि आये।
यह हित प्रीत प्रीतम जन हित सों प्रकटहि आप जनाये।
बरी वरा अरु वरन विजोरा पापर पीत बनाये।
कनक वरन वेसन बहुतेरे प्रकार न जात गिनाये॥
आँवल वेल आम अदरख सरस नीबू मिले संधाने।
सद् सीरा अरु सुरभी घृत सों सौरभ घ्राण बखाने॥
बासोंदी शिखरण अरु खोवा अमृत रसना तोये।
आमल रस कटुक तीक्ष्ण रस लोन मधुर रस पोखे॥

कंद मूल फल फूल पत्र जो व्यंजन सबे प्रकारा।
मानो भई प्रकट भूतल में अमृत रस की धारा ॥
औरे बहु विधि षड् रस व्यंजन परोसन वारे हारे।
यद्यपि होय शारदा की मति तदपि न जात संभारे ॥
शीतल सुगंध चारु सुकोमल विविध गति पकवान।
केऊ प्रकार परे नहि कबहुँ सुरपतिहू के कान ॥
करि आचमन उठे सब ब्रज जन मन में अति सुख पाये।
पट भूषण बीरा सोधें सों पूजि सदन पधराये ॥
यह सुख सम्पत्ति यह रस शोभा कापे जात बखाने।
जूठन जाय उठाय गदाधर भाग आपनो माने ॥

(१) बेठी गोप कुँवर की पाँत ?
ललित तिपाई पटा रतनन के कंचन झारी झलकत काँत।
माणक थार विलास धरे वहो वेला वेस्नी नाना भाँत।
षट्‌रस व्यंजन धरे तिनन में देखत जिनके नेन सिरात।
परोसति करति रोहिनी फिरि फिरि अति आनन्द मन हियो सिरात।
लपटत झपटत कहत सखन सों देख यशोमति नन्द मुसकात।
अष्ट सिद्धी नव निधि रहत तहाँ उठावत झूठन मन इतरात।
देखत यह सुख सुरपुर वासी भये न व्रज जन नैंन सिरात।
जेतिक सुख सम्पति व्रज में सब छिन छिन पुन पुन नैंन चुचात।
गोवर्धनेश गिरधर प्रसाद की ब्रह्मा हू को मन ललचात।

(२) कहत प्यारी राधिका अहीर; परोसत पाहुनी जौनारे।
आज हमारे भोजन कीजै; परोसत गोपी घूंघट मारे।
आज गुपाल पाहुने आये, रानी जू एक वचन मोहि दीजै।

(३) यशोदा एक बोल जो पाऊँ। आदि आदि

**छप्पन भोग में भोग आते में १० पद गवें वामें ये विशेष गवें—**

आज हमारे जेवे मोहन सोइ कोजे नन्दराणी जू।
कहा भवन में हुर जो रहे के धर्योदधि ओदन पानी जू।
बहुत बेर की उठी बहू बेटी कोऊ भोरी कोऊ स्यानी जू।
बहु विधि व्यंजन खाटे अरु मीठे खाइये मनमानी जू।
कहत रोहिनी यशुदा आगें प्रेम लपेटी वानी जू।
सेनन में सब समुझ के मन ही मन मुसकानी जू।
बलदाऊ को बोल लै सही कहि कहि मधुरी वानी जू।
कुम्भनदास प्रभु भोजन महमानी जेमन जात बखानी जू।

ये सब पद छड़ीदार जी की कोठरी के आगे होंय। परिक्रमा के आगे गोवर्धन पूजा के चौक में जब तक भोग अरोगें नगाड़ा बजें। ताको आशय महाप्रभू जी के घर को मनोरथ होयवे सों बैठक के द्वार आगे बजें। आज ग्वाल नहीं होंय। डबरा आवै। राजभोग सन्मुख—जयति रुक्मिणी नाथ पद्मावती। भोग में—गये पाप ताप दूर दरस। बाहर बधाई। आरती में—हो चरणातपत्र कीं। शयन में—प्रकट ह्वै मारग रीत।

श्रीजी में विशेष सामग्री आवे ताकी संक्षिप्त यादी :—

१—आश्विन शुक्ला १० सों चैत्र शुक्ला ८ तक सखडी में कन्द आवे।

२—श्रावण कृष्ण एकम सों फागण शुक्ला १ तक डोल तक सीरा अरोगें।

३—चैत्र कृष्ण २ द्वितीया पाट से लेके वैशाख सुदी ६ तक मेवा भात अरोगें।

४—वैशाख शुक्ला ७ से रथ यात्रा तक दही भात सिखरन भात अरोगें।

५—वैशाख शुक्ला में ५ से जब संक्रान्ति आवे तब सों रथ यात्रा तक सतुवा अरोगें, दही भात भी संग में।

६—रथ यात्रा से कार्तिकी पूनम तक मेवा भात सीरा भी अरोगें।

७—शीत काल में विशेष कर चूरमा, टिकड़ा, भरमा, शाक, डोल तक अरोगें।

आदा प्रकार, लोंग प्रकार, शीत काल में आवें जामें भात रोटी कढ़ी गुंजा आदि शीतकाल में फतवी चार धरें।

१—मृ० व० १२ जरी की सुनहरी; फेर एच्छिक गुलाबी खीन खाप की श्याम मोती की कसीदा की। बन्द तीन धरें, सोना के लाल तथा श्याम मोती के कुल्हे मोती के वस्त्रन में चाकदारादि पिरोजा की कुल्हे पगा पन्ना को माणक को हीरा को धरें ये पगा धरें कुल्हे पगा में खोप धरें।

जीवन जो चहै जो पे गोवर्धन छाँह रह,
भवन जो बनावे तो भक्ति मौन कर रे।
स्नान जो करन चहै पुष्टि रस सागर में,
करि करि भाव पूर्ण पाप ताप दहरे।
दान जो करन चहे सेवा कर तन धन,
गान जो करन चहै तो वल्लभ उचरे।

नाम जो जपन चहें कृष्ण नाम मुख सों लै,

महा प्रसाद पावन में रति मति चहरे।

या प्रकार मृगसर मास की सेवा, उत्सव भावना सम्पूर्ण भई।

## [ पौष मास की सेवा ]

मासन में त्याज्य मास, मल मास कह्यो गयो है वह है—पौष तथा अधिक मास। ताकों पुष्टिमार्ग ने रस पोषक पुष्टिकर अनुग्रह कारक कह्यो है। भक्त हू गावें हैं—"पौष निर्दोष सुख कोष सुन्दर मास" (विष्णुदास)।

याही प्रकार जितने भी पतित दोषी जीव हैं उनको या पुष्टिमार्ग ने अनुग्रह करि सनाथ सुन्दर सरस किये। संसारासक्ति में कई प्रकार के दोषी हैं :— कामी, कुटिल, कलंकी, पतित, हत्यारे, दुष्ट। वार्तासाहित्य में उपरोक्त दोष वारेन को अंगीकार करि निर्दोष किये, मल रहित किये। जैसे नन्ददासजी कामासक्त, कपटी छीत स्वामी। हत्यारे ठगन की वार्ता में भ्रष्ट श्मसान में भोजन करिवे वारो, ताके उच्छिष्ट सों कोढ मिटयो। चोर जिनने चोरी श्री नवनीत प्रिय की करी अरु फेर चोरी की बान न छोडी। सत्य बोलवे पर भक्तिभाव उदय भयो। एक बाई को बेटा ठग सो वैष्णव बन्यो या प्रकार अनेक त्याज्य जीवन को गुरुन ने कृपा करि दीक्षा दै शरण में लेकर कृतार्थ किये। सो मासन में पौष मास मल मास न है कर धनुर्मास कह्यो गयो। यामें सेवा क्रमहू रसमय सुखदायक होय है। यामें ही श्री गुसाईं जी विट्ठलवर को प्रादुर्भाव भयो सो सुन्दर आनन्द दाता भये। या मास की शीत हू अच्छी लगे तथा भोजन सामग्री वस्त्र धारण हू उत्साह उमंग वर्धक होय है।

"पौष असित नौमी को शुभदिन लगै सरस जहँ शीत" (श्रीविट्ठल)

मलमास कूं अधिक मास अथवा पुरुसोत्तम मास कह्यो है। अनेक पुराणन में या अधिक मास की महत्ता वर्णित कीनी है तासों मल मास पुरुषोतम मास भयो पौष को भी मलमास कहैं हैं यामें स्वयं पुरुसोत्तम स्वरूप विट्ठलवर गुसाईंजी प्रकटे। सो यह भी पुरुषोत्तम मासवत् भयो। यामें मकर संक्रान्ति हू आवे यामें धन संक्रान्ति विषयक अनेक पौष्टिक सामग्री अरोगें। या मास में बधाई के पाछे खण्डिता, हिलग, मिषान्तर मानादि के साथ सीतकालीन पदन के गान होय है। नित्य सेवा में भोजन शयन के पद हू होय हैं। शीतकाल के पदन के आधार पै शृंगार हू होय है।

**खण्डिता**—स्वकीया नायिका कों छोडि के परकीया के पास रात रहे ओर भोर में आवे ताको स्वकीया उपालम्भ देय ताको खण्डिता, वक्रोक्ति काकूक्ति में



कहै है। व्रज भक्तन ने या प्रकार के पद सखीन द्वारा कहवाये हैं—

**गोविन्द स्वामी**—

जागे हो रैन सब तुम नैना अरुण हमारे।
तुम कियो मधुपान घूमत हमारो मन काहेते जु नन्द दुलारे।
रसक से नन्द दुलारे आये उठ भोर।
अरुण नयन अटपटे भूषण देखियत अधरन रंग कारे।

**कुम्भनदास**—

तिहारे पूजिये पिय पाँय।
कैसी-कैसी उपजत तुमको कहत बनाय-बनाय।

**सूरदासजी**—

में जानी जू जानी जहाँ रतिमानी तुम आये चिरिया चहचहानी।
मुख की बात कहा कहिये ठानी बात नहीं पहचानी।

**नन्ददास**—

ढीले-ढीले पग धरत ढीली पाग ढरकि कर ही
ढये से फिरत ऐसे कौन पैंढये हो।

**कृष्णदास**—

कोन के भुराये भोर आये हो भवन मेरे उँची दृष्टी
क्यों न करो कोन पे लजाने हो।

**परमानन्द**—

साँवरे हो भले रति नागर।
अब के दुराव क्यों पुरत हो प्रीति भई जो उजागर।

**छीतस्वामी**—

मेरे आये भोर रेन कहाँ जु गमाई।

**चत्रभुजदास**—

सोभित सुभग लटपटी पाग। भीने रसिक पिया अनुराग।

**हरिराय महाप्रभु**—

सुधर तिय कौन वाही पे उतारो राई लोन।
नागर नटवर तनक चितवन में बसे वाइके भौन।
जा सुख को सनकादिक तरसत मुनिजन धरि रहे मोन।
रसिक प्रीतम पिय चार जाम जगे अनहोनी भई होन।

अग्रस्वामी—

सूधे क्यों न बोलो कहा फिरत इतराने।
या ब्रज में को का ते बड़ो है कहा रंक कहा राने।
कोन टेव परी निस दिन की तकत अंग बिराने।
जो जो अवधि वदी कहि देहो अग्रस्वामि रहो छाने।

ये खण्डिता के पद मंगला शृंगार तथा राजभोग में होय हैं। जैसे शृंगार नित्य पद के साथ होंय वैसे ये पद हू होंय।

शीत काल के अनेक भोजन के पद हैं। यथा

नन्ददास—

चित्र सराहत चितवत मुरि मुरि गोपी परम सयानी।

१—लालकों रोटी और बरी
हींग लगाय मिरच पुट दीनी करुवे तेल तरी।
आनि कनक द्रय बिरिया छानी बेलन बेल करी पतरी।
कटहरिया प्रभुकों रुचि उपजी माखन सों चुपरी।

२—आज हमारे भोजन कीजे
बहुत भाँत पकवान मिठाई षट् रस व्यंजन लीजे।
सद्य खीचरी और खोवा श्याम सलोने लीजे।
उर्द के बरा दही में बोरे कछु कोरे कछु भीजे।
संग समान सखा जु बुलावहु बाँट सबन को दीजे।
आसकरन प्रभु मोहन नागर पाम्यो पछाये पीजे।

३—परोसत गोपी घूँघट मारे।
कनक लतासी सुन्दर सीमा आई है ज्यौनारे।

४—परोसत पाहुनी त्यों नारी।
जेवत रामकृष्ण दोऊ भैया नन्द बाबा की थारी।

हिलग के पद पूर्व में माधुरीलीला में लिखि आये है। यहाँ संकेत मात्र है।

सूरदास—

जाको मन लाग्यो गोपाल सों ताहि ओर कैसे भावे हो।
लेकर मीन दूध में राख्यो जल बिन सचु नहि पावे हो॥

परमानन्द—

मेरो माई हरिनागर सों नेह।
जबते दृष्टी परे नन्दनन्दन तबते बिसर्यो गेह।



कुम्भनदास—

माई हौं गिरधर के गुण गाऊ।
मेरे व्रत नेम यही निसदिन और न रुचि उपजाऊँ॥

सायं काल को मिषान्तर के पद होय है। भोग आरती में।

नन्ददास—(राग गौरी)

१— घर नन्द महर के मिष ही मिष आवे गोकुल की नार।
सुन्दर बदन बिन देखे कल न परत भूल्यो काम-धाम आछो बदन निहार।

२—रोहिणी दीपक देहु संजोई।
मंद-मंद गति चलि ले जेहों अंचल मांझ अगोई।
जब ही सजाय जात द्वारेलों डारत बयार बुझाई।
नेक नहि अनखात इते पर या घर की यही बड़ाई।
कई वार संजोवन आई तब तुम नाहिं न कीनी।
औरन कों या बचन हिजे हो यहै अरक में लीनी।
बार-बार आगम गति मन प्रति पवन करी नेक वानी।
ब्रजपति कह्यो ओट मेरी चल अंतरगति की जानी।

मान तीन प्रकार को है। परस्पर। प्रिया प्रीतम को। तीसरो सखि द्वारा। पौढ़वे के पूर्व सदा मान के पद होंय। कछु संकेत यहाँ दियौ है।

नन्ददास—

तेरे री मनायवे ते मान नीको लागत जो लौं बलि रहे आली।

गोविन्द स्वामी—

लालन मनायो न मानत लाडली प्यारी तिहारी अतिसय कोप भरी।

सूरदास—

रूप रस पुञ्ज बरनो कहा चातुरी।
मान मेरो कह्यो चतुर चन्द्रावली निरख मुख कमल उडुराज सकात री।

परमानन्द दास—

मनावत हारि परीरी माई।
तूं चटसों मट होत न राधे हों हरि लेन पठाई॥

कृष्णदास—

कहा कहों तेरे भाग की महिमा नन्द लडेतो तें पायो।
श्याम तमाल रसिक नटनागर बाहू बेल अरुझायो॥

**कुम्भनदास—**

न्यायरी तूं अलक लडी ।
निशि वासर गिरधरनलाल के हिरदे सो रहत गड़ी ॥

**चत्रभुजदास—**

रसिकनी रस में रहत गडी ।
कनक वेल वृषभान नन्दनी श्याम तमाल चढ़ी ॥

**छीतस्वामी—**

सजनी आज गिरधरलाल तो ही रचि सेज बनाई ।
वेग मिलि तजि मान प्यारी कहत हों समुझाई ॥

## नित्य सेवा :—

**पौष कृष्णा प्रतिपदा—**वर्तमान गोस्वामि तिलक श्री गोविन्दलाल जी महाराज के जेष्ठ पुत्र श्री चि० दाऊजी (राजीव जी) को जन्म दिन । देहली वन्दन माल हांडी पिछवाई सिलमा सितारा की । भरत की । श्रृंगार से माला बोले पर्यन्त फेर राजभोग से आरती पर्यन्त काच की किरच कौ बंगला वस्त्र पीरे साटन के किनारी वारे बागा चाकदार सूथन, मोजा टकमा हीरा के। श्रीमस्तक पै क्रीट हीरा को ठाडे वस्त्र मेघश्याम पटका गाती को । आभरण जड़ाऊ वनमाला को श्रृङ्गार कुण्डल वगैरे भारी जड़ाऊ । दिन भर पौष मास की गुसाईं जी की बधाई गवे, विविध सामग्री अरोगें ।

## विशेषता—

**बम्बई में सं० २००५ में** आज के दिन आप प्रकटे । इन्हें ऐश्वर्य रूप माने हैं । ये अपने प्रभु श्रीनाथ जी नवनीत प्रिय तथा अन्य स्वरूपन के गुप्त मनोरथ करायवे के आग्रही रहे हैं । मनोरथन में भाव भावना तथा अनेक रसमयी सेवा श्रृङ्गार को बिचार के मनोरथ नूतन ढंग से करै हैं ।

आपको उपनयन जतीपुरा में भयो । आप २०२३ में नाथद्वारा पधारे । पश्चात् परचारग होवे सो उपरोक्त मनोरथ श्रृंगार चालू कियो । प्रथम श्रृंगार आपने वैशाख बदी प्रतिपदा को कियो । याही वर्ष अनेक आभूषणादि भेट किये ।

**पौष कृष्णा २ श्रृंगार ऐच्छिक—**आज लटपटी पाग को श्रृंगार भयो पदाधार पर । वस्त्र लाल बागा घेरदार साटन के सूथन पाग लटपटी केशरी मोरचन्द्रिका सादा छोर को पटका केशरी मोजा केशरी, आभरण पन्ना मोती के



छोटो श्रृंगार, पिछवाई सादा लाल साटन की किनारी दुहैरा वारी, दिन भर बधाई । आज विशेष श्रृंगार होवे से ये बधाई गाई जाय :—

सुखद सरूप श्री विट्ठलेश राय ।

**पौष कृष्णा ३ श्रृंगार —ऐच्छिक** पिछवाई भरत की । सिलमा सितारा के काम की । वस्त्र गुलाबी हलके, बागा चाकदार किनारी को । श्री मस्तक पर पगा, आभरण पिरोजा के, मध्य को श्रृंगार । श्री मस्तक पै मोर सिखा । ठाडे वस्त्र श्याम पगा जड़ाऊ पिरोजा को मोजा पिरोजी रंग के । दिनभर बधाई गवे ।

**पौष कृष्णा ४ श्रृंगार ऐच्छिक—पर आजकल** सफेद जरी की छटा नियमित कर दीनी पद के आधार सों । वस्त्र बागा घेरदार, सूथन, ठाड़े वस्त्र, पाग सादा । पिछवाई खण्ड सब सफेद जरी की । गादी, तकिया, चौकी आदि सफेद मलमल की, आभरण हीरा के किलंगी कर्णफूलादि छोटो श्रृंगार चन्द्रमा के भाव की बधाई गवे ।

**राग बिलावल—**

श्री विट्ठलनाथ चन्द उग्यो जबै भक्त चांदनी छाय रही ।
अंधकार जाके मन के मिट गये सो पिय के उर माँझ रही ।

**पौष कृष्णा ५—**उच्छव को पहलो परचारगी श्रृंगार नौबत की बधाई बैठे । वस्त्र केशरी साटन के बिना किनारी के । सादा रुई के बागा चाकदार । सूथन मोजा साटन के । कुल्हे केसरी जोड मयूर पक्ष को पाँच को । ठाड़े वस्त्र मेघश्याम । पिछवाई खण्ड जन्माष्टमी वारी लाल सुनहरी लफ्फा की । आभरण समूचे दो जोड़ के उत्सव जन्माष्टमी के हालरा हांस त्रबल कठलादि चौकटा हुस्ताजी वारो । काच के काम को ।

**प्रश्न—**जन्माष्टमी के उत्सव के श्रृंगार चार होय तथा गुसाईं जी के उत्सव के तीन और महाप्रभू जी के उत्सव के तीन ही क्यों होंय हैं । महाप्रभू जी के उत्सव वारो श्रृंगार वड़ो नहीं होय—क्यों ?

**उत्तर—**श्री गोवर्धनधर को चार यूथाधिपा श्रृंगार अपने अपने वार पै करि सेवा करैं तथा विट्ठलनाथ जी तथा महाप्रभू जी स्वयं स्वामिनी तथा चन्द्रावली जी होवे से एक एक श्रृंगार कम है जाय । क्यों ? स्वयं तो श्रृंगार कर्ता ही है । अपनी आढ़ी को श्रृंगार कैसे करि सके ?

**पौष कृष्णा ६—**श्रृंगार ऐच्छिक आज पिछवाई भरत की तथा वस्त्र अधरंग साटन फूल के । वागा घेरदार । सूथन धरें श्री मस्तक पै पाग सादा । चन्द्रिका गोल । आभरण सोना के धरै । छोटो श्रृंगार भयो । ठाडे वस्त्र पीरे धरे जरीके । दिन भर बधाई गवैं ।

**पौष कृष्णा ७**—बिट्ठलवर के आचार्य कल्याणरायजी जो गुसाईंजी के द्वितीय पुत्र के पुत्र तथा हरिराय महाप्रभू के पिता उनको उत्सव श्रृंगार। देहली वन्दनमाल नहीं, केवल श्रृंगार तथा सामग्री विशेष। वस्त्र वागा चाकदार सूथन पिछवाई खण्ड। ये सब लाल धरती पै सूवा चिडी मोरवारी। साटन के ठाडे वस्त्र मेघश्याम। श्रीमस्तक पै कुल्हे मीनाकारी की। पक्षीन की जोड। मयूर पक्ष पाँच को। आभरण हीरा मोती पन्ना के। उत्सव के चोटी कुण्डल मयूराकृत। वनमाला को श्रृंगार। कस्तूरी की माला। कल्याणरायजी वारे आभरण। दिन भर बधाई। जामें कल्याण नाम आवे सो। तथा इनकी बनाई ढाढी, बधाई आदि गवे।

**विशेषता—**

उत्सव नायक कल्याणरायजी श्री गोविन्द जी (राजाजी) के यहाँ वि० १६३५ आज के दिन गोकुल में प्रकटे। गोविन्दजी सूँ श्रीजी ने श्रृंगार करत में बधाई मांगी और नाम कल्याणराय श्रीजी ने ही राख्यो। आप को पक्षीनको बहुत शौक हतो। तासों ही या घर में अद्यावधि पक्षीन के पालक बालक होय हैं। तासों ही श्रीनाथजी के वस्त्र आभूषण सब पक्षीवारे धराये जाँय। आपको प्राकट्य श्री गुसाईंजी विट्ठलनाथजी के वर्तमानत्व में भयो। आप उच्चकोटि के साहित्यकार कवि शिरोमणि भये। छोटेपन में आचार्य श्री महाप्रभू वल्लभ के काकाकेशवपुरीजी गोकुल पधारे और गुसाईंजी सों कही तुमारे बालकन में से एक बालक कूं मेरी गादी चलायवे हेतु मोकूं गोद देऊ। पुत्र पौत्रन में सों कोइकूं मैं लेऊंगो। तब गुसाईंजी तो चुप करि रहे। बालक परस्पर देखन लागे। सबन की निगाह इन कल्लाणराय जी पै परी तब आपने एक ढाढी को पद रचना करि अपने न जायवे को भाव प्रदर्शित कीनो। तब केशवपुरीजी तीन शाप दैके गये और वे शाप तृतीय लालजी बालकृष्णजी ने स्वीकारे। वे तीन शाप हैं—

१—तुम पै कर्ज रहेगो। २—परदेश सदैव करनो पड़ेगो। ३—तुम्हारी बेटी तुमारे घर ही रहेगी।

इनको समाधान सबने या प्रकार मान्यो।

१—कर्ज रहेगो तो प्रभु सेवा में चित्त रहेगो।
२—परदेश फिरेंगे तो दैवी जीवन को उद्धार होयगो।
३—बेटी घर में रहेंगी तो सेवा में साधिका बनेंगी।

ढाढी पद प्रार्थना रूप है। वो आज के दिन भोग आरती में होय है।

हौं ब्रज माँगनो ब्रज तजि अनत न जाऊँ।
बड़े-बड़े भूपति भूतल महियाँ दाता सूर सुजान।



कर न पसारूँ सीस न नाँऊ या ब्रज के अभिमान॥
सुरपति नरपति नाग लोक पति मेरे रंक समान।
भाँति-भाँति मेरी आसा पूरें ये ब्रजजन जिजमान॥

मैं व्रत करि-करि देव मनाये अपनी घरनी सवूत।
दियो विधाता सब सुखदाता गोकुल पति के पूत।
हों अपनो मनभायो लैहौं कित बौरावत बात।
औरन कौं धन घन ज्यों बरखत मो देखत हेंसिजात।

अष्ट सिधि नव निधि मेरे घर तव प्रताप ब्रज ईस।
कहत कल्यान मुकुन्द तात कर कमल धरो मम सीस॥

या ढाढी कूँ सुनके अभय पद दीनो। आप उद्‌भट साहित्यकार हुते। इनके असंख्य पदन में अनूठी नई सूझ भरी परी है। ये स्वामिनी की आधिपत्या सखी भाव वारे होयवे सों पदन में स्पष्ट स्वामिनीजी को उल्लेख मिलै है। प्रत्येक पद में स्वामिनी भाव लावै हैं। जन्माष्टमी की बधाई—

(१) देवक उदधि देवकी सीप वसुदेव स्वातिजल बरस्यो हो।
उपज्यो सुवन विमल मुक्ताफल सुनि-सुनि सब जग हरख्यो हो।
निर्मोलक नग हाथ जसोदानन्द जू को चित आकरस्यो हो।
विधि नारद सिव सेष जँह रीतिन पै जात न परस्यो हो।
सुर नर मुनि जाको ध्यान धरत है सो ब्रज जुवतिन निरख्यो हो।
सोइ स्यामा उर हार बिराजत कल्याण गिरधर सरख्यो हो।

(२) काजर बिन कारी तेरी अखियां फुलेल बिन चिकुर चीकने
अधर आरक्त बिन पान।
मज्जन तन ज्योति अधर दसन बीरी आछे आभूषण
बिन नीकी लगत है सुहान।
बिन सुगन्ध तो तन सुगन्ध आवे कोक पढे बिन रस की खान।
कल्यान के प्रभु गिरधारी रीझ बस भये काहे न पीय की तू प्रान।

इनके षड्‌रितु वर्णन नित्य नैमित्तिक उत्सवादि के अनेक उत्कृष्ट पद हैं और वे सब उत्सवन में गाये जाँय हैं।

गुसाईंजी के समय आप वर्तमान हे—ताको प्रमाण :—
खेलत वसन्त वल्लभ कुमार। सोभा समुद्र वाढ्यौ अपार।
श्री कल्याणराय लीला रसाल। मुरलीधर दामोदर कृपाल।
जनदास निरख बलहारी जाय। यह सुख शोभा मोपै कही न जाय।